हिन्दी दैनिक
प्रत्यूष नवबिहार
जोहार
रांची संस्करण
www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com
रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित
रांची ● गुरुवार ● 29.08.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 40 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपया~~ 2 रुपया

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

अनुबंध आधारित

सामुदायिक स्वास्थ्य पदाधिकारी (CHO)

नियुक्ति पत्र वितरण समारोह

आवश्यक सूचना

108 — आकस्मिक स्थिति में किसी भी मरीज को एंबुलेंस द्वारा स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाने हेतु राज्य हेल्पलाईन नंबर **108** **(टॉल फ्री)** पर कॉल करें

104 — स्वास्थ्य संबंधी किसी भी जानकारी हेतु 24x7 नि:शुल्क राज्य हेल्पलाइन नंबर **104 (टॉल फ्री)** पर कॉल करें

मुख्य अतिथि

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री, झारखण्ड

गरिमामयी उपस्थिति

श्री बन्ना गुप्ता
माननीय मंत्री, स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा
एवं परिवार कल्याण विभाग और खाद्य,
सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामले विभाग,
झारखण्ड सरकार

दिनांक: 29 अगस्त 2024 | समय : अपराह्न 12:00 बजे
स्थान : प्रोजेक्ट भवन, रांची

स्वस्थ झारखण्ड
सुखी झारखण्ड

स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखण्ड सरकार

PR-333501 (Health Med Edu and Family Welfare) 24-25

एक नजर

फुटबॉल टीम के सदस्यों को प्रखंड प्रमुख ने उपलब्ध कराया जर्सी

बरही : बरही प्रखंड प्रमुख मनोज रजक द्वारा मंगलवार को केवाल फुटबॉल टीम के सदस्यो के बीच जर्सी का वितरण किया गया। बता दे कि बरही प्रखंड अंतर्गत खोंडाहार पंचायत के केवाल गांव में फुटबॉल टीम द्वारा पिछले दिनों प्रखंड स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन करवाया गया था। इस दौरान प्रमुख मनोज रजक ने मेजबान टीम को जर्सी देने का वादा किया थे। जिसे पूरा करते हुए मंगलवार रात्रि उन्होंने केवाल फुटबॉल टीम के सदस्यो के बीच जर्सी का वितरण किया। इस बाबत प्रमुख मनोज रजक ने कहा कि खिलाडियों का जीवन काफी संघर्षों से भरा होता है, मैं भी इसी गांव का बेटा हूं, इनके बीच से ही निकला हूं। उन्होंने कहा की खिलाडियों के मनोबल को बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत हूँ। मौके पर केवाल फुटबॉल टीम के सदस्यो के साथ अन्य ग्रामीण भी उपस्थित रहे।

रैयत विस्थापित मोर्चा की हुई बैठक

टंडवा : रैयत विस्थापित मोर्चा के द्वारा प्रस्तावित बंदी पर एक सभा आहूत की गई। जिसकी अध्यक्षता जुमन मियां एवं संचालन अभिषेक एवं चंद्रदेव साहू ने संयुक्त रूप से किया बैठक में सर्वसमिति से निर्णय लेते हुए आज से हर गढ़वा साइडिंग का लोडिंग कार्य चालू किया जाय चुकी संबंधित कंपनी के द्वारा रैयतों का जो रोजगार का मामला था। उसे मान लिया गया बताते चलें कि रैयत विस्थापित मोर्चा के बैनर तले 16 मांगो पर जोरदार आंदोलन किया गया जिस पर 15 मांगो पर प्रबंधक कार्यालय में सहमति बनी लेकिन हरगरवा साइडिंग पर कोई बात नही बन पाई थी। जिस पर आंदोलन और उग्र हो गया था। जिसे आज लोडिंग कर रहे कंपनी द्वारा मान लिया गया। जिससे ग्रामीणों में खुशी का माहौल है एवं सर्वसम्मति से रैक लोडिंग चालू करने के आग्रह को स्वीकार किया । बैठक में मुख्य रूप से रैयत विस्थापित मोर्चा के केंद्रीय उपाध्यक्ष इकबाल हुसैन केंद्रीय सचिव सह झारखंड मुक्ति मोर्चा के लोकप्रिय नेता मनोज कुमार चंद्रा गुरदयाल साहू जेपी महाराज मोर्चा के क्षेत्रीय अध्यक्ष निरंजन राणा सलीम अख्तर संदीप कुमार साहू जितेंद्र कुमार सिंह उमेश कुमार गंझु लियाकत अंसारी परमेश्वर गंझू मो हाफिज अनिरुद्ध साहू सशी कुमार सहित हजारों की संख्या में विस्थापित प्रभावित ग्रामीण उपस्थित हुए।

राज्यपाल ने मॉडल आंगनबाड़ी नर्सरी केंद्र का किया अवलोकन

हजारीबाग : राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने बुधवार को रामगढ़ में ग्रामीणों से संवाद के उपरांत मॉडल आंगनबाड़ी नर्सरी स्कूल केंद्र, प्रखण्ड-चुरचू, हजारीबाग का अवलोकन किया। राज्यपाल वहां बच्चों से मिले तथा वहां बच्चों को दी जा रही सुविधाओं की जानकारी ली। इसके पश्चात राज्यपाल ने मारसल प्राथमिक बुनकर सहयोग समिति लिमिटेड उत्पादक केन्द्र, पंचायत-बहेरा, प्रखण्ड-चुरचू, हजारीबाग का अवलोकन किया और बुनकर सहयोग समिति के सदस्यों के साथ संवाद किया एवं उनके उत्पादों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त की। राज्यपाल ने बुनकर सहयोग समिति के सदस्यों के कार्यों की सराहना की। राज्यपाल ने कहा कि बुनकर सहयोग समिति के कार्य हमारी बहनों के हित को ध्यान में रखते हुए हो। उन्होंने कहा कि हमारी बहनों की आय में वृद्धि हो, ऐसा प्रयास हो। साथ ही कहा कि वे बुनकरों की कार्यप्रणाली व समस्याओं से अवगत हैं। उन्होंने कहा कि अच्छी व गुणवत्तापूर्ण बुनकरो के द्वारा निर्मित वस्त्रों की मांग बाजार में बहुत है तथा इस क्षेत्र में बहुत संभावनाएं हैं। उन्होंने बुनकरों को प्रोत्साहित किया तथा कहा कि वे अपनी समस्याओं को लिखकर राजभवन में प्रेषित कर सकती हैं।

चौपारण पुलिस ने लाखों की अफीम के साथ दो तस्कर को किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण में नशा के कारोबारीयो का भांडाफोड होने से पूरे प्रखंड में हलचल का माहौल है। एक तरफ जहां युवा नशा के आदी होते जा रहे हैं। वही इस प्रकार से लाखो रुपए की मादक पदार्थ अफीम का मिलना चिंतनीय है। थाना प्रभारी दीपक कुमार सिंह लगातार कार्रवाई कर नशा के सौदागर को सल्लाखो के पीछे भेज रहे है। इस सम्बंध में जानकारी देते हुए थाना प्रभारी दीपक सिंह ने बताया कि बीते रात्रि पुलिस अधीक्षक हजारीबाग को गुप्त सूचना मिली कि बरेली कटरा फाटक ग्राम बहेरा आश्रम स्थित पंडित जी के ढाबा में तस्करी के लिए अफीम एवं डोडा छिपाकर रखा गया है। सूचना के सत्यापन एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बरही सुरजीत कुमार एवं थाना प्रभारी चौपारण के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन किया गया। छापेमारी दल बरेली कटरा फाटक ग्राम बहेरा आश्रम स्थित पंडित जी के ढाबा के समीप पहुंचा तथा उक्त ढाबा पर छापेमारी की। छापेमारी के दौरान देखा गया कि कुछ लोग ढाबा के पीछे से भाग रहे हैं। सशस्त्र बल के सहयोग से भाग रहे लोगों में से दो को पकड़ लिया गया। गिरफ्तार व्यक्तियों का नाम पता पूछने पर उन्होंने अपना नाम विजय कुमार शर्मा, ग्राम थाना अहमदगढ जिला- मलेरकोटला (पंजाब) वर्तमान पता- बहेरा आश्रम थाना चौपारण जिला हजारीबाग एवं अंगद सिंह पिता स्व. अजय सिंह सा०- सिंदवार थाना मानपुर जिला गया (बिहार) बताया। इसके बाद होटल की समुचित तलाशी लेने पर होटल के अंदर एक कमरे में छिपाकर रखे गए प्लास्टिक के थैले से 1.05 किलोग्राम अफीम, 1.600 किलोग्राम पिसा हुआ डोडा और एक इलेक्ट्रॉनिक वजन तौलने की मशीन बरामद की गई। इस सम्बंध में चौपारण थाना कांड संख्या 312/24 17(सी) /18(सी) एन.डी.पी.एस. एक्ट दर्ज कर दोनों गिरफ्तार व्यक्तियों को गिरफ्तार कर खबर लिखे जाने तक न्यायिक हिरासत में भेजी जा रही थी तथा अन्य तस्करों के विरुद्ध छापेमारी जारी है। बरामदगी सामानो का विवरण अफीम 1.05 किलोग्राम, 1.600 किलोग्राम पिसा हुआ डोडा और एक इलेक्ट्रॉनिक वजन तौलने की मशीन जब्त की गई। छापामारी दल में अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी बरही सुरजीत कुमार, दीपक कुमार सिंह थाना प्रभारी चौपारण, एसआई बिन्देश्वर महतो, सुभाष मल्लिक और चौपारण थाना के सशस्त्र बल शामिल थे। पकड़ाए दोनों व्यक्तियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा गया एवं अन्य तस्करों के विरुद्ध छापेमारी जारी है।

आठ सूत्री मांगों को लेकर वार्ड सदस्यों ने दिया धरना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चौपारण : चौपारण प्रखंड के मुख्यालय के बहार बुधवार को प्रखंड के सभी पंचायत के वार्ड सदस्यों संघ द्वारा 8 सूत्री मांग को लेकर एक दिवसीय धरना प्रदर्शन किया गया। पंचायत राज मंत्री, डीसी के नाम बीडीओ को मांग पत्र सौंपा। वार्ड सदस्यों के समर्थन में पहुंचे जिला परिषद भाग 2 रवि अकेला। वार्ड सदस्यों ने रवि अकेला को अपनी मांगों से अवगत कराया। वार्ड सदस्यों ने अपनी मांग को बताते हुए कहा कि मनरेगा योजना के पेपर में वार्ड सदस्य का हस्ताक्षर हो, 15वें वित योजना के मास्टर रौल एवं मांग पत्र में वार्ड 'सदस्यों का हस्ताक्षर हो।, वार्ड क्षेत्र के विकास कार्य में लगने वाला शीला पट में वार्ड सदस्यों का नाम भी अंकित हो, गरीब वार्ड सदस्यों को भी अबुआ आवास, प्रधानमंत्री आवास एवं अम्बेडकर आवास दिया जाय, आवास योजना की जानकारी वार्ड सदस्यों को भी मिले, पंचायत के सभी तरह के कार्यों में वार्ड सदस्यों का हस्ताक्षर सुनिश्चित किया जाय, वार्ड सदस्यो को वितिय पावर दिया जाय, वार्ड सदस्यों का मानदेय नियमित रूप से मिले।

हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल का कटिया चौक पर हुआ शानदार स्वागत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल लगातार हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के दौरे पर हैं। इन दिनों अहले सुबह से लेकर मध्य रात्रि तक उनका समय क्षेत्र दौरे में व्यतीत हो रहा है। बुधवार को सांसद मनीष जायसवाल ने रामगढ़ जिले के पतरातु प्रखंड क्षेत्र का दौरा किया और शैक्षणिक क्षेत्र के विकास के लिए नवोदय विद्यालय, पतरातु का निरीक्षण किया और फिर पी.टी.पी.सी. कॉलेज के शासी निकाय की बैठक में शामिल हुए। पतरातु पहुंचने पर सांसद मनीष जायसवाल का न्यू मार्केट, कटिया चौक के समीप स्थानीय भाजपा कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने फूल माला पहनाकर और पुष्पगुच्छ भेंटकर गर्मजोशी से भव्य स्वागत किया । हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के पीटीपीएस, पतरातु स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय पंहुचकर हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने बुधवार को रामगढ़ जिले की जिला शिक्षा पदाधिकारी नीलन कुमारी की मौजूदगी में निरीक्षण कर स्कूल का जायजा लिया। यह बहुत ही पुराना नवोदय विद्यालय हैं और स्कूल की आधारभूत संरचना का व्यापक विस्तार हुआ है जिसपर अभीतक शिफ्टिंग नहीं हो पाया है। यहां कई मूलभूत समस्याएं भी हैं। स्कूल में अध्यनरत बच्चों से भी सांसद मनीष जायसवाल ने उनकी समस्या विस्तार से जानी । तत्पश्चात सांसद मनीष जायसवाल ने स्कूल की प्राचार्या मीणा मुर्मू से जल्द नए भवन में शिफ्टिंग करने, छात्रावास में रह रहे बच्चों को मिलने वाले समुचित लाभ उपलब्ध कराने, बच्चों के अभिभावकों को स्कूल से जोड़कर समन्वय समिति का निर्माण करने, आगामी शैक्षणिक सत्र से यहां की सीटों की संख्या दोगुनी करनी संबंधित विषयों पर विस्तार से वार्ता की।

बरही में झारखंड कार्यक्रम के तहत खेल प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही प्रखंड मैदान में शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित प्रखंड स्तरीय खेलो झारखंड 2024-25 का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन प्रखंड प्रखंड मनोज रजक, बरही पश्चिमी जिला परिषद सदस्या प्रीति कुमारी, बीईईओ किशोर कुमार, बीएसए संरक्षक अब्दुल मनान वारसी, बीपीएम अरुण शर्मा समेत विभिन्न विद्यालयों के शिक्षकों ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। 100 मी दौड़ बालक वर्ग में प्रथम स्थान शिव कुमार, द्वितीय स्थान सुधीर कुमार एवं तृतीय स्थान कुंदन कुमार, बालिका वर्ग में प्रथम स्थान नजमा खातून, द्वितीय स्थान खुशबू कुमारी एवं तृतीय स्थान अंशु कुमारी, 200 मीटर दौड़ बालक वर्ग में प्रथम स्थान राजन कुमार द्वितीय स्थान अभिषेक कुमार, तृतीय स्थान दीपू कुमार, बालिका वर्ग में प्रथम स्थान लक्ष्मी कुमारी, द्वितीय स्थान रीना कुमारी एवं तृतीय स्थान बीमा कुमारी, 400 मीटर दौड़ बालक वर्ग में प्रथम स्थान राजन कुमार द्वितीय स्थान विक्रम कुमार प्रजापति एवं तृतीय स्थान महताब खान बालिकाओं में प्रथम स्थान सुनैना कुमारी, द्वितीय स्थान तुलसी कुमारी एवं तृतीय स्थान रोशनी परवीन 600 मीटर दौड़ बालक वर्ग में प्रथम स्थान अमित कुमार द्वितीय स्थान सचिन कुमार एवं तृतीय स्थान नितेश कुमार 600 मीटर दौड़ बालिका वर्ग में प्रथम स्थान बबली कुमारी द्वितीय स्थान दीपिका कुमारी एवं तृतीय स्थान प्रीति कुमारी ने प्राप्त किया। इसी प्रकार कुल 14 खेल हुए। जिसमे सभी विद्यालय के बच्चो ने काफी उत्साह पूर्वक खेल प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान लाने वाले बच्चो को मुख्य अतिथियों द्वारा मेडल देकर उनको प्रोत्साहित किया गया।

कांग्रेस के प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा ने चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : झारखंड प्रदेश कांग्रेस महासचिव विनोद कुमार कुशवाहा सदर विधानसभा क्षेत्र का लगातार दौरा कर कांग्रेस के नीति एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुंचाने का काम कर रहे हैं। विनोद कुशवाहा का कांग्रेस पार्टी से ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ने को लेकर लगातार जनसंपर्क अभियान जारी है। इस दौरान झारखंड की गठबंधन सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी सुदूरवर्ती क्षेत्र तक के लोगों तक पहुंचा रहे हैं ताकि अंतिम पायदान तक के व्यक्ति तक झारखंड सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीधे तौर पर पहुंचाया जाए। जनसंपर्क अभियान को जारी रखते हुए बुधवार को प्रदेश कांग्रेस महासचिव विनोद कुशवाहा ने हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र के कटकमसांडी प्रखंड अंतर्गत छड़वा सहित नगर निगम क्षेत्र के बाबू गांव, कोर्रा, जबरा आदि वार्डो का सघन दौरा कर सरकार के कल्याणकारी योजनाओं के बारे में लोगों को बताया और स्थानीय लोगों से रूबरू होते हुए जनसमस्याओं की जानकारी हासिल की साथ ही जन समस्याओं के निराकरण को लेकर संबंधित विभागों से संपर्क कर त्वरित कार्रवाई का भरोसा जताया।

अदाणी फॉउंडेशन ने टीबी के 80 मरीजों को दिया पोषण किट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : गोंदलपुरा खनन परियोजना के तहत अदाणी फॉउंडेशन ने तीसरे चरण के तहत गोद लिए 80 टीबी मरीजों के बीच बुधवार को निःशुल्क पोषण किट वितरित किया। बड़कागांव स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान अदाणी फाउंडेशन की ओर से वितरित किए गए प्रत्येक किट में च्वयनप्राश, अरहर दाल, चना, गुड़, हरा मूंग, सरसों तेल और हॉर्लिक्स जैसी आहार सामग्रियां शामिल हैं। ह्यप्रधानमंत्री निक्षय पोषण योजनाह्व के तहत छः महीने के ईलाज के दौरान रोगियों को हर माह पोषक आहार प्रदान किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान मौजूद लोगों ने देश को टीबी मुक्त बनाने की भी शपथ ली। सबने एक स्वर में कहा कि अपने मोहल्ले, गांव और शहर को टीबी मुक्त बनाना है। इस अवसर पर बड़कागांव स्थित सामुदायिक चिकित्सा केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अविनाश कुमार ने कहा कि अदाणी फॉउंडेशन टीबी उन्मूलन के क्षेत्र में लगातार उत्कृष्ठ कार्य कर रहा है जो प्रशंसनीय है। इसके अलावा अदाणी फॉउंडेशन द्वारा निःशुल्क एम्बुलेंस भी प्रदान किया गया है, जिससे ग्रामीणों को काफी लाभ मिल रहा है। हजारीबाग क्षेत्र के मरीजों के लिए आपात परिस्थिति में यह एम्बुलेंस सुविधा त्वरित रूप में उपलब्ध है। आगे उन्होंने बताया कि अदाणी फॉउंडेशन की ओर से अब तक 130 टीबी के मरीजों को गोद लिया जा चुका है, जो अब स्वस्थ हो चुके हैं। वहीं, नए 80 मरीजों को लगातार छह महीने तक पोषण आहार प्रदान किए जाएंगे। टीबी के ईलाज में अदाणी फॉउंडेशन द्वारा किए जा रहे प्रयासों से मरीजों को निःशुल्क पोषण आहार का लाभ मिल रहा है।

लाइलाज नहीं है टीबी की बीमारी, समय पर करवाएं उपचार

कार्यक्रम के दौरान टीबी विभाग के ट्रेनिंग सुपरवाइजर दीपक कुमार ने बताया कि पोषण किट के आहारों की गुणवत्ता और मात्रा बढ़ाई गयी है। मरीजों से कहा गया कि दवा के अतिरिक्त जो पोषण आहार उन्हें मिल रहे हैं उनका नियमित रूप से सेवन किया जाना चाहिए ताकि जल्द से जल्द टीबी को ठीक किया जा सके। अदाणी फॉउंडेशन के इस प्रयास से टीबी के मरीजों की संख्या में कमी आएगी और टीबी लाइलाज बीमारी नहीं है। इसका समय पर उपचार करवा लिया जाए तो इससे हमेशा के लिए इससे छुटकारा मिल सकता है। इस अवसर पर सीएसआर विभाग के उप प्रबंधक मोहित गुप्ता, एग्जीक्यूटिव अधिकारी शरद मिश्र, तारकेश्वर कुमार शर्मा आदि मौजूद थें।

संक्षिप्त खबरें

नूरा के एक युवक पर युवती ने लगाया यौन शोषण का आरोप, दर्ज करायी प्राथमिकी

हजारीबाग : लोहसिंघना थाना क्षेत्र के मंडई निवासी एक युवती ने थाना क्षेत्र के हीं नूरा निवासी मनोहर राणा पिता बालेश्वर राणा पर यौन शोषण की प्राथमिकी दर्ज करायी है। 36 वर्षीय युवती ने इस बाबत लोहसिंघना थाना में प्राथमिकी दर्ज कराते हुए आरोपित को गिरफ्तार करने की मांग की है। आवेदन में युवती ने उसके जीवन को बर्बाद करने का आरोप लगाया है। कहा कि स्वजातीय होने का हवाला देकर वह लंबे समय से उसकी इज्जत के साथ खेलता रहा। वह गर्भवती हो गई, इसके बाद शादी का दबाव दिया तो वह आश्वासन देकर गर्भपात भी करा दिया। परंतु शादी नहीं की। आरोप लगाया कि उसके साथ मनोहर की रिश्ते की जानकारी उसके परिवार को भी है। कई बार तो परिवार के लोगों ने शादी करा देने की सहमति, परंतु अब उसके साथ मारपीट किया जा रहा है। आवेदन में बताया है कि उसका जीवन मनोहर ने बर्बाद कर दिया। उसे शादी नहीं करने दी और खुद भी शादी नहीं किया। उसके पास जिंदा रहने का उसने विकल्प नहीं छोड़ा है। इस बाबत लोहसिंघना थाना कांड संख्या 149 -2024 दर्ज किया गया है। प्राथमिकी में मनोहर के जीजा व उसकी बहन के अलावा भाई राधिका और रवि को भी आरोपित बनायी है। आवेदन में बताया कि उसके साथ मनोकामना होटल, मनोहर के बड़े भाई के प्रज्ञा केंद्र, नए भवन झील नगर में बुलाकर कई बार परिवार से मिलाने के बहाने दुष्कर्म करता रहा। जानकारी के अनुसार मनोहर राणा भू माफिया है और जमीन का कारोबार करते है।

हजारीबाग के गांधी मैदान में रही दही हांडी की धूम

हजारीबाग : अनुप्रिया फाउंडेशन के द्वारा मतवारी गांधी मैदान में श्री कृष्णा महा जन्माष्टमी के पावन अवसर पर भव्य दही हांडी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, साथ ही रील मेकिंग प्रतियोगिता एवं सांस्कृतिक महोत्सव ने कृष्णभक्तों के उत्साह एवं उमंग को दुगना कर दिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड सरकार के पूर्व कृषि मंत्री योगेंद्र साव उपस्थित हुए एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता अनुप्रिया फाउंडेशन की संस्थापिका अनु प्रिया कर रही थी। पूर्व कृषि मंत्री ने कहा कि हजारीबाग के जन-जन के मन में राम के साथ-साथ कृष्ण भी बस्ते हैं। इंटरनेशनल रामनवमी के बाद इंटरनेशनल श्री कृष्ण महाजन्माष्टमी के रूप में इस आयोजन को जाना जाएगा। ऐसे आयोजनों से हमारा हजारीबाग शहर राज्य के साथ साथ राष्ट्रीय स्तर में भी अपनी अलग पहचान स्थापित करने में सक्षम होगा। हजारीबाग को जब भी हौसले की जरूरत महसूस होगी अनुप्रिया फाउंडेशन उनके हौसले और उम्मीद पर खरा उतरेगी ऐसा मुझे विश्वास है। कार्यक्रम की संयोजिका सह अनुप्रिया फाउंडेशन के संस्थापक का अनुप्रिया ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हजारीबाग के युवाओं को ऐसे आयोजनों से सकारात्मक ऊर्जा मिलती है, जो इस शहर में फैले नकारात्मकता को समाप्त करने में सारथी बनेगा। इससे पूर्व मुंबई के धारावी एवं रांची के धुर्वा स्थित झुग्गी झोपड़ियों में भी मुझे काम करने का मौका मिला और अब बारी है हजार बागों के शहर हजारीबाग हजारों ख्वाब को उम्मीदों को पंख देने की। अनुप्रिया फाउंडेशन हजारीबाग का कायाकल्प करना चाहती है, जिसके लिए हर संभव प्रयास भी किया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण दही हांडी प्रतियोगिता रही जिसमें पुरुष एवं महिला वर्ग मिलाकर कुल 20 टीमों ने भाग लिया। जिसमें हजारीबाग का माखन चोर और कृष्ण कन्हैया बनने का गौरव मिला। वही राधा रानी बनने का मौका को मिला। दोनों ही विजेता प्रतिभागी 15000 का प्रोत्साहन राशि एवं चमचमाता ट्रॉफी मिला। पूर्व कृषि मंत्री योगेंद्र साव, बड़कागांव विधायिका अंबा प्रसाद एवं संस्थापिका अनुप्रिया के हाथों सौंपा गया।

विजय यादव ने खिलाड़ियों को फुटबॉल जर्सी एवं नेट देकर किया प्रोत्साहित

बरही : मलकोको पंचायत अंतर्गत बुंडू में खेल प्रेमियों और खिलाड़ियों को एक विशेष प्रोत्साहन मिला जब मुखिया संघ के अध्यक्ष और बरही पूर्वी भाजपा मंडल अध्यक्ष विजय यादव ने फुटबॉल टीम को महत्वपूर्ण खेल सामग्री प्रदान की। उन्होंने खिलाड़ियों को फुटबॉल, जर्सी और नेट देकर उनकी खेल में दिलचस्पी को बढ़ावा दिया। इस अवसर पर यादव ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में खेल के प्रति जागरूकता बढ़ाने और खिलाड़ियों को समर्थन देने के लिए ऐसे कदम आवश्यक हैं। विजय यादव ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, बल्कि मानसिक विकास के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने आगे कहा कि गांव के युवाओं में छिपी खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए उन्हें बेहतर सुविधाएं और अवसर प्रदान करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इस कार्यक्रम में रोहित यादव, मनोज यादव, मुकेश यादव, प्रदीप यादव, राजू यादव, दीपक यादव, संदीप यादव, नारायण यादव, देवेंद्र यादव, सकलदेव यादव, राजेश यादव, रंजीत यादव, और शशि यादव आदि उपस्थित थे।

प्रमंडल स्तरीय सहकारी महासम्मेलन का किया गया आयोजन

हजारीबाग : सहकारिता वह क्रांति ला सकती है जो किसी राज्य को अंतिम पायदान से उठकर सबसे ऊपर के पायदान पर पहुंचा सकती है। राज्य सरकार अब किसानों को 50 हजार रुपए की जगह अब 2 लाख तक रुपए की ऋण माफ करेगी। आपको जिस तरीके की सहयोग की उम्मीद है, सरकार आपके हर वह सपने को पूरा करने की प्रयास कर रही है। उक्त बातें कृषि, सहकारिता एवं पशुपालन विभाग झारखंड सरकार के मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कही। वे प्रमंडल स्तरीय एकदिवसीय सहकारी महासम्मेलन को संबोधित कर रही थी। कृषि पशुपालन एवं सहकारिता विभाग झारखंड के तत्वधान में बुधवार को पैराडाइज रोसोर्ट में प्रमंडल स्तरीय एकदिवसीय सहकारी महासम्मेलन का आयोजन किया गया। महासम्मेलन का शुरूआत मुख्य अतिथि मंत्री दीपिका पांडेय सिंह, उपायुक्त नैंसी सहाय, बरही विधायक उमाशंकर अकेला, अंबा प्रसाद सहकारी सहयोग समिति के निबंधक सूरज कुमार व अन्य लोगों ने संयुक्त रूप से दीपप्रज्वलित कर किया तत्पश्चात मंच पर उपस्थित लोगों ने एक पुस्तक का लोकार्पण किया। कार्यक्रम में मंत्री ने कई कृषक मित्रों और सहकारी समिति के सदस्यों से संवाद कर उनकी समस्याओं को जाना और उस पर पहल करने की बात कही।

हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● गुरुवार ● 29.08.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 40 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

महिलाओं और युवाओं के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रही है जन-धन योजना : मोदी

एजेंसी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को कहा कि प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) लोगों, विशेष तौर पर महिलाओं, युवाओं और हाशिये पर पड़े समुदायों के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जन धन योजना के 10 वर्ष पूरे होने पर लाभार्थियों और योजना को सफल बनाने में योगदान करने वालों को बधाई और शुभकामनाएं दी है। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 28 अगस्त, 2014 को जन-धन योजना की शुरूआत की थी। इस योजना के तहत अबतक 53.13 करोड़ बैंक खाते खोले गए हैं। इन खातों में 2.3 लाख करोड़ रुपये की धनराशि जमा है। सरकार ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 में तीन करोड़ से अधिक और जन-धन खाता खोलने का लक्ष्य रखा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक्स पर लिखा है, "आज देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है- #10YearsOfJanDhan. इस अवसर पर मैं सभी लाभार्थियों को शुभकामनाएं देता हूं। इस योजना को सफल बनाने के लिए दिन-रात एक करने वाले सभी लोगों को भी बहुत-बहुत बधाई। जन धन योजना करोड़ों देशवासियों, विशेषकर हमारे गरीब भाई-बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और उन्हें सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर देने में सफल रही है।"

वित्त मंत्रालय ने आज बयान जारी कहा कि आज प्रधानमंत्री जन-धन योजना आज सफलतापूर्वक अपने क्रियान्वयन का एक दशक पूरा कर रही है। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि वित्तीय समावेशन और सशक्तिकरण को प्राप्त करने के लिए औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक सार्वभौमिक और किफायती पहुंच आवश्यक है। यह गरीबों को आर्थिक मुख्यधारा में एकीकृत करता है और हाशिये पर पड़े समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सीतारमण ने कहा कि यह जानकर खुशी हुई कि 67 फीसदी खाते ग्रामीण या अर्ध-शहरी क्षेत्रों में खोले गए हैं, जबकि 55 फीसदी खाते महिलाओं द्वारा खोले गए हैं।

र डिजिटल भुगतान को बढ़ावा दिया है। केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री पंकज चौधरी ने कहा है कि पीएमजेडीवाई केवल एक योजना नहीं है, बल्कि एक परिवर्तनकारी आंदोलन है, जिसने बैंकिंग सेवाओं से वंचित कई लोगों को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान की है और वित्तीय सुरक्षा की भावना पैदा की है।

वित्त मंत्रालय के बयान के अनुसार, 53 करोड़ से अधिक जन-धन खातों में से 29.56 करोड़ (55.6 प्रतिशत) जनधन खाताधारक महिलाएं हैं और 35.37 करोड़ (66.6 प्रतिशत) जनधन खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में हैं। पीएमजेडीवाई खाते के तहत जमा राशि 2,31,236 करोड़ है। इसमें 14 अगस्त, 2024 तक 15 गुना वृद्धि हुई है।

जन-धन योजना ने गरीबों को आर्थिक मुख्यधारा में शामिल किया : निर्मला सीतारमण

नयी दिल्ली : वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री जन-धन योजना के एक दशक पूर्ण के अवसर पर कहा कि वित्तीय समावेशन एवं सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक सभी की आसान पहुंच आवश्यक है और पीएमजेडीवाई ने गरीबों को आर्थिक मुख्यधारा में शामिल करने के साथ ही हाशिए के समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पहले कार्यकाल के प्रारंभ में 28 अगस्त 2014 को वित्तीय समावेशन और गरीबों की बैंकिंग सेवाओं मे पहुंच को आसान बनाने के लिए इस योजना की शुरुआत की थी और यह योजना आज सफलतापूर्वक एक दशक पूरा कर रही है। इस दौरान पीएमजेडीवाई दुनिया का सबसे बड़ा वित्तीय समावेशन कार्यकम भी बन गया है। वित्त मंत्रालय अपने वित्तीय समावेशन प्रयासों के जरिये हाशिए के समुदायों और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सहायता प्रदान करने का निरंतर प्रयास करता रहा है।

मुख्यमंत्री ने कोल्हान के मंईयां सम्मान योजना के लाभुकों के खातों में 57.38 करोड़ की राशि हस्तांतरित की

कोल्हान की छह लाख महिलाओं के खाते में गयी सम्मान राशि : हेमन्त सोरेन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरायकेला : जिले के गम्हरिया प्रखंड अंतर्गत रपचा फुटबॉल मैदान में बुधवार को मुख्यमंत्री मइयां सम्मान योजना के तहत आयोजित प्रमंडल स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने तीनों जिलों की चयनित 21 से 50 वर्ष की महिलाओं के खाते में 57 करोड़ 38 लाख 99 हजार रुपये की राशि हस्तांतरित की।

गौरतलब है कि तीनों जिलों में इस योजना के अबतक 5 लाख 73 हजार 899 लाभुक चिह्नित किए गए हैं। इस योजना के पहले चरण में पूर्वी सिंहभूम जिले से 02 लाख 47 हजार 728 लाभुकों को 24 करोड़ 77 लाख 28 हजार रुपये, पश्चिमी सिंहभूम जिले से 01 लाख 82 हजार 336 लाभुकों को 18 करोड़ 23 लाख 36 हजार रुपये और सरायकेला-खरसांवा जिले के 01 लाख 43 हजार 835 लाभुकों को 14 करोड़ 38 लाख 35 हजार रुपये की पहली किस्त की राशि हस्तांतरित की गई।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने इस योजना को झारखंडी महिलाओं के लिए वरदान बताया। इस दौरान भाजपा पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि हमने राज्य से डबल इंजन की सरकार को छीनकर सरकार बनाई। वर्ष 2019 में सरकार बनते ही राज्य की जनता ने कोरोना त्रासदी के दौर को झेला। उस दौर में हमारी सरकार ने पूरी ताकत झोंक दी। सीमित संसाधनों के बीच हमारी सरकार ने राज्य की जनता को बचाने का काम किया। लाखों नौकरियां चली गईं। पूरा देश त्राहिमाम कर रहा था लेकिन हमारी सरकार ने देश के कोने-कोने में फैले झारखंडी मजदूरों को हवाई जहाज से लाने का काम किया।

कोल्हान में मंईयां सम्मान समारोह को संबोधित करते मुख्यमंत्री व सभा में मौजूद महिलाएं

मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा पिछले पांच महीने से राज्य को अशांत करने के लिए असम और छत्तीसगढ़ से नेताओं को बुलाकर साजिश रच रही है। यहां घुसपैठ के मुद्दे को हवा देकर साम्प्रदायिक सौहाद्र बिगाड़ रही है। हमारी सरकार बनते ही हर घंटे उसे गिराने में जुटी रही। धनबल और सरकारी एजेंसियों के बल पर चुनी हुई सरकारों को अशांत करने में जुटी रहती है। सीएम ने कहा कि हमारी सरकार ने दो दिवसीय आदिवासी महोत्सव का आयोजन करके दिखा दिया कि हमारी सरकार आदिवासियों की हितैषी है, भाजपा नहीं।

हेमन्त सोरेन ने कहा कि भाजपा के नेता तो विश्व आदिवासी दिवस की शुभकामनाएं और बधाई देने की भी जहमत नहीं जुटा पाते। हमारी सरकार गांव-गांव सरकारी पदाधिकारियों को भेजकर उनकी समस्याओं को सुलझाने का काम कर रही है। इसी का परिणाम है कि राज्य की पिछली डबल इंजन की सरकार ने पांच साल के कार्यकाल में मात्र 15 लाख लोगों को पेंशन देने का काम किया लेकिन हमारे गठबंधन की सरकार ने मात्र साढ़े चार साल में 40 लाख लोगों को पेंशन देने का काम किया है। खासकर महिलाओं के लिए हमारी सरकार ने जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक भरण-पोषण तक की योजना चला रही है।

"झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना" का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस योजना के जरिए राज्य की सभी महिलाएं खुशहाल होने जा रही है। उन्होंने कहा कि यदि फिर हमारी सरकार सत्ता में आई तो राज्य के हर परिवार को एक लाख रुपये प्रति वर्ष दिए जाएंगे। ऐसा पिछली किसी भी सरकार ने नहीं किया। उन्हें तो केवल हिंदू-मुस्लिम करना है। बेरोजगारी भत्ता को लेकर उठते सवाल पर मुख्यमंत्री ने मंच से विरोधियों पर निशाना साधते हुए कहा कि जाकर ब्लॉक में पता करें कि राज्य के युवाओं को बेरोजगारी भत्ता मिल रहा है या नहीं। विपक्ष के लोग तरह-तरह के षडयंत्र और साजिश रच कर सरकार को परेशान कर रही है।

मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि राजनीतिक रूप से जब नहीं सफल हो पाते हैं तो तरह-तरह के हथकंडे अपनाकर सरकार को परेशान किया जा रहा है। वीर शहीद सिद्धो-कान्हू, चांद-भैरव, फूलो-झानो, पोटो हो के वंशज हर जुल्म और सितम को सहने के लिए तैयार है। हमारे राज्य से देश का खजाना चलता है। हमारी सरकार बनने के बाद हमने केंद्र से अपना हक 1. 26 हजार करोड़ की मांग की तो हमें जेल में डाल दिया गया लेकिन हम झारखंडी अपना हक और अधिकार लेना जानते हैं। आने वाले समय में यहां के खनिज संपदा निकालने कंपनियों से सारा हिसाब लिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार ने अग्निवीरों के शहीद होने पर उनके आश्रितों को सरकारी नौकरी देने की घोषणा की है। इसका कानून बना दिया है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने किसानों का दो लाख रुपये तक का कर्ज माफ करने का निर्णय लिया है। इसके अलावा 200 यूनिट तक बिजली बिल माफ करने जा रही है। इससे पूर्व कार्यक्रम को विधायक दशरथ गोराई, मंत्री बेबी सिंह, मंत्री सत्यानंद भोक्ता, मंत्री बन्ना गुप्ता ने भी सम्बोधित किया।

इस मौके पर मंत्री दीपक बिरुआ, सिंहभूम की सांसद जोबा मांझी, गांडेय विधायक कल्पना मुर्मू सोरेन, ईचागढ़ विधायक सविता महतो, घाटशिला विधायक रामदास सोरेन, बहरागोड़ा विधायक समीर महंती भी मौजूद रहे।

प. बंगाल में बंद के दौरान कई जगहों पर हिंसा पुलिस का लाठीचार्ज, दागे आंसू गैस के गोले

एजेंसी

कोलकाता : पश्चिम बंगाल में भाजपा द्वारा बुधवार को आहूत 'बंगाल बंद' के दौरान राज्य के विभिन्न हिस्सों में हिंसा और तनाव की खबरें सामने आईं। कई स्थानों पर पुलिस और भाजपा समर्थकों के बीच झड़पें हुईं, जिसके चलते पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा और आंसू गैस के गोले भी छोड़े गए। हुगली जिले के मानकुंडू स्टेशन पर बंद समर्थकों द्वारा रेलवे ट्रैक पर प्रदर्शन किया गया, जिससे अप और डाउन दोनों लाइनों की ट्रेनें रोक दी गईं। जब पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हटाने का प्रयास किया तो स्थिति बेकाबू हो गई। पुलिस ने भीड़ को काबू में करने के लिए लाठीचार्ज और आंसू गैस का इस्तेमाल किया।

कूचबिहार में 30 लोग गिरफ्तार

कूचबिहार में बंद के दौरान कई स्थानों पर हिंसा भड़क उठी। पुलिस ने बताया कि सुबह 10 बजे तक कुल 30 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, जिसमें तुफानगंज की विधायक मालती राभा राय और कूचबिहार दक्षिण के विधायक निखिलरंजन डे भी हैं। इन दोनों विधायकों को पहले हिरासत में लिया गया और बाद में गिरफ्तार कर लिया गया।

दक्षिण दिनाजपुर में बीजेपी-तृणमूल कार्यकर्ताओं के बीच झड़प

दक्षिण दिनाजपुर के बुनियादपुर नगरपालिका क्षेत्र में भाजपा और तृणमूल कार्यकर्ताओं के बीच विवाद छिड़ गया। दोनों दलों के समर्थकों के बीच हाथापाई हुई, जिसमें तृणमूल के हमले में एक भाजपा कार्यकर्ता के सिर में गंभीर चोट आई।

हावड़ा, बंडेल और अन्य जगहों पर भी ट्रेन सेवा बाधित

हावड़ा-बंडेल लोकल ट्रेन को भी हावड़ा स्टेशन पर रोक दिया गया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने रेल ट्रैक पर लेटकर प्रदर्शन किया। इसी तरह, मुर्शिदाबाद के कई स्टेशनों पर भी भाजपा कार्यकताओं ने रेलवे ट्रैक पर कब्जा कर लिया, जिससे ट्रेन सेवाएं प्रभावित रहीं। पश्चिम मिदनापुर के घाटाल और भाटपाड़ा में भी बंद के दौरान भाजपा और पुलिस के बीच हिंसक झड़पें हुईं। भाजपा ने यहां पुलिस पर अकारण बल प्रयोग करने का आरोप लगाया। इस दौरान भाटपाड़ा में गोलीबारी की सूचना भी आई, जिसमें एक व्यक्ति घायल हो गया। राज्य के विभिन्न जिलों जैसे असनसोल, मालदा, कूचबिहार और पूर्व मेदिनीपुर में भी बंद के समर्थन और विरोध में जमकर प्रदर्शन हुए। बंगाल में भाजपा के इस 'बंगाल बंद' ने राज्य के कई हिस्सों में तनाव पैदा कर दिया। कई स्थानों पर पुलिस की सख्ती से स्थिति नियंत्रण में आ गई थी जबकि कुछ स्थानों पर तनाव बरकरार थी।

बस बहुत हो गया, मैं निराश और डरी हुई हूं... कोलकाता केस पर बोलीं राष्ट्रपति

नयी दिल्ली : कोलकाता में आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में डॉक्टर की दुष्कर्म के बाद हत्या की घटना से पूरे देश में गुस्सा और नाराजगी का माहौल है। अब राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी कोलकाता की इस घटना पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। राष्ट्रपति ने अपने बयान में कहा है कि यह मात्र घटना नही है, अपराधों की श्रृंखला का हिस्सा है। उन्होंने देशवासियों से अपील करते हुए कहाकि आइए, हम सामूहिक रूप से कहें कि अब बहुत हो गया। राष्ट्रपति का यह बयान तीन पेज का है। जिसे राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा, कोलकाता में एक डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या की वीभत्स घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया है। जब मुझे इस बारे में पता चला तो मैं स्तब्ध और भयभीत हो गई। इससे भी अधिक निराशाजनक बात यह है कि यह अपनी तरह की एकमात्र घटना नहीं थी, यह महिलाओं के खिलाफ अपराधों की श्रृंखला का हिस्सा है। कोलकाता में जब छात्र, डॉक्टर और नागरिक विरोध प्रदर्शन कर रहे थे, तब भी अपराधी अन्य जगहों पर घूम रहे थे।

एक नजर

जनता का आशीर्वाद ही मेरी हिम्मत और ताकत : हेमन्त सोरेन

रांची : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि जनता का आशीर्वाद ही मेरी हिम्मत और मेरी ताकत है। मुख्यमंत्री ने बुधवार को एक्स पर पोस्ट कर यह बात कही। उन्होंने इस पोस्ट में भाजपा पर तंज भी कसा। हेमंत सोरेन ने कहा कि भाजपा के षड्यंत्र, साजिश और तमाशों को राज्य में सरकार बनने के बाद से मैं देख रहा हूं। हर बार ईस्ट इंडिया कंपनी के इन वंशजों को करारा जवाब भी दिया है। इन्होंने मुझे तोड़ने की कोशिश की, इनसे हो न सका। मुझे झुकाने की कोशिश की, झारखंड को झुकाने की कोशिश की, इनसे हो न सका। झारखंड की करोड़ों जनता का भरोसा और उम्मीद मुझे हर षड्यंत्र और साजिशों से लड़ने की ताकत देता है।

चम्पाई की रेकी कर रहे थे झारखंड पुलिस के दो दारोगा, बड़े खेल की थी तैयारी : हिमंत बिस्वा सरमा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : असम के मुख्यमंत्री और झारखंड में भाजपा के सह चुनाव प्रभारी हिमंता विस्वा सरमा ने दावा किया है कि पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन की जासूसी झारखंड सरकार ने कराया है। उन्होंने खुलासा करते हुए कहा कि चम्पाई सोरेन की रेकी की जा रही थी। साथ ही झारखंड से दिल्ली तक उनपर दो लोग नजर रख रहे थे। इस दौरान एक महिला के साथ मिलकर कुछ बड़े खेल की भी तैयारी थी। संभवतः हनीट्रैप की कोशिश हो रही थी लेकिन समय रहते दिल्ली पुलिस ने सभी को हिरासत में ले लिया।

हिमंता बिस्वा सरमा ने बुधवार को सोशल मीडिया एक्स पर भी इस बात को साझा किया है। गुवाहाटी (असम) में बुधवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में असम के मुख्यमंत्री ने कहा कि चम्पाई सोरेन जब रांची से कोलकाता पहुंचे और कोलकाता से फिर दिल्ली गए तो उनका पीछा किया जा रहा था। एक ही फ्लाइट से दोनों रेकी करने वाले लोग भी साथ गए। इसके अलावा जिस ताज होटल में रुके, उनके कमरे के बगल में ही रूम बुक कर दोनों रह रहे थे। चम्पाई सोरेन किससे मिल रहे हैं और कहां जा रहे हैं, इसकी फोटो और पूरी जानकारी झारखंड सरकार तक पहुंचाई जा रही थी।

हिमंता के मुताबिक, जब दोनों की गतिविधियां संदिग्ध दिखी और पूछताछ की गई तो दोनों ने खुद को पत्रकार बता दिया। जब दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लिया तो

खुलासा हुआ कि दोनों युवक झारखंड पुलिस के स्पेशल ब्रांच के दारोगा थे। इनसे पूछताछ में जानकारी मिली कि उनकी ड्यूटी लगाई गई थी। जब भी चम्पाई सोरेन दिल्ली जा रहे थे, उनके पीछे दो पुलिसकर्मी लगाए जाते थे। इस मामले में चम्पाई सोरेन ने एक केस दर्ज कराया है। अब पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

हिमंता ने कहा कि झारखंड में अभी चम्पाई हेमंत के कैबिनेट में मंत्री भी हैं। इस तरह से किसी के निजी जीवन में रेकी कराना सही नहीं है। शायद देश में ऐसा मामला पहला होगा, जहां पूर्व मुख्यमंत्री सह मंत्री पर नजर रखी जा रही हो। इस मामले में झारखंड पहुंचने के बाद राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार से भी मुलाकात कर उनको जानकारी देंगे।

चम्पाई सोरेन की जासूसी प्रकरण की सीटिंग जज से हो न्यायिक जांच : मरांडी

रांची : भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन की जासूसी कराए जाने के मामले को अत्यंत गंभीर बताया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन अपनी आसन्न विधानसभा चुनाव में करारी हार को देखते हुए पूरी तरह बौखला गए हैं। हेमन्त सरकार पूरी तरह से अलोकतांत्रिक, असंवैधानिक निर्णय लेते हुए सत्ता का दुरुपयोग कर रही। बाबूलाल मरांडी बुधवार को पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हेमन्त सोरेन का इतना नैतिक पतन हो गया है कि सत्ता पाने के लिए पिता समान चम्पाई सोरेन, लोबिन हेंब्रम, मां समान भाभी सीता सोरेन की क्या वे किसी की भी बलि ले सकते हैं। ऐसा लग रहा कि वे औरंगजेब जैसा व्यवहार कर रहे। हाल के दिनों में राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन की गतिविधियों, उनके झारखंड और राज्य से बाहर के दौरों पर कड़ी नजर रखने के लिए राज्य पुलिस की विशेष शाखा ने पुलिसकर्मियों को गुप्त तरीके से लगाया है।

विशेष सत्र बुलाकर दुष्कर्मियों को फांसी के लिए बनाएंगे विशेष कानून : ममता

एजेंसी

कोलकाता : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने मंगलवार को तृणमूल छात्र परिषद (टीएमसीपी) के एक कार्यक्रम में आरजी कर अस्पताल कांड पर राज्य सरकार की स्थिति को स्पष्ट करते हुए कई अहम घोषणाएं कीं। ममता ने कहा कि वे राज्य विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर बलात्कार के मामलों में फांसी की सजा का कानून पारित करवाना चाहती हैं। उन्होंने कहा, जो हुआ वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन इसके बाद की कार्रवाई में कोई देरी नहीं होनी चाहिए। हम चाहते थे कि सात दिनों के भीतर फास्ट ट्रैक कोर्ट के माध्यम से फैसला हो।

टीएमसीपी के स्थापना दिवस के मौके पर बुधवार को धर्मतला के मेयो रोड में आयोजित रैली में ममता बनर्जी ने शिरकत की। इस

दौरान उन्होंने राज्य में महिलाओं की सुरक्षा, भाजपा की राजनीति और अन्य कई मुद्दों पर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि बंगाल में कोई भी महिला असुरक्षित महसूस नहीं करेगी और जो भी दोषी पाया जाएगा, उसे सख्त सजा दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा, आज का दिन मैं पीड़ितों को समर्पित करती हूं। देशभर में जितनी भी महिलाएं उत्पीड़न का शिकार हुई हैं और उनके परिवारों को समर्पित करती हूं। उन्होंने छात्र-युवाओं को सामाजिक जिम्मेदारी निभाने का संदेश भी दिया।

एक नजर

राष्ट्रीय गतका प्रतियोगिता में एमजीएम के खिलाड़ियों ने जीते 9 मेडल

बोकारो : पंजाब के संगरूर में 24 से 27 अगस्त तक राष्ट्रीय गतका प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें झारखंड राज्य की टीम की ओर से खेलते हुए एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल बोकारो के विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया। स्कूल के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में 9 मेडल जीते। प्रधानाध्यापक फादर डॉक्टर जोशी वर्गीस ने कहा कि इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों का शानदार प्रदर्शन रहा। अंडर-19 बालिका वर्ग में साक्षी श्रीवास्तव, प्रियदर्शनी कुमारी, जेबा नाज एवं अदिति तिवारी ने रजत पदक हासिल किया। वहीं अंडर 17 बालिका वर्ग में रिया कुमारी एवं श्रेया परीरा ने रजत पदक हासिल किया। वहीं अंडर 14 बालिका वर्ग में श्वाति कुमारी ने रजत एवं माया कुमारी एवं ऋषिका कुमारी ने कांस्य पदक जीते। कहा कि शिक्षकों के कुशल मार्गदर्शन में विद्यार्थी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। विद्यार्थी विविध प्रतियोगिता में मेडल जीत रहे हैं। बोकारो गतका संघ के सचिव राजीव सिंह ने कहा कि राज्य की टीम की ओर से खेलते हुए एमजीएम के विद्यार्थियों का सराहनीय प्रदर्शन रहा। प्रधानाध्यापक डॉक्टर फादर डॉक्टर जोशी वर्गीस ने विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की कामना की।

संस्कृति बचाओ अभियान को लेकर सांस्कृतिक मंच ने की बैठक

बोकारो : झारखण्ड सांस्कृतिक मंच के प्रधान कार्यालय धर्मशाला मोड़ चास में मंच का बैठक मंच के कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम महतो की अध्यक्षता में हुई। झारखण्ड सांस्कृतिक मंच का केंद्रीय समिति का पूनर्गठन सर्वसम्मति से एवं विधिवत रूप से किया गया जिसमें केंद्रीय अध्यक्ष - राजदेव माहथा, केंद्रीय महाचिव - संतोष कुमार सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष - विक्रम कुमार महतो,वरीय उपाध्यक्ष - हाबूलाल गोराईं, प्रवक्ता सह सोशल मिडिया प्रभारी - खगेन्द्र नाथ वर्मा बनाये जाने के साथ साथ संगठन के सभी पदाधिकारी गण पूर्ववत ही रहे। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि मंच के संस्थापक स्वर्गीय राजेंद्र महतो के सपना संस्कृति बचाओ अभियान को साकार करने के लिए पूर्व की भांति इस वर्ष भी कार्यक्रम को 16 सितम्बर 2024 को भव्य एवं विशाल रूप से किया जायेगा। इसके लिए सभी संस्कृति प्रेमी ग्रामीण स्तर पर जन संपर्क करेंगे। बैठक के अंत में मंच के संस्थापक स्व राजेन्द्र महतो एवं पूर्व केंद्रीय अध्यक्ष स्व अखिलेश्वर प्रसाद महतो के आत्मा की शांति के लिए दो मिनट मौन धारण किया गया।

पत्थर में बदल गया तिजोरी में रखा गया जेवर

रामगढ़ : आपने किस्से और कहानियों में यह सुना होगा की गुप्त स्थान पर रखा गया धन, मिट्टी हो गया। लेकिन रामगढ़ में यह मनगढ़ंत कहानी सच्ची घटना में तब्दील हो गई है। यहां एक घर के तिजोरी में रखा गया जेवर पत्थर में तब्दील हो गया है। प्रथम द्दष्टया कोई भी इस बात पर भरोसा नहीं कर रहा। लेकिन जिस परिवार के साथ यह घटना घटी है, उसके होश उड़ गए हैं। उस परिवार ने रामगढ़ पुलिस को भी इस मामले की सूचना देकर उनके भी होश फाख्ता कर दिए हैं। परिवार वालों ने पुलिस से न सिर्फ इस मामले की जांच करने की मांग की, बल्कि तिजोरी में मिले पत्थरों की फोरेंसिक जांच करने की भी मांग कर डाली है।
रामगढ़ पुलिस को जबसे इस बात की सूचना मिली है, तब से जांच करने वाले अधिकारी भी परेशान हो गए हैं। क्योंकि उन्हें प्रथम द्दष्टया जेवरों की अनुमानित राशि करोड़ों में बताई गई है। करोड़ों रुपए के जेवर अचानक से पत्थर में कैसे तब्दील हो गए और परिवार वालों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यह घटना डीवीसी के मैनेजर रतन मोसेस के आवास पर घटी है।

आजसू का सरकार के विरोध में प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : हेमंत हटाओ झारखंड बचाओ के नारों के साथ बुधवार को आजसू जिला कमिटि द्वारा पुपुनकी गांव से जनजागरण पदयात्रा प्रारंभ किया। इसका नेतृत्व जिलाध्यक्ष सचिन महतो ने किया। इस अवसर पर पर पुपुनकी, कामनागोड़ा, जोल्हाडीह सहित पुपुनकी पंचायत के बिभिन्न टोला मुहल्लों में सघन रूप से जनजागरण अभियान चलाया गया। यह जनजागरण अभियान चास के 54 पंचायतों में से बिधानसभा क्षेत्र के 36 पंचायतों में, 35 चास नगर के वार्ड परिषद, बोकारो के 10 सेक्टर एवं उत्तरी एवं दक्षिणी बिस्थापित गावों में सघन जनजागरण अभियान चलाने का निर्णय लिया गया है। सभी आजसू कार्यकर्ता पूरे उत्साह के साथ इस अभियान सफल बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं। इस अवसर पर कामनागोड़ा गांव में नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष सचिन महतो ने कहा कि झामुमो सरकार सभी मोर्चे में बिफल साबित हुई है। जनता को किये गये एक भी वादा पूरा नही किया। पिछले पांच साल के कार्यकाल के दरम्यान जनहित में एक भी काम नही किया जिसे वो अपना उपलब्धि के रूप में गिना सके। पांच लाख बेरोजगारों को नौकरी, जीएम लैंड का निबंधन, बेरोजगारी भत्ता, नियोजन नीति, स्थानीय नीति, सहित बिकास योजनाओं को धरातल में उतारने में पूरी तरह फेल रही है। केवल लोक लुभावन वादे करके सरकार अपनी नाकामी छुपा रही है। भ्रष्टाचार चरम पर है, शासन ब्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है, जनता त्राहिमाम कर रही है। ऐसी निक्कमी सरकार से झारखंड का भला होनेवाला नही है। झारखंडी जनता बदलाव चाह रही है और एनडीए गठबंधन से बेहतर कोई बिकल्प नही हो सकता। आजसू जनता के हर दुख दर्द के साथ है और सच्चा हितैषी बनकर कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए तैयार है। उनके हर समस्याओं को लेकर पूरी तत्परता के साथ उसे दूर करने में अपनी भूमिका निभाई है। इस जनजागरण अभियान में मुख्य रूप से पार्ट केके केन्द्रीय सचिव अश्विनी कुमार महतो, केंद्रीय सदस्य राकेश कुमार महतो, जिला कार्यकारी अध्यक्ष अशोक महतो, जिला उपाध्यक्ष संतोष कुमार महतो, कुमोद महतो,पूर्व मुखिया अरूण कुमार महतो, चास नगर अध्यक्ष अभय शर्मा, चास नगर महासचिव बिरेंद्र हरि, संदीप कुमार, लक्ष्मण महतो, बजरंग महतो, फनीभूषण मोदी, प्रथम मोदी, रमेश सिंह, सरयू महतो, विजय यादव, नवीन सिंह, कंचन महतो, अर्जुन महतो, सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

एनफोर्समेंट एजेंसियां चलाएं सघन जांच अभियान : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : आसन्न विधानसभा चुनाव 2024 को निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने को लेकर उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सुश्री माधवी मिश्रा ने बुधवार को अपने कार्यालय कक्ष में सभी एनफोर्समेंट एजेंसियों के साथ बैठक की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि उत्पाद, सीआइएसएफ, रेलवे, इनकम टैक्स, पुलिस सहित अन्य एनफोर्समेंट एजेंसियां आपस में समन्वय स्थापित कर, विशेष सतर्कता बरतते हुए सघन जांच अभियान चलाएं। वहीं उन्होंने धनबाद - बोकारो तथा मैथन बोर्डर पर कड़ाई से जांच करने, सभी बैंक को अप्रत्याशित कैश डिपोजिट और कैश विथड्रावल करने वाले खाता धारकों पर कड़ी नजर रखने तथा उत्पाद विभाग को अवैध शराब कारोबारियों के विरुद्ध अभियान चलाने का निर्देश दिया। बैठक में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, वन प्रमंडल पदाधिकारी विकास पालीवाल, ग्रामीण एसपी कपिल चौधरी, डीएसपी हेडक्वार्टर 1 सुमित कुमार, इनकम टैक्स से इंद्रजीत रविदास, उत्पाद विभाग से रामलीला रवानी के अलावा सीआईएसफ, बैंक सहित अन्य एनफोर्समेंट एजेंसी के प्रतिनिधि मौजूद थे।

आजसू के शिष्टमंडल ने जिला नियोजन पदाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : आजसू पार्टी की केंद्रीय कमेटी के निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज श्रम नियोजन कार्यालय पहुंचकर आजसू पार्टी की केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो के नेतृत्व में जिला नियोजन पदाधिकारी को एक मांग पत्र दिए जिसमें
इस साल के साढ़े चार साल में कितना नियोजन हेतु रजिस्टर किया गया है।
श्रम नियोजन कार्यालय द्वारा कितना नियोजन दिया गया है।
साढ़े चार साल में झारखंड सरकार द्वारा निर्धारित स्थानीयों को 75% नियोजन हेतु कितना नियोजन दिया गया है।
झारखंड सरकार द्वारा बनाए गए 75% झारखंड पोर्टल द्वारा नियोजन दिया जाएगा यह नियम का खुलेआम बीसीसीएल के सभी कंपनीया उल्लंघन कर रही है यह कम्पनियों को जांच कर कार्रवाई किया जाए। आजसू पार्टी के केंद्रीय सचिव अमरदीप महतो ने कहा कि विभिन्न मांगों को लेकर जिला नियोजन पदाधिकारी एक मांग पत्र दिया और लगभग 4.5 साल के दरमियान श्रम नियोजन कार्यालय से कितना रोजगार दिया गया है उसका डाटा मांगा गया है एवं बीसीसीएल अंतर्गत आउटसोर्सिंग कंपनियां झारखंडियों को अनदेखा कर रही है और झारखंडियों का हक अधिकार छीना जा रहा है और पलायन के लिए विवश हो रही है पिछले इलेक्शन के दौरान हेंमत सोरेन ने कहा था कि 6 महीना में 5 लाख नौकरियां देंगे नहीं तो इस्तीफा दे देंगे इस्तीफा देने का समय आ चुका है हेमंत सोरेन को इस्तीफा दे देना चाहिए 6 महीना में नहीं पूरे 4.5 साल में 5 लाख नियोजन नहीं दे सके और झारखंड का भविष्य को अंधेरे में करने का कार्य किया है युवाओं का भविष्य को खत्म करने का काम किया है युवा के भविष्य को बर्बाद करने का कार्य किया है और आज झारखंडी पलायन होने के लिए विवश हो रही है विकास कार्य को रोक कर अपनी संपत्ति अर्जित करने में लगे हुए हैं साढ़े चार साल में सभी युवा अपने को छला हुआ महसूस कर रहा है युवाओं को यह सरकार को उखाड़ फेंकने की जरूरत है।

सरस्वती शिशु मंदिर श्यामडीह की बहनों ने निकाली श्रद्धांजलि सह आक्रोश रैली

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : बुधवार को सरस्वती शिशु मंदिर श्यामडीह कि बहनों ने कोलकाता आर जी कर मेडिकल कॉलेज में महिला डॉक्टर के साथ घटी घटना के विरोध में श्रद्धांजली सह आक्रोश रैली कतरास राजस्थानी धर्मशाला से सूर्य मंदिर नदी किनारे तक निकाला। इस रैली में विद्यालय कि 500 से अधिक बहनें, आचार्य-आचार्या एवं बाल कल्याण ट्रस्ट कतरासगढ़ के ट्रस्टीगण शामिल हुए। इस रैली का मुख्य उद्देश्य महिलाओं पर हो रहे अत्याचार को रोकने एवं नारी सुरक्षा हेतु कठोर कानून बनाने के लिए किया गया। मुजरिम को तुरन्त फांसी देने कि मांग कि गयी। रैली के माध्यम से बताया गया कि अब नारी कि आवाज दबने वाली नहीं है। दोषियों को सजा दिलाने के लिये कानून एवं समाज से मदद मांगी गयी। रैली के माध्यम से बहनों ने बताया कि स्त्री बेटी है, माता है, बलिदानों की गाथा है, श्रीमद् भागवत गीता है, द्रौपदी है, सीता है। नारी का जो अपमान करे वो मर्द नहीं हो सकता। नारी का सम्मान करो।उपरोक्त रैली में बहनों का मनोबल बढ़ाने हेतु सरस्वती शिशु मंदिर श्यामडीह के आचार्य एवं बाल कल्याण ट्रस्ट कतरासगढ़ के ट्रस्टी प्रदीप खेमका, श्रवण कुमार खेतान, हरि प्रसाद अग्रवाल, सुशील खेतान, सुशील चौधरी, राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, विक्रम कुमार राजगढ़िया, अभिषेक अग्रवाल, कमलेश अग्रवाल, प्राचार्य अभिमन्यु कुमार, आचार्य-दीदीजी एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे। रैली को सफल बनाने में नगरवासियों, पत्रकार बन्धु गण एवं प्रशासन का सहयोग सराहनीय रहा।

जन्माष्टमी पर श्रद्धालुओं की उमड़ी भीड़

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : सेक्टर 9 वैशाली मोड में श्री जन्माष्टमी पूजा का पंडित द्वारा वैदिक मंत्र उच्चारण कर विधिवत पूजा की गई मध्य रात्रि 12:01 में भगवान श्री कृष्ण का जन्म दिवस के रूप में मनाया गया वहीं भक्तों लोग भगवान के जन्म को लेकर सुबह से ही निर्जला व्रत रखी हुई थी। जैसे-जैसे कृष्ण लाल का जन्म का समय नजदीक आ रहा था वैसे ही धीरे-धीरे पंडालो मे भक्तों लोगों की भीड़ बड़ने लगी। भगवान के जन्म उपरांत भक्तों ने अपने 24 घंटे का निर्जला व्रत फल खाकर पालन किया वहीं माताएं एवं बहनों ने भगवान को नन्हे रूप में झूले में भी झुलाया गया। मौके पर मौजूद कमेटी के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार ने बताया कि पूजा लगभग 25 वर्षों से बड़े ही धूमधाम से पूजा की जा रही है प्रत्येक साल हम लोगों की कोशिश रहती है की इस बार कुछ नया और आकर्षक पंडाल एवं साज सज्जा की व्यवस्था की गई है प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मीना बाजार की व्यवस्था की गई है जिसमें कई प्रकार के झूले बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बना है हम लोगों की कोशिश रहती है कि हर साल आए हुए भक्तों को कुछ नया देखने को मिले इसके लिए हम लोगों के कमेटी के सदस्य अपनी पूरी मेहनत एवं कोशिश करते हैं कि श्रद्धालुओं को कुछ अलग दिखने को मिले प्रत्येक वर्ष श्री कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर प्रसाद के रूप में खीर का वितरण वा महाभोग के रूप में कमेटी के द्वारा वितरण किया जाता हैं यह पूजा कृष्ण लाल के छटियारी तक मनाई जाएगी उसके बाद प्रतिमा की विसर्जन की जाएगी।

भारतीय रिजर्व बैकं में फाइनेंशियल लिटरेसी पर कार्यशाला का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चिन्मय विद्यालय बोकारो में आज भारतीय रिजर्व बैकं रॉची के तत्वावधान में फाइनेंसियल लिटरेसी पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रेम रंजन प्रसाद सिंह, विश्वरूप मुखोपाध्याय, अध्यक्ष चिन्मय विद्यालय बोकारो, स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती आवासीय आचार्या चिन्मय मिशन बोकारो उप प्राचार्य नरमेंद्र कुमार ने दीप प्रज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ किया। विद्यालय के विद्यार्थी परिषद द्वारा स्वागत गान गा कर एवं सभी गणमान्य अतिथियो को भेंट स्वरूप पौधा देकर स्वागत किया गया। चिन्मय विद्यालय के उप-प्राचार्य नरमेंद्र कुमार ने मुख्य अतिथि प्रेम रंजन प्रसाद सिंह क्षेत्रीय निदेशक भारतीय रिजर्व बैंक रांची, विश्वरूप मुखोपाध्याय अध्यक्ष चिन्मय विद्यालय बोकारो , स्वामिनी संयुक्तानंद सरस्वती आवासीय आचार्या चिन्मय मिशन बोकारो एवं उपस्थित सभी गणमान्य एवं छात्र-छात्राओं का स्वागत करते हुए कहा कि यह बहुत ही गौरव का क्षण है कि भारतीय रिजर्व बैंक अपने 90 साल पूरे करके 100वें वर्ष की ओर धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा है। आज के समावेश में हम सभी को वित्तीय जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि देश का हर व्यक्ति विकास में सहायक साबित होगा और अगर वित्तीय जानकारी स्कूली शिक्षा में ही मिल जाए तो यह बहुत ही उपयोगी साबित होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रेम रंजन प्रसाद सिंह ने वित्तीय जानकारी देते हुए कहां की वित्तीय शिक्षा की जानकारी विद्यालय से ही प्रारंभ हो जानी चाहिए। देश के हर व्यक्ति को आर्थिक विकास के लिए सकारात्मक रूप से जोड़ना यह भारतीय रिजर्व बैंक की प्राथमिकता है। भारत दुनिया में सबसे तेजी से आगे बढ़ रहा है। आर्थिक विकास, आर्थिक गतिविधियों के माध्यम से देश के सभी वर्गों में दिख रही है। बहुत जल्द हमारा देश दुनिया के तीसरी आर्थिक महाशक्ति के रूप में सामने होगा। इस संदर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक लोगों में जागरूकता के लिए , वित्तीय फ्रॉड से बचने के लिए कई सकारात्मक उपाय कर रहा है और लगातार कार्यक्रम के माध्यम से, वित्तीय फ्रॉड धोखाधड़ी से कैसे बचा जाए इसकी जानकारी भारत के लोगों तक पहुंचा रहा है। बहुत जल्द भारतीय रिजर्व बैंक अपना 100 साल सफलता पुर्वक पूरा करेगा और हम सभी के लिए गौरव का क्षण होगा। इसी संदर्भ में भारतीय रिजर्व बैंक, रांची शाखा की टीम के द्वारा बच्चों में वित्तीय साक्षरता की जानकारी के लिए प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें कई विद्यार्थियों ने सटीक और उचित उत्तर देकर पुरस्कार जीते। अपने द्वारा अर्जित धन का पूरा कैलकुलेशन के साथ ही निवेश करें इसके अलावा उन्होंने कहा कि नेट बैंकिंग का उपयोग करें, लेकिन सावधान रहें।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय जनता पार्टी राजगंज मंडल की हुई बैठक

धनबाद : बुधवार को भारतीय जनता पार्टी राजगंज मंडल की बैठक नगरीकला दक्षिण पंचायत भवन में हुई। बैठक की अध्यक्षता भाजपा राजगंज मंडल अध्यक्ष रंजीत सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सर्वप्रथम महापुरुषों के तस्वीर पर पुष्पांजलि कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया एवं आगामी टुंडी विधानसभा चुनाव की तैयारी को लेकर चर्चा की गई मुख्य रूप से मंडल में निवास करने वाले सभी पदाधिकारी जिले के सभी पदाधिकारी कार्यसमिति सदस्य मंच मोर्चा के सभी अध्यक्ष शक्ति केंद्र के संयोजक सहसंयोजक एवं बूथ अध्यक्ष सम्मानित नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। बैठक में मुख्य रूप से प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सह टुंडी विधानसभा चुनाव प्रभारी रमेश कुमार राही को भाजपा राजगंज मंडल की ओर से जोरदार ढंग से पुष्पगुच्छ एवं अंग वस्त्र देकर स्वागत किया गया सभी विषयों पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ सभी कार्यकताओं से आह्वान किए की सभी लोग मिलकर ईमानदारी पूर्वक विधानसभा 2024 चुनाव की तैयारी में लग जाएं इसी संकल्प के साथ टुंडी विधानसभा में कमल फूल खिलाकर अपना विधायक बनाना है। और राज्य में सरकार बने। मौके पर टुडी विधानसभा भाजपा के पूर्व प्रत्याशी विक्रम पाण्डेय, राम प्रसाद महतो, सुरेश महतो, रमेश महतो, नीलकंठ रवानी,सुनील साव, नेपाल महतो, राहुल कुमार साहनी, डब्लू कुमार, सिंकु पाण्डेय,अशोक कुमार, अशोक झा, मसूदन मंडल, नरेश सिंह, धीरन रवानी, सुरेंद्र चौहान, रामाशीष, आदि अन्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम के संचालन संजीत सिंह व धन्यवाद ज्ञापन सुरेश किस्कु ने किया।

सोनिया देवी के नेतृत्व में क्षेत्र की समस्याओं को लेकर हुई बैठक

कतरास (धनबाद) : तेलोंटांड़ बस्ती में सोनिया देवी के नेतृत्व में क्षेत्र की समस्या को लेकर औपचारिक बैठक किया गया। जिसमे मुख्य रूप से समाजसेवी कन्हाई चौहान उपस्थित हुए। बैठक में उपस्थित सभी महिलाएं एवं पुरुष ने अपनी जन समस्या ओर बेरोजगारी की समस्याओं से श्री चौहान अवगत कराया व कहा कि बेरोजगारी बाघमारा की सबसे बड़ी समस्या है। इसका निदान करना हमारा पहला प्रयास होगा। बाघमारा की जनता हमे एक बार आशीर्वाद देकर देखे।विकास क्या होता है वो कर के दिखाऊंगा।बैठक में उपस्थित सोनिया देवी, शीतल देवी, सुमित्रा देवी,राधा देवी,गोरी देवी, पुष्पा देवी, हिजा देवी, सुशीला देवी, सुनीता देवी, प्रदीप चौहान , राजू भुइंया,अनिल कुमार, बंटी अंसारी,भोलू चौहान,पिंकू पाल, गुड्डू चौहान एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

संकल्प एजुकेशन ने चलाया नवोदय जागरूकता अभियान

धनबाद : गुरुवार को संकल्प एजुकेशन के द्वारा अंगारपथरा ,कतरास के विभिन्न मोहल्ले में नवोदय जागरूकता अभियान चलाया गया।अभिभावकों को संबोधित करते हुए संकल्प एजुकेशन के निदेशक सहदेव महतो ने कहा कि नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा प्रत्येक बच्चे का अधिकार है। प्रत्येक बच्चे को इसमें सम्मिलित होना चाहिए उन्होंने इस परीक्षा के विषय में बताया कि कक्षा 5 में अध्यनरत छात्र-छात्राएं जो किसी सरकारी अथवा मान्यता प्राप्त विद्यालय में अध्यनरत है परीक्षा में सम्मिलित होने के पात्र हैं। 18 जनवरी 2025 को प्रवेश परीक्षा होना तय है। अभी इसका आवेदन पत्र भरा जा रहा है जो 16 सितंबर तक चलेगा। आवेदन करने वाले अभ्यर्थी का जन्म 1 मई 2013 से 31 जुलाई 2015 के बीच होना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र के अभ्यर्थियों के लिए 75प्रतिशत जबकि शहरी क्षेत्र के अभ्यर्थियों के लिए 25 प्रतिशत सीट आरक्षित है। छात्राओं के लिए एक बटा तीन सीट आरक्षित है। अभ्यर्थियों से ऑनलाइन आवेदन पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं। अभियान मे संकल्प एजुकेशन की पूरी टीम लगी हुई है जिससे अधिक से अधिक बच्चे परीक्षा में सम्मिलित हो सके। जागरूकता अभियान में मुख्य रूप से लक्ष्मण कुमार ,दया कुमार, अरिजीत कुमार महतो ,स्नेहा कुमारी, मानवी कुमारी, अभय कुमार ,आयुष चरण शर्मा ,लाडली कुमारी, संनवि चौहान ,सुरभि कुमारी, युग आर्या, राजवीर सिंह ,रोहित कुमार,सत्यम कुमार, आराध्या सहाय, अपराजिता सहाय, वैष्णवी कुमारी, आदित्य शर्मा एवं यश कुमार अन्य सहित उपस्थित थे।

बोकारो में युवक की गला रेतकर हत्या

बोकारो : जिले के गोमिया थाना क्षेत्र अंतर्गत करमटिया गांव के एक युवक की गला रेतकर हत्या कर दी गई। मुकेश कुमार (35) का शव घर से पांच सौ मीटर की दूरी पर पहाड़ी के नीचे मिला। मामले की पड़ताल के लिए बोकारो से डॉग स्क्वायड की टीम को भी बुलाया गया है। घटना के संबंध में ग्रामीणों ने कहा कि बुधवार की सुबह कुछ महिलाओं ने पहाड़ी की ओर रास्ते में युवक का शव देखा। महिलाओं ने तुरंत इसकी जानकारी गांव के अन्य लोगों को दी। ग्रामीणों ने घटना की जानकारी गोमिया पुलिस को दी। बताया जाता है कि युवक के गर्दन पर धारदार हथियार से कटे हुए का निशान है। अनुमान लगाया जा रहा है कि हत्या कहीं दूसरे स्थान पर किया गया है और शव को गांव के नजदीक पहाड़ी के पीछे फेंक दिया गया है। इस संबंध में मृतक की मां फगुनी देवी ने कहा कि मंगलवार की शाम को वह घर से निकला था और इसके बाद से ही गायब था। इस संबंध में गोमिया के सर्किल इंस्पेक्टर महेश प्रसाद सिंह ने बताया कि घटना के उदभेदन के लिए तकनीकी जानकारी ली जा रही है। हत्यारे जल्द ही पुलिस की गिरफ्त में होंगे। सूचना मिलते ही गोमिया के पूर्व विधायक योगेंद्र प्रसाद ने घटनास्थल पर पहुंचकर मामले की जानकारी ली और पुलिस को इस घटना का जल्द उदभेदन करने के लिए कहा। उन्होंने मृतक के परिजनों को ढांढस बढ़ाते हुए हर संभव मदद करने का आश्वासन भी दिया।

एक नजर

रामनारायण सिंह बने रातू थाना के नए प्रभारी

रांची : रांची के एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बुधवार को नौ इंस्पेक्टर को एक जगह से दूसरे जगह पदस्थापित किया है। पुलिस केंद्र में पदस्थापित रामनारायण सिंह को रातू थाना का थाना प्रभारी, पुलिस केंद्र में पदस्थापित रामकुमार वर्मा को धुर्वा थाना का प्रभारी, मांडर अंचल निरीक्षक के पद पर पदस्थापित जयप्रकाश राणा को डेली मार्केट का थाना प्रभारी, रातू थाना प्रभारी के पद पर पदस्थापित शशि भूषण चौधरी को मांडर का अंचल निरीक्षक बनाया गया है। इसी प्रकार पुलिस केंद्र में पदस्थापित मनोज कुमार को बरियातू थाना का प्रभारी, पुलिस केंद्र में पदस्थापित कमलेश पासवान को यातायात थाना प्रभारी, पुलिस केंद्र में पदस्थापित रूपेश कुमार सिंह को लालपुर थाना प्रभारी, पुलिस केंद्र में पदस्थापित सुनील कुमार सिंह को हिंदपीढ़ी थाना का प्रभारी और डेली मार्केट थाना में पदस्थापित विनोद कुमार को पुलिस केंद्र रांची में पदस्थापित किया गया है। इस संबंध में बुधवार को एसएसपी की ओर से आदेश जारी किया गया है।

कांग्रेस ने मनाई पीएन सिंह की पुण्यतिथि

रांची : प्रदेश कांग्रेस के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष पीएन सिंह की पुण्यतिथि रांची स्थित कांग्रेस भवन में बुधवार को मनाई गई। इस अवसर पर कांग्रेस नेताओं कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने उनका व्यक्तित्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया। मौके पर पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि पीएन सिंह ने अपने राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन में एक अलग पहचान बनाई। उन्होंने हमेशा समाज के उत्थान के लिए काम किया। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के उम्मीदवार भी रहे, 1987 में इन्हें बिहार राज्य लघु उद्योग निगम का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। 2000 में प्रदेश कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष संगठन द्वारा इन्हें मनोनीत किया गया। संगठन के प्रति इनकी निष्ठा और इच्छा शक्ति को देखते हुए इन्हें 1980 से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य मनोनीत किया गया। इनका सादा एवं सरल जीवन तथा स्पष्ट विचार लोगों को बरबस आकर्षित एवं प्रभावित करता था। ये दूरदर्शी होने के साथ-साथ एक ओजस्वी वक्ता भी थे। इन्होंने जीवन पर्यंत कांग्रेस की मजबूती के लिए कार्य किया। हर छोटे बड़े कांग्रेसी कार्यकर्ता के सुख-दुख में हमेशा शामिल रहकर उनका हौसला बढ़ाया करते थे। श्रद्धांजलि देने वालों में प्रमुख रूप से राकेश सिन्हा, राजीव रंजन प्रसाद,डॉ जयप्रकाश गुप्ता,सोनाल शांति,अमरेंद्र सिंह सहित अन्य नेता शामिल थे।

विश्वविद्यालय में लगा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर

रांची : झारखंड छात्र दल ने बुधवार को आई बैंक के माध्यम से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया। इसमें विश्वविद्यालय के 300 से ज्यादा छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के साथ विश्वविद्यालय कुलपति ने निःशुल्क नेत्र जांच कराया। इस दौरान कुलपति प्रो. तपन कुमार शांडिल्य ने झारखंड छात्र दल को नेत्र जांच शिविर लगाने के लिए सराहना की और धन्यवाद दिया। इस शिविर को लगाने में मुख्य रूप से प्रभारी ऋषभ कुमार, अध्यक्ष बबलू कुमार महतो, कार्यकारी अध्यक्ष प्रशांत महतो सहित अन्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बच्चों में पढ़ाई की रुचि विकसित करने के लिए 'रीडिंग कैंपेन' शुरू

रीडिंग मोबाइल वैन को राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक ने किया रवाना

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड सरकार के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के अंतर्गत झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद द्वारा यूनिसेफ, आईपीईएल एवं रूम टू रीड इंडिया के सहयोग से 27 अगस्त से नौ सितंबर तक रीडिंग कैंपेन का आयोजन किया जा रहा है। विभाग द्वारा आयोजित इस अभियान बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि विकसित करने, समुदाय एवं अभिभावकों को बच्चों के पठन- पाठन से जोड़ने एवं बच्चों के लिए उपलब्ध बाल साहित्य के प्रति सभी को जागरूक करना है। 14 दिनों तक चलने वाले इस अभियान में प्रत्येक दिन स्कूल स्तर की गतिविधि निर्धारित की गई है जिसे शिक्षकों द्वारा बच्चों और समुदाय के सहयोग एवं प्रतिभागिता से किया जाना है। राज्य शिक्षा परियोजना निदेशक आदित्य रंजन ने बुधवार को इस अभियान से संबंधित रीडिंग मोबाइल वैन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह मोबाइल लाइब्रेरी वैन स्कूलों में जाएगी, जहां बच्चों के साथ विभिन्न तरह की पठन-पाठन की गतिविधियां की जाएगी। रीडिंग कैंपेन के उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान आदित्य रंजन ने प्रारंभिक अवस्था से ही पठन की आदत विकसित करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक अवस्था से पढ़ने की आदत विकसित करना न केवल बच्चों को उनकी शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है, बल्कि उनके समग्र विकास में भी सहायक होता है।

तीन सितंबर को रीड-ए-थॉन का होगा आयोजन

तीन सितंबर को पूर्वाह्न 11 से 11:30 बजे तक रीड-ए-थॉन का आयोजन किया जाएगा। रीड अ थोन के दौरान बच्चे, शिक्षक, पदाधिकारी, समुदाय द्वारा अलग अलग जगहों पर कताबें पढ़ी जाएगी। नौ सितंबर को राज्य स्तर पर सेमिनार आयोजित कर इसका समापन किया जाएगा। समापन कार्यक्रम में कैंपेन की उपलब्धियों एवं आगे की कार्ययोजनाओं पर चर्चा की जाएगी।

पढ़ने के महत्व और इसके प्रति रूचि बढ़ाने के लिए कैंपेन महत्वपूर्ण : अभिनव कुमार

झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी (गुणवत्त शिक्षा) श्री अभिनव कुमार ने पढ़ने की महत्ता एवं बच्चों में इसके प्रति रुचि बढ़ाने के दृष्टिकोण से इस कैम्पेन को महत्वपूर्ण मानते हुए कहा कि इस कैम्पेन की गतिविधियों में न केवल शिक्षक और बच्चे, बल्कि समुदाय के लोग भी इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। सोशल मीडिया के विभिन्न माध्यमों में फेसबुक एवं एक्स के जरिए भी इस कैम्पेन का व्यापक प्रसार-प्रचार किया जाएगा, ताकि अधिक से अधिक लोग इस कैम्पेन की गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। यूनिसेफ की एजुकेशन स्पेसिलिस्ट पारुल शर्मा ने कहा कि प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के भविष्य की सफलता की नींव रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह केवल पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें परस्पर संबंध, सहयोग, और भावनात्मक नियंत्रण जैसे जरूरी जीवन कौशलों का भी विकास होता है। इस रीडिंग कैंपेन के माध्यम से हम चाहते है कि बच्चों को किताबें पढ़ने का भरपूर मौका मिले क नियमित रूप से पुस्तकें पढ़ना बच्चों के मानसिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डीसी ने मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना कार्यक्रम की तैयारियों का लिया जायजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के मोरहाबादी मैदान में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के प्रमण्डलीय स्तरीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है। कार्यक्रम की तैयारियों का लेकर बुधवार को उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने जायजा लिया। उपायुक्त ने कार्यक्रम स्थल में चल रही तैयारियों का जायजा लेते संबंधित पदाधिकारियों को ससमय पूरी तैयारी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने मंच, वीआईपी लाउंज, लाभुकों के आवागमन, उनके बैठने, खाने-पीने, शौचालय, पार्किंग, ब्रांडिंग आदि व्यवस्था की जानकारी लेते हुए संबंधित पदाधिकारी को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बारिश को ध्यान में रखते हुए तैयारी सुनिश्चित करें ताकि कार्यक्रम के दौरान किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। इस दौरान उप विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव, परियोजना निदेशक आईटीडीए संजय कुमार भगत, जिला नजारत उपसमाहर्ता सुदेश कुमार, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी सुरभि सिंह, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी उर्वशी पाण्डेय, जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रदीप भगत एवं अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

हाई कोर्ट में निकाय चुनाव मामले में सरकार की अपील पर सुनवाई पूरी, फैसला सुरक्षित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड हाई कोर्ट में राज्य में निकाय चुनाव को लेकर राज्य सरकार की अपील पर बुधवार को दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी हो गई, जिसके बाद कोर्ट ने मामले में फैसला सुरक्षित रख लिया। मामले की सुनवाई बुधवार को एक्टिंग चीफ जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में हुई। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार के अपर महाधिवक्ता सचिन कुमार ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का हवाला देते हुए कहा कि ट्रिपल टेस्ट कराने के बाद ही राज्य में निकायों का चुनाव करना है। राज्य के जिलों में ओबीसी की आबादी का आकलन की प्रक्रिया जारी है। पिछड़ा आयोग द्वारा ओबीसी की आबादी का आकलन किया जा रहा है। वहीं, प्रतिवादी पूर्व पार्षद रोशनी खलखो की ओर से अधिवक्ता ने विनोद सिंह ने बताया कि सरकार राज हठ के निकाय चुनाव को टाल रही है। सरकार ने चुनाव कराना नहीं चाहती है। एकल पीठ ने भी चुनाव के संबंध में उनके पक्ष में फैसला दिया है। तीन सप्ताह में राज्य में निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी करने के चार जनवरी के हाई कोर्ट के एकल पीठ के आदेश को रद्द करने को लेकर राज्य सरकार की ओर से अपील (एलपीए) दायर की गई है। खंडपीठ ने पूर्व में मामले में हाई कोर्ट की एकल पीठ के द्वारा पारित आदेश पर रोक लगाने से किया इनकार किया था। अपील (एलपीए) में राज्य सरकार की ओर से कहा गया है कि पिछड़ा आयोग को ही डेडिकेटेड कमीशन के रूप में नियुक्त कर दिया गया है। यह राज्य के जिलों में ओबीसी की आबादी का आकलन करेगी। इस संबंध में डाटा राज्य सरकार को उपलब्ध कराएगी।

अंतरराज्यीय छिनतई गिरोह का खुलासा, पांच गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची के मांडर थाना पुलिस ने अंतरराज्यीय छिनतई गिरोह का खुलासा करते हुए पांच अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधियों में ओडिशा निवासी अउला आलोक राव, करण प्रधान, काली कबाड़ी, अउला धर्म राव और अउला तारो शामिल है। इनके पास से दो पल्सर बाइक, लूट का अपाची बाइक, लूट का पासबुक, 12 हजार 800 रुपये नकद, डिक्की तोड़ने वाला मास्टर की, चार मोबाइल और घटना के वक्त पहना हुआ हेलमेट बरामद किया है। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि 20 अगस्त को मांडर थाना क्षेत्र के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया टांगरबसली ब्रांच के पास छिनतई की घटना को अंजाम दिया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए खलारी डीएसपी और मांडर थाना प्रभारी के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया था। साथ ही घटना को अंजाम देने वाले अपराधियों को पकड़ने के लिए क्षेत्र के सभी थानों पर सादे लिबास में पुलिसकर्मी निगरानी रख रहे थे। इसी बीच सूचना प्राप्त हुई कि मांडर थाना क्षेत्र के टांगरबसली गांव के समीप बैंक के आस पास कुछ अज्ञात व्यक्ति तीन बाइक पर सवार होकर संदिग्ध अवस्था में घुम रहे है। सूचना के बाद थाना प्रभारी मांडर राहुल दल बल के साथ टांगरबसली गांव स्थित बैंक के समीप पहुंचे। वैसे ही रेकी कर रहे अअपराधी पुलिस को देखते ही बाइक से बेड़ो की ओर भागने लगे। थाना प्रभारी ने पुलिस बल के सहयोग से भाग रहे पांच अपराधी को तीन बाइक के साथ पकड़ा। पकड़ाये अपराधियों से कड़ाई से पूछताछ करने पर ये लोग बताये कि ये सभी मिलकर विगत सात माह से रांची जिला के माण्डर, डोरंडा, नामकुम, चान्हो, नगड़ी, बेड़ो, बुंडू, रातु और खलारी थाना क्षेत्रों में अवस्थित बैंकों के पास रेकी करते थे और पैसा निकाल कर जा रहे व्यक्ति का पीछा कर पैसा छिन कर भाग जाते है।

शोषित, पिछड़े, दलित, आदिवासी और गरीबों के आंसुओं को पोछना है : केशव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने तीसरे दिन बुधवार को संवाद आपके साथ कार्यक्रम के तहत गढ़वा-पलामू जिले के कांग्रेस नेताओं कार्यकर्ताओं के साथ संवाद स्थापित किया। कार्यकर्ताओं से संवाद के तहत कमलेश ने कहा कि चुनाव का शंखनाद हो गया है। हमारे पंचायत, प्रखंड अध्यक्ष और जिले के नेता जितना सक्रिय और मजबूत रहेंगे उतना ही हम अपनी प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगे। महतो ने कहा कि कांग्रेस के अतीत को याद करते हुए हमारे युवाओं को सीख लेना है कि हमें गांव-टोला की ओर चलना है। शोषित, पिछड़े, दलित, आदिवासी गरीबों के आंसुओं को पोछना है। उन्हें समाज के मुख्य धारा में मजबूती के साथ जोड़े रखना है। सरकार के कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उन्हें अधिक से अधिक दिलाना है। उन्होंने कहा कि नई उम्र की पीढ़ी को 18 वर्ष की उम्र में कांग्रेस ने मताधिकार का अधिकार दिया। इस अधिकार का उपयोग युवाओं को अच्छे जनप्रतिनिधि को चुनने में करना चाहिए। बड़ी सभाओं से ज्यादा लाभकर छोटे-छोटे कार्यक्रम आयोजित कर अधिक लोगों की आवाज सुनी जा सकती है और उन्हें कांग्रेस की नीतियों कार्यक्रमों अवगत कराया जा सकता है। जमीनी स्तर तक काम करने का यह बेहतर तरीका है। महतो ने कहा कि हमारी गठबंधन की सरकार ने विपक्ष के तमाम झंझावातों को झेलते हुए एक बेहतर कार्यकाल दिया है। सरकार के कल्याणकारी काम लोगों की जुबान पर हैं। यदि आप बूथ जीतेंगे तो विधानसभा जीतेंगे। अपने बूथ पर आगे रहने वाले लोगों को सम्मानित किया जाएगा।

आदिवासियों के लिए उनकी जमीन ही जिंदगी का आधार : बंधु

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : पूर्व मंत्री सह प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि आदिवासियों और मूलवासियों के लिये उनकी जमीन ही उनकी जिन्दगी का आधार है। जबतक उनके पास जमीन है तभी तक उनका अस्तित्व है अन्यथा वे विस्थापन और पलायन का शिकार होकर कब बेदखल हो जायेंगे, इसका पता भी नहीं चलेगा। तिर्की बुधवार को रांची के मोरहाबादी स्थित बापू वाटिका में रांची के विभिन्न शहरी एवं ग्रामीण मौजा के ग्रामीणों एवं अन्य लोगों के द्वारा द्वारा जमीन लूट के खिलाफ आयोजित एक दिवसीय विशाल धरना को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अबतक झारखंड में औद्योगिक विकास और नगर विकास का सबसे अधिक खामियाजा आदिवासियों और मूलवासियों ने ही भुगता है। क्योंकि, उन्होंने ही उसकी कीमत चुकायी है। उन्होंने कहा कि जमीन को बचाने के लिए सरकार और प्रशासन को कड़ा कदम उठाना ही होगा अन्यथा ग्रामीण खुद एकजुट होकर अपनी लड़ाई लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से रांची के मौजा फुटकलटोली, तिलता, कमड़े, सिमलिया, हेसल, बाजरा, हेहल, पंडरा, सुंडिल, दहीसोत, बनहोरा, अगड़ु, झिरी, सुंडील, चटकपुर, भोड़ा मौजा में गैर मजरुआ जमीन और रैयती जमीन की भू-माफिया तत्वों के जरिये कब्जा, लूट और खरीद-बिक्री जारी है। इसके कारण गांव का स्वरूप ही बदल गया। तिर्की ने वैसे दलाल और अपराधी तत्वों को चिन्हित कर उन्हें जेल की सलाखों के पीछे भेजने का सरकार से अनुरोध किया। केंद्रीय सरना संघर्ष समिति के अध्यक्ष शिवा कच्छप ने कहा कि जमीन बचाने के लिये सभी गांव के अगुवा को एकजुट होना होगा। समाजसेवी अलबिन लकड़ा ने कहा कि आदिवासी और मूलवासी की जमीन को बचाने के लिये सरकार को भू माफिया, अंचल अधिकारी एवं जिला प्रशासन पर लगाम लगाने का काम अविलम्ब करना होगा। अन्यथा ग्रामीणों को बाध्य होकर कानून को अपने हाथ में लेना होगा। इस एक दिवसीय धरना कार्यक्रम में संजय तिर्की, सुनील तिर्की, सुका उरांव, सुनील टोप्पो, राजेश लिंडा, मुन्जीर खान, लालू खलखो, सिद्धांत तिर्की, मदरा पाहन, पीटर कच्छप सहित अन्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

लूटपाट करने आए एक अपराधी को ग्रामीणों ने जमकर पीटा, पुलिस के हवाले किया

रांची : पिठोरिया इलाके में एक अपराधी की भीड़ ने जमकर धुनाई की है। भीड़ के द्वारा अपराधी के हथियार को भी छीन कर पुलिस के हवाले कर दिया गया है। घायल अपराधी को पुलिस ने इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया है। बताया जाता है कि खूंटी का रहने वाला एक अपराधी रोहित बैठा अपने एक साथी के साथ हथियार लेकर रांची में बुधवार बाइक लूट की घटना को अंजाम देने के लिए पहुंचा था। बाइक लूटने के लिए दोनों अपराधियों ने पिठोरिया थाना क्षेत्र के तौसीफ खान नामक युवक को हथियार के बल पर रोक लिया और उससे बाइक लूटने का प्रयास करने लगे। इसी दौरान तौसीफ खान के द्वारा शोर मचाए जाने पर आसपास के ग्रामीण जमा हो गए। ग्रामीणों को देखकर दोनों अपराधी मौके से फरार होने की कोशिश करने लगे लेकिन ग्रामीणों ने खदेड़ कर रोहित बैठा नाम के अपराधी को पकड़ लिया। जबकि एक अपराधी भागने में सफल रहा। अपराधी को पकड़ने के बाद ग्रामीणों ने रोहित की जमकर पिटाई की। इस वजह से वह बेहोश हो गया। मामले की जानकारी मिलने के बाद पिठोरिया थाना मौके पर पहुंची। पुलिस के मौके पर पहुंचने के बाद ग्रामीणों ने अपराधी को पुलिस के हवाले कर दिया। अपराधी के पास जो हथियार था उसे भी ग्रामीणों ने पुलिस को सौंप दिया। थाना प्रभारी गौतम राय ने बताया कि बाइक लूट की वारदात को अंजाम देने के लिए खूंटी के रहने वाले दो अपराधी रांची आए थे। इसमें से एक को ग्रामीणों के द्वारा पकड़ कर पुलिस के हवाले किया गया है। मौके से एक रिवाल्वर भी बरामद किया गया है। बरामद रिवाल्वर में दो गोलियां लोड थी। एक मोबाइल और कुछ पैसे भी बरामद किया गया है।

हाई कोर्ट से साहिबगंज के पत्थर कारोबारी टिंकल भगत को मिली जमानत

रांची : झारखंड हाई कोर्ट ने साहिबगंज के पत्थर कारोबारी टिंकल कुमार भगत जमानत याचिका पर फैसला सुनाया है। कोर्ट ने सुनवाई के बाद बुधवार को टिंकल भगत को जमानत प्रदान कर दी। पूर्व में कोर्ट ने दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी होने के बाद फैसला सुरक्षित रखा था। पूर्व में याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता अनिल कुमार ने पैरवी की थी। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया था कि अवैध खनन का यह मामला शेड्यूल ऑफेंस में नहीं आता है, जिस प्लॉट पर अवैध माइनिंग की बात कही जा रही है वह प्लॉट सरकार से लीज पर लिया गया था। याचिकाकर्ता को ईडी ने समन कर तीन बार बुलाया था, जिसपर वह ईडी के समक्ष उपस्थित हुए थे। मामले के एक सह आरोपित कृष्णा साहा को हाई कोर्ट से जमानत मिल चुकी है। इसलिए याचिकाकर्ता टिंकल भगत को भी जमानत दी जाए। ईडी की विशेष अदालत ने पूर्व में टिंकल भगत जमानत याचिका खारिज कर दी थी। इसके बाद उनकी ओर से हाई कोर्ट में जमानत के लिए अर्जी दाखिल की गई थी। मामले में ईडी ने टिंकल भगत के खिलाफ दो सितंबर, 2023 को अदालत में आरोप पत्र दाखिल किया था। टिंकल साहिबगंज में 1200 करोड़ के अवैध पत्थर खनन मामले से जुड़ा है। टिंकल भगत को ईडी ने सात जुलाई, 2023 को गिरफ्तार किया था। वह मुख्यमंत्री के बरहेट विधानसभा क्षेत्र के विधायक प्रतिनिधि पंकज मिश्रा का खास सहयोगी माना जाता है। वह खनन के पैसे पंकज मिश्रा को भी पहुंचाता था।

रक्षा राज्य मंत्री ने ऑपरेशन चांडिल की सफलता पर नौसेना दल को किया सम्मानित

रांची : पूर्वी सिंहभूम (जमशेदपुर) के चांडिल डैम में नौसेना द्वारा सफल रेस्क्यू ऑपरेशन कर लौट रहे जवानों को रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने बुधवार को एयरपोर्ट रोड स्थित होटल ग्रीन एकर्स में सम्मानित किया। मंत्री ने कहा हमें अपने नौ सैनिकों की वीरता और साहस पर गर्व है। चांडिल डैम में लबालब भरे पानी में कठिन परिश्रम से दो पायलट के साथ लापता एयरक्राफ्ट को खोज कर बाहर निकाला। मौसम अनुकूल नहीं होने के बावजूद नौसेना के जवानों के अथक प्रयास से यह ऑपरेशन सफल रहा। सेठ ने कहा कि हमारी सेना सिर्फ युद्ध के लिए नहीं होती, वह हर परिस्थिति में देश की सेवा के लिए होती है। इंडियन नेवी ने एक बार फिर से यह प्रमाणित किया है। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने सभी जवानों के साथ संवाद किया। नौसेना के दल से विमान और उसके लापता पायलट के शव को निकालने के लिए हुए सफल ऑपरेशन के अनुभवों को सुना। साथ ही कहा कि इस पूरे घटनाक्रम में इन वीर जवानों ने जो धैर्य, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया है, वह अद्वितीय है। इन जवानों का हौसला बढ़ाकर, इनसे मिलकर खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। ऑपरेशन चांडिल में कमांडर जन्मेजय सिंह, लेफ्टिनेंट राजीव कुमार पटेल, राजवीर सिंह सैनी, आकाश सिंह, प्रदीप कुमार खैरवा, शुभम धामे, अभिनव सिंह, रिंकू वाहर, अमरदीप, गुरप्रीत सिंह, ओंकार सिंह, मुकुल, शिवम केवट, युवराज, रोहित कुमार, वरुण गुप्ता, सोनू कुमार, सागर, रोहित, ए रमेश शामिल थे।

आरडीसीआईएस और आरएसपीने सेल में पहली बार ब्लास्ट फर्नेस में बायोचार का किया उपयोग

रांची : स्टील उत्पादन में कार्बन उत्सर्जन को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति में, सेल, राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) ने सेल, आरडीसीआईएस के सहयोग से ब्लास्ट फर्नेस #1 में बायोचार का उपयोग सफलतापूर्वक शुरू किया है। ज्ञातव्य हो कि बायोचार बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली प्राथमिक सामग्रियों में बायोमास, नगरपालिका अपशिष्ट, फसल अवशेष और पशु खाद शामिल हैं, जिन्हें ऑक्सीजन रहित वातावरण में कार्बनिक पदार्थों के रासायनिक रूपांतरण से उत्पन्न किया जाता है। राउरकेला स्टील प्लांट (आरएसपी) के प्रभारी निदेशक अतनु भौमिक ने इस प्रणाली का उद्घाटन किया और 24 अगस्त 2024 को बायोचार इंजेक्शन के ऐतिहासिक परीक्षण के दौरान पहला बायोचार चार्ज किया। इस अवसर पर एस आर सूर्यवंशी, ईडी (वर्क्स), तरुण मिश्रा, ईडी (एचआर) जिनके पास ईडी (प्रोजेक्ट्स) का अतिरिक्त प्रभार है, संदीप कुमार कर, ईडी (आरडीसीआईएस), आलोक वर्मा, ईडी (माइंस), ए के बेहुरिया, ईडी (एफ एंड ए), सुमीत कुमार, सीजीएम (बीएफ), ए के मिस्त्री, सीजीएम (आयरन) और श्री बिष्णु कुमार दास, जीएम (बीएफ) के अलावा ब्लास्ट फर्नेस सामूहिक और आरएसपी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। उपरोक्त टीम ने सेल के किसी भी संयंत्र में पहली बार बायो-चार इंजेक्शन का नेतृत्व किया। इस अवसर पर बोलते हुए, श्री भौमिक ने कहा, हमें पूरे सेल में इस परिवर्तनकारी पहल में सबसे आगे रहने पर गर्व है। अपने परिचालन में बायोचार को एकीकृत करके, हम अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने और सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा रहे हैं। उन्होंने ब्लास्ट फर्नेस सामूहिक को कार्यस्थल में सभी सुरक्षा मानदंडों का पालन करने के लिए भी प्रेरित किया।

जम्मू-कश्मीर चुनाव से नये दौर की उम्मीद

ललित गर्ग

जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेंगे बल्कि बल्कि राज्य के उद्योग, पर्यटन, रोजगार, व्यापार, रक्षा, शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। वैसे तो हर चुनाव में वर्ग, जाति, सम्प्रदाय का आधार रहता है, पर इस बार वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता व्यापक रूप से उभर कर सामने आयेगी। मतदाता जहां ज्यादा जागरूक दिखाई दे रहा है, वहीं राजनीतिज्ञ भी ज्यादा समझदार एवं चतुर बने हुए दिख रहे हैं।

जम्मू एवं कश्मीर में तीन चरणों में विधानसभा चुनाव कराने की चुनाव आयोग की घोषणा निश्चित ही लोकतंत्र की जड़ों को मजबूती देने के साथ क्षेत्र के लिए विकास के नए दौर के द्वार खोलने का माध्यम बनेगी। जम्मू-कश्मीर की 90 सीटों पर विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसमें 43 जम्मू और 47 कश्मीर की सीटें हैं, इन चुनावों में जम्मू-कश्मीर के लोग सक्रिय रूप से भाग लेकर और बड़ी संख्या में मतदान कर ऐसी सरकार बनाये जो शांति और विकास के नये द्वार उद्घाटित करते हुए युवाओं के लिए उज्वल भविष्य सुनिश्चित करे एवं आतंकमुक्ति का एक नया अध्याय रचे। आज सबकी आंखें एवं कान चुनावी सरगर्मियों एवं भविष्य के गर्भ में ईवीएम से निकलने वाले जनादेश पर लगी हैं। ये चुनाव बहुत महत्वपूर्ण होने के साथ प्रांत में नई उम्मीदों के नये दौर का आगाज है। इस बार के चुनाव अब तक हुए चुनावों से अलग है और खास है।

जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए नामांकन भरने की आज आखिरी तारीख है, लेकिन तमाम बड़ी पार्टियों के बीच असमंजस और अनिश्चितता जैसे खत्म होने का नाम नहीं ले रही। हालांकि कुछ हद तक इस तरह की अनिश्चितता हर चुनाव में होती है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के मामले में हालात सामान्य से ज्यादा जटिल हैं और इस असमंजस के पीछे उसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। विपक्षी खेमे में माने जाने वाले राज्य के तीनों प्रमुख दलों में सहयोग और संघर्ष दोनों का दिलचस्प घालमेल दिख रहा है। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस के बीच सभी 90 सीटों पर गठबंधन की घोषणा कर दी गई है, लेकिन आलम यह है कि पहले चरण की 24 सीटों का भी बंटवारा मुश्किल साबित हो रहा। पीडीपी इस गठबंधन से बाहर है। फिर भी मुद्दों की एकरूपता के चलते न सिर्फ उमर अब्दुल्ला उससे अपनी पार्टी के खिलाफ प्रत्याशी न खड़ा करने को कह रहे हैं बल्कि खुद महबूबा भी कह चुकी हैं कि अगर उनके अजेंडे को स्वीकार किया गया तो गठबंधन का समर्थन करेंगी। भाजपा किसी बड़े दल के साथ गठबंधन में नहीं है, इसलिए वहां इस तरह की गफलत नहीं है, लेकिन निर्णय लेना और उसे लागू करना वहां भी जटिल बना हुआ है। जम्मू-कश्मीर में दस वर्ष बाद होने जा रहे विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा को अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर उसे जिस तरह वापस लेना पड़ा, उससे उसकी छिछालेदार तो हुई ही है, अनुशासित दल की उसकी छवि को धक्का भी लगा। स्थिति यह है कि पार्टी ने सोमवार को 44 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी करने के थोड़ी ही देर बाद व्यापक विरोध के कारण उसे वापस ले लिया। इसके बाद जो सूची जारी की गई, उसमें 15 ही प्रत्याशियों के नाम थे। यह आलम तब है, जब पहली सूची भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में मंजूर की गई थी।

यदि भाजपा औरों से अलग तथा अनुशासित दल की अपनी छवि के प्रति सचेत है तो उसे प्रत्याशी चयन की अपनी प्रक्रिया को लोकतांत्रिक आकार देना ही होगा। पहले जारी सूची का विरोध जिन कारणों से हुआ, उनमें एक तो दूसरे दलों से आए नेताओं को प्रत्याशी बनाना रहा और दूसरे दोनों पूर्व उप मुख्यमंत्रियों का नाम न होना। लगता है भाजपा को अभी भी लोकसभा चुनावों में हुई गलतियों का आभास नहीं है। लोकसभा चुनाव में उसे दूसरे दलों के नेताओं को चुनाव मैदान में उतारने का किस तरह नुकसान उठाना पड़ा था। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों के लिए जारी प्रत्याशियों की सूची का विरोध यह भी बताता है कि भाजपा प्रत्याशी चयन की कोई नीर-क्षीर, पारदर्शी और ऐसी प्रक्रिया का निर्माण नहीं कर सकी है, जिससे असंतोष, विरोध और भितरघात का सामना न करना पड़े। वैसे यह समस्या केवल भाजपा की ही नहीं, सभी दलों की है। कम से कम यह तो होना ही चाहिए कि राजनीतिक दल प्रत्याशियों के चयन में अपने जमीनी कार्यकताओं की राय को महत्व दें। यह कठिन कार्य नहीं, लेकिन हमारे राजनीतिक दल आंतरिक लोकतंत्र विकसित करने से बच रहे हैं।

चुनाव अभियान प्रारम्भ हो रहा है। प्रत्याशियों के नामांकन हो रहे हैं। सब राजनैतिक दल अपने-अपने घोषणा-पत्र को ही गीता का सार व नीम की पत्ती बताकर सब समस्याएं मिटा देने तथा सब रोगों की दवा बन जाने की नैतिकता की बातें करते हुए व्यवहार में अनैतिकता को छिपायेंगे। टुकड़े-टुकड़े बिखरे कुछ दल फेवीकॉल लगाकर एक होंगे। सत्ता तक पहुँचने के लिए कुछ दल परिवर्तन को आकर्षण व आवश्यकता बतायेंगे। इस बार दलों में जितना अन्दर-बाहर होता हुआ दिख रहा है, उससे स्पष्ट है कि चुनाव परिणामों के बाद भी एक बड़ा दौर असमंजस का चलेगा। ऐसी स्थिति में मतदाता अगर बिना विवेक के आंख मूंदकर मत देगा तो परिणाम उस उक्ति को चरितार्थ करेगा कि अगर अंधा अंधे को नेतृत्व देगा तो दोनों खाई में गिरेंगे इसलिये प्रांत के लोगों को मतदान करते हुए विवेक का परिचय देना होगा।

इन चुनावों की जटिलता का अंदाजा इस बात से भी लगता है कि एक दशक पहले यानी 2014 में हुए विधानसभा चुनाव के समय अनुच्छेद 370 के तहत विशेष दर्जे से लैस जम्मू-कश्मीर अब विशेष राज्य के दर्जे से भी वंचित है। उस चुनाव में दो सबसे बड़ी और मिलकर सरकार बनाने वाली पार्टियां पीडीपी और भाजपा एक-दूसरे की धुर विरोधी हो चुकी हैं। राज्य में अब भाजपा प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हिन्दू बहुल सीटों और कश्मीरी पंडितों के वोट बैंक को अपने खाते में डालने के इरादे से मैदान में उतर रही है और ऐसे में कांग्रेस की हालत खराब होना तय माना जा रहा है। भले ही सभी क्षेत्रीय पार्टियों ने भाजपा के साथ गठबंधन करने से इंकार कर दिया है, लेकिन भाजपा की मजबूत स्थिति को देखते हुए भविष्य में क्षेत्रीय दलों के भाजपा के साथ बहती हवा में जाने की संभावनाओं से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर एक राज्य के रूप में शुरू से विशिष्ट रहा है, इस दृष्टि से वहां होने वाले चुनाव भी विशेष एवं अन्य राज्यों से भिन्न है। बड़ी बात यह है कि पार्टियां एक-दूसरे के बारे में चाहे जो भी कहें, ये सभी भारतीय संविधान के तहत लोकतांत्रिक ढंग से चुनाव में हिस्सेदारी कर रही हैं और जनादेश को भी स्वीकार करेंगी। निश्चित ही इन चुनाव परिणामों से उम्मीद जगी है कि वहां से जम्मू-कश्मीर में लोकतांत्रिक विकास और शांति-समृद्धि-स्थिरता का नया दौर शुरू होगा। ऐसा होना ही इन चुनावों की सार्थकता है।

जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेंगे बल्कि बल्कि राज्य के उद्योग, पर्यटन, रोजगार, व्यापार, रक्षा, शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। वैसे तो हर चुनाव में वर्ग, जाति, सम्प्रदाय का आधार रहता है, पर इस बार वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता व्यापक रूप से उभर कर सामने आयेगी। मतदाता जहां ज्यादा जागरूक दिखाई दे रहा है, वहीं राजनीतिज्ञ भी ज्यादा समझदार एवं चतुर बने हुए दिख रहे हैं। उन्होंने जिस प्रकार चुनावी शतरंज पर काले-सफेद मोहरें रखे हैं, उससे मतदाता भी उलझा हुआ है। अपने हित की पात्रता नहीं मिल रही है। कौन ले जाएगा राज्य की एक करोड लाख पच्चीस लाख जनता को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विकास एवं शांति की दिशा में। सभी नंगे खड़े हैं, मतदाता किसको कपड़े पहनाएगा, यह एक दिन के राजा पर निर्भर करता है। चुनाव घोषित हो जाने से तथा प्रक्रिया प्रारंभ हो जाने से जो क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं हो रही हैं उसने ही सबके दिमागों में सोच की एक तेजी ला दी है। प्रत्याशियों के चयन व मतदाताओं को रिझाने के कार्य में तेजी आती जायेगी। परम आवश्यक है कि सर्वप्रथम राज्य का वातावरण चुनावों के अनुकूल बने। राज्य ने साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा अस्थिरता के जंगल में एक लम्बा सफर तय किया है। उसकी मानसिकता घायल है तथा जिस विश्वास के धरातल पर उसकी सोच ठहरी हुई थी, वह भी हिली है। पुराने चेहरों पर उसका विश्वास नहीं रहा। अब प्रत्याशियों का चयन कुछ उसूलों के आधार पर होना चाहिए न कि जाति और जीतने की निश्चितता के आधार पर। मतदाता की मानसिकता में जो बदलाव अनुभव किया जा रहा है उसमें सूझबूझ की परिपक्वता दिखाई दे रही है। ये चुनाव ऐसे मौके पर हो रहे हैं जब राज्य लम्बे दौर की विभिन्न चुनौतियों से जूझने के बाद शांति एवं विकास की राह पर अग्रसर है।

संपादकीय

योगी की नसीहत

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समृद्धिकी पराकाष्ठा पर पहुंचने के लिए लोगों से एकजुट रहने की अपील करते हुए कहा है कि बांग्लादेश में हुई गलतियां भारत में नहीं होनी चाहिए। आगरा में दुर्गादास राठौर की प्रतिमा के अनावरण के सिलसिले में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता, राष्ट्र तभी मजबूत होगा 'जब हम सब एकजुट रहेंगे।' दुर्गादास राठौर एक राजपूत सरदार थे, जिन्हें सत्रहवीं शताब्दी में मारवाड़. पर मुगलों के कब्जे की कोशिशों के खिलाफ प्रतिरोध का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। योगी आदित्यनाथ ने आगाह करते हुए कहा, 'बंटेंगे तो कटेंगे।' 'एक रहेंगे, नेक रहेंगे, सुरक्षित रहेंगे।' पिछले दिनों बांग्लादेश में सरकार के खिलाफ इस कदर हिंसक प्रदर्शन हुए कि लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित शेख हसीना की सरकार को उखाड़.फेंका गया। शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा और अपना देश भी छोड़ना पड़. गया। हालांकि इसके बाद भी पड़ोसी देश में हिंसा की घटनाएं जारी रहीं जिनमें हिन्दू अल्पसंख्यक समुदाय पर लक्षित हमले किए गए। इस घटनाक्रम के बाद भारत में भी कुछविपक्षी नेताओं ने इस तरह के बयान दिए कि भारत में भी ऐसा कुछघट सकता है। सरकार को सचेत रहना चाहिए। दरअसल, भू-राजनीतिक परिस्थितियां इतनी तेजी से बदल रही हैं कि तमाम देशों के परस्पर समीकरण बिगड़.रहे हैं। इसके चलते देशों के बीच तनाव चरम पर हैं, और तनावों व टकरावों के चलते विश्व के एक हिस्से में दो देश रूस-यूक्रेन युद्धरत हैं, तो इस्राइल और फिलिस्तीन में भी युद्ध चल रहा है। दोनों क्षेत्रों में हालात इस कदर खराब हैं कि जब-तब विश्व युद्ध का अंदेशा होने लगता है। हालात में यह खराबी किसी एक या दो देश तक सीमित रहने जैसा घटनाक्रम नहीं होता। वैश्विक आर्थिक हालात पर भी असर डालता है। देशों के बीच खेमेबाजी बढ़ता है। बड़ी ताकतें देशों के बीच टकराव पैदा करके स्वार्थ साधने की ताक में रहती है। भारत के लिए तो और भी ज्यादा सजग रहने की जरूरत है क्योंकि भारत के सभी पड़ोसी देशों की स्थितियां शांतिपूर्ण नहीं रह गई हैं। ले-दे के बांग्लादेश ही बचा था जहां की सरकार के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण थे और लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकार थी। लेकिन युवाओं को गुमराह करके जनता की एकजुटता को तार-तार कर दिया गया। एकजुटता से ही ऐसे मंसूबों पर पानी फेरा जा सकता है।

चिंतन-मनन

साधना और सुविधा

आसक्ति के पथ पर आगे बढ़ने वाले अपनी आकांक्षाओं को विस्तार देते हैं। उनकी इच्छाओं का इतना विस्तार हो जाता है, जहां से लौटना संभव नहीं है। उस विस्तार में व्यक्ति का अस्तित्व विलीन हो जाता है। फिर वह अपने लिए नहीं जीता। उसके जीवन का आधार पदार्थ बन जाता है। पदार्थ जब मनुष्य पर हावी हो जाए तो समस्या क्यों नहीं होगी? आसक्ति अपने आप में समस्या है। इस समस्या का समाधान पदार्थ के विस्तार में नहीं, संयम में है। संयम के पथ पर वही चल सकता है, जो पदार्थ से विरक्त होने लगता है। जिन लोगों को विरक्ति का पथ प्राप्त है, जो जीवनभर इस पथ पर चलने के लिए कृतसंकल्प हैं, उनके सामने किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं होना चाहिए। पदार्थ जीवन की आवश्यकता की पूर्ति का साधन है, यह भाव जब तक प्रबल रहता है, उसके प्रति आसक्ति पैदा नहीं होती। किंतु जब पदार्थ साध्य बन जाता है, तब व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल जाता है। बदला हुआ दृष्टिकोण व्यक्ति को स्वच्छंद बनाता है, सुविधावादी बनाता है और उसे संग्रह की प्रेरणा देता है। स्वच्छंदता, सुविधावाद और संग्रहवृत्ति- ये तीन सकार साधना के विघ्न हैं। साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए इनका सीमाकरण करना ही होगा। वैचारिक स्वतंत्रता का जहां तक प्रश्न है, साधना के साथ उसका कोई विरोध नहीं है। पर विचार की स्वतंत्रता की यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति अपनी सीमा, संविधान और परंपरा से विमुख होकर उच्छृंखल बन जाए। उच्छृंखलता या स्वच्छंदता जहां प्रवेश पा लेती है, वहां से अनुशासन, व्यवस्था आदि तत्वों का पलायन हो जाता है। यह स्थिति व्यक्ति और समूह दोनों के लिए हितकर नहीं है। सुविधा के साथ भी साधना का विरोध नहीं है। साधना के नियम जिस सीमा तक स्वीकृति देते हैं, उस सीमा में सहज रूप से कोई सुविधा प्राप्त होती हो तो उसका उपयोग सम्मत है। जैन साधना पद्धति में शरीर को साधने का विधान तो है, पर उसे कष्ट देना कभी अभीष्ट नहीं है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से बढ़ेगी भारत में बेरोजगारी

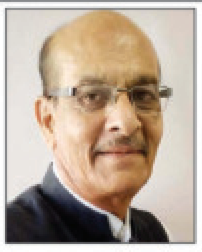

सनत जैन

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई का प्रयोग बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। विभिन्न उद्योग, मार्केटिंग, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सुरक्षा के क्षेत्र में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन भविष्य में आने वाले हैं। लगभग 10 फीसदी इसका प्रभाव वर्तमान में देखने को मिल रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोग की पहचान, दवाइयां और इलाज के संबंध में विस्तृत जानकारी, मरीज की देखरेख एआई के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाएं जल्द शुरू होगी। एआई के माध्यम से टेली मेडिसिन, रिमोट सर्जरी के भी नए आयाम शुरू होंगे। इसमें डॉक्टर नर्स एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मी हैं उसमें तकनीकि के माध्यम से बेहतर सेवाएं दे सकेंगे। अभी जो कमी बनी हुई है, उसे आसानी से पूरा किया जा सकेगा। कृषि के क्षेत्र में भी बहुत बड़े परिवर्तन आने जा रहे हैं। एआई तकनीकी के माध्यम से फसल की उपज, मौसम की भविष्यवाणी, फसलों में लगने वाले कीट और उनका उपचार फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। कृषि विज्ञान के छात्रों को पढ़ाई में इससे मदद मिलेगी। डेटा उपलब्धता और विविधता के कारण चैट वाटस और वर्चुअल असिस्टेंट में ग्राहकों की सेवाओं को बेहतर बनाया जा सकेगा। रक्षा के क्षेत्र में भी इसका बड़े पैमाने पर उपयोग होना शुरू हो गया है। इस तकनीकी के उपयोग से नैतिक और कानूनी चुनौतियां भी बढ़ेंगी। जिन पर विशेष सतर्कता की जरूरत होगी। एआई तकनीकी के माध्यम से मानव हस्तक्षेप कम होगा। स्वचालित प्रणाली का विकास होगा। ड्रोन और मानव रहित वहां एआई तकनीकी के माध्यम से सैकड़ों संचालित होंगी। एआई तकनीकी का साइबर सुरक्षा में बड़े पैमाने पर उपयोग होगा। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में इस तकनीकी के कारण कई चुनौतियों का सामना करने के लिए भी इस तकनीकी को जानना जरूरी होगा। एआई तकनीकी के माध्यम से सिस्टम स्वयं निर्णय लेता है। जिसके कारण मानव उपयोग कम होगा। रोबोट के माध्यम से विभिन्न सेवाओं के संचालित होने से बेरोजगारी जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। इसका असर लॉजिस्टिक और सप्लाई के क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर होगा। शिक्षा के क्षेत्र में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग होगा। छात्र-छात्राओं को मनवांछित जानकारी विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होगी। परिवहन के क्षेत्र में भी इसी तकनीकी का उपयोग बड़े पैमाने पर होगा। सरकारी नीतियों, प्रशासन और व्यापारिक संगठनों द्वारा भी इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएगा। कुल मिलाकर एआई तकनीकी भविष्य की सबसे बड़ी जरूरत होगी। रोजगार के क्षेत्र में अब एआई तकनीकी के जानकारों का बोलवाला होगा। पांच दशक पहले जैसे टाइपिंग का ज्ञान होना आवश्यक था। तीन दशक पहले कंप्यूटर का ज्ञान बहुत आवश्यक होता था। अब कंप्यूटर के साथ-साथ एआई तकनीकी को जानना बहुत जरूरी होगा। इसी से रोजगार के अवसर मिलेंगे। एआई की जो नई क्रांति आई है। उसको नजर अंदाज करना अब संभव नहीं होगा। सुव्यवस्थित रूप से इसका इसका उपयोग करने पर भविष्य में बेहतर परिणाम नौकरी, व्यापार, सेवा, उत्पादन इत्यादि के क्षेत्र में होगा। इसके बिना प्रगति संभव नहीं होगी। परिवार, समाज, संगठन और सरकारों को भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए इस बदलाव पर काम करना होगा। एआई तकनीकी के माध्यम से सारी दुनिया के विविधता की जानकारी विभिन्न भाषाओं में कहीं पर प्राप्त की जा सकती है। जिस रूप में और जैसा आप चाहते है, एआई तकनीकी के माध्यम से वह तुरन्त उपलब्ध होती है। जिसके कारण एआई तकनीकी पर दिनों-दिन डिपेंडेंसी बढ़ती चली जाएगी। जिस तरीके से इसके परिणाम वर्तमान में देखने को मिल रहे हैं। उसके बाद ऐसा लग रहा है, भारत जैसे देश में मिडिल की पढ़ाई के साथ में एआई तकनीकी का कोर्स कराने की जरूरत होगी। भविष्य में जिस तरह की प्रतिस्पर्धा दुनिया के देशों में देखने को मिल रही है। विविधता के साथ विभिन्न विषयों का ज्ञान एक स्थान पर एकत्रित हो चुका है। उसका किस तरह से उपयोग किया जाए, यह बाजारवाद के सिद्धांत पर आधारित होगी। अर्थात मांग और आपूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस तकनीकी के माध्यम से सभी कार्य बेहतर ढंग से बहुत कम समय में कराए जा सकेंगे। इसके लिए दक्ष मानव उपयोग जरूरी होगा। रोबोट एवं अन्य मशीनीकृत व्यवस्था एआई तकनीकी के माध्यम से अधिकांश काम होंगे। जिसके कारण दुनिया के देशों में बेरोजगारी बढ़ने का भी बड़ा खतरा पैदा हो गया है। तकनीकि एवं संचार माध्यमों में जो परिवर्तन आ रहे हैं। उससे सभी को सजग होने की जरूरत है।

डिजिटलाइजेशनः आसान होती विकसित भारत की राह

रीतेश ओमप्रकाश जोशी

इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' रिपोर्ट, जिसे सरकार ने अंतरिम बजट पेश करने से पहले जारी किया था, में अर्थव्यवस्था के 2027 तक 5 ट्रिलियन डॉलर और 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर और 2047 तक भारत के विकसित देश बनने की बात कही गई है। सवाल का उठना लाजिम है कि क्या सचमुच यह मुमकिन है, क्योंकि अभी भी भारत विकासशील देश है, और कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें देश में समावेशी विकास सुनिश्चित करना, गरीबी का खात्मा, आधारभूत संरचना को और मजबूत बनाना, शिक्षा के स्तर में इजाफा, प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी, सभी लोगों को आत्मनिर्भर बनाना आदि शामिल हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025 में नॉमिनल जीडीपी के 7 प्रतिशत रहने की संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही। रिपोर्ट में यह भी संभावना जताई गई है कि भारत की जीडीपी 2030 तक 7 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है। एस एंड पी ग्लोबल ने अपनी ग्लोबल क्रेडिट आउटलुक 2024 रिपोर्ट-'न्यू रिस्क, न्यू प्लेबुक'-में कहा है कि भारत की नॉमिनल जीडीपी 2022 में 3.5 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी। 'द इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' की रिपोर्ट और एस एंड पी ग्लोबल की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था 2030 तक 7 प्रतिशत से अधिक की दर से आगे बढ़ सकती है। ऐसा होता है तो 2030 में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 7 ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक का हो जाएगा। पुनश्चः 'द इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' रिपोर्ट के अनुसार भी वित्त वर्ष 2024-25 में लगातार चौथे साल भारत की जीडीपी की वृद्धि दर 7 प्रतिशत से अधिक रह सकती है, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में यह 8.2 प्रतिशत रही।

उल्लेखनीय है कि दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर 3 प्रतिशत के आसपास है। हमारे देश ने आजादी के सौवें वर्ष यानी 2047 में विकसित देश बनने का सपना देखा है। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी, औद्योगीकरण, कृषि यंत्रीकरण, यातायात व सुचारु संचार-व्यवस्था, अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सुविधाओं को बेहतर बनाने की कोशिश की जा रही है। आज आर्थिक विकास के साथ-साथ मानव विकास संबंधी सरोकारों को भी प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि विकसित देश बनने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल की आपूर्ति, आत्मनिर्भरता आदि मानकों पर भी हमें खरा उतरना होगा।

बीते महीने दुनिया की नजर फिर भारत की ओर उठी, जब जर्मनी के डिजिटल एवं परिवहन मंत्री वोल्कर विस्सिंग ने भारत में एक सब्जी विक्रेता को यूपीआई से भुगतान किया था। भारत डिजिटल भुगतान की दिशा में दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। अन्य देशों में यूपीआई जैसी कोई भुगतान व्यवस्था नहीं है। अमेरिका में फेडनाऊ नाम से भुगतान सुविधा है, लेकिन इसकी प्रणाली अलग है। भारत सरकार ने नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) द्वारा 2016 में विकसित यूपीआई की तकनीक खंस, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, यूएई, सऊदी अरब, ओमान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि देशों को उपलब्ध कराई है। वैसे तमाम तरह की चुनौतियों के बीच यह कोई अकेला चमकदार पहलू नहीं है।

देश में जनधन खातों की कुल संख्या 52 करोड़ का आंकड़ा पार कर गई है। इनमें 56 प्रतिशत खाते महिलाओं के हैं, और 67 प्रतिशत ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में खोले गए हैं। आंकड़ा दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन की राह पर हम तेजी से बढ़ रहे हैं। ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में बचत करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, लेकिन साथ में वे थोड़ा खर्च भी करने लगे हैं क्योंकि अब अमेजन, फ्लिप्कार्ट, अजिओ, मिन्त्रा आदि गांवों में भी डिलीवरी कर रहे हैं। सरकार ने 2014 में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए जनधन बैंक खाते खोलने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया था, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) सहित कई वित्तीय सेवाओं को गरीबों के लिए सुलभ बनाना था।

2026 तक देश की जीडीपी में डिजिटल अर्थव्यवस्था का योगदान 20 प्रतिशत से अधिक होने का अनुमान है। यह 2014 में 4.00-4.5 प्रतिशत था, जो आज बढ़कर 11 प्रतिशत हो गया है। भारत ने तकनीक को न केवल नवाचार के लिए, बल्कि विविध क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत करने के लिए भी अपनाया है, जिससे पिछले कुछ सालों में लोगों के जीवन, परिचालन व्यवस्था, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, लोकतंत्र के तकनीकी स्वरूप आदि में बदलाव आया है। भारत में जीवन प्रत्याशा, शिक्षा में सुधार, पेयजल की आपूर्ति आदि के संदर्भ में तेजी से कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पीएम स्वनिधि, सेल्फ हेल्प ग्रुप आदि की मदद से देश में समावेशी विकास को बल मिल रहा है। डिजिटलाइजेशन ने अर्थव्यवस्था और कल्याणकारी योजनाओं को मजबूत करने का काम किया है। आर्थिक, सामाजिक, मानवीय और डिजिटलाइजेशन के मोर्चे पर देश के उम्दा प्रदर्शन को देखते हुए कहा जा सकता है कि भारत 2047 में विकसित देश बन सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में दूषित पानी से बीमार पड़ रहे लोग, प्रदूषण पर ध्यान दे प्रशासन : गंगवार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : ग्रामीण क्षेत्रों में दूषित पानी लोगों को बीमार कर रहा है। केंद्र सरकार लोगों को बचाने के लिए हर घर नल से जल योजना चला रही है। आम नागरिक सजग हों और केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ उठाएं। यह बातें बुधवार को रामगढ़ जिले के कुजू पूर्वी पंचायत में जन संवाद सह परिसंपत्ति वितरण कार्यक्रम में राज्यपाल संतोष गंगवार ने कही। पंचायत भवन में आयोजित कार्यक्रम के दौरान राज्यपाल सीधे आम लोगों से जुड़े। उन्होंने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, मुफ्त अनाज योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना जैसे मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने लोगों से यह जानने का प्रयास किया कि योजना के बारे में कितने लोगों को जानकारी है। कितने लोग इसका लाभ उठा रहे हैं और किस गांव में योग्य लाभुकों को योजना से वंचित रखा गया है। इस दौरान उन्होंने आम नागरिकों से सीधा सुझाव मांगा और लिखित शिकायत की भी बात रखी। लोगों के सुझाव के आधार पर समस्या का मिलकर समाधान करने का आश्वासन भी उन्होंने दिया। राज्यपाल संतोष गंगवार ने कोरोना काल के दिनों को भी याद किया। उन्होंने कहा कि सरकार की सजगता और जनता के सहयोग की वजह से दूसरे देशों के मुकाबले भारत को नुकसान काफी कम हुआ। सरकार ने उस दौरान 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया।

प्रदूषण काम करने के लिए जिला प्रशासन करें पहल

संवाद के दौरान आम नागरिकों ने प्रदूषण की समस्या को रखा। इस मुद्दे पर राज्यपाल संतोष गंगवार ने जिला प्रशासन को पहल करने का निर्देश दिया। इस दौरान रामगढ़ डीसी चंदन कुमार ने राज्यपाल को बताया कि रामगढ़ जिले में काफी सारे इंडस्ट्रीज हैं। साथ ही यहां का अधिकांश भूभाग माइनिंग क्षेत्र से प्रभावित है। जिस वजह से यहां प्रदूषण रहता है। लेकिन प्रदूषण को कम करने के लिए इंडस्ट्रीज के मालिकों को दिशा निर्देश दिए गए हैं। साथ ही सीसीएल और अन्य निजी कंपनियों के पदाधिकारियों से भी वृक्ष लगाने, प्रदूषण स्थल पर पानी का छिड़काव करने और अन्य जरूरी कार्य करने का निर्देश दिया गया है।

राज्यपाल ने किया परिसंपत्तियों का वितरण

राज्यपाल संतोष गंगवार का स्वागत डीसी चंदन कुमार और एसपी अजय कुमार ने किया। कार्यक्रम स्थल पर गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद राज्यपाल ने अबुआ आवास योजना, मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना, सीआईएफ जेएसएलपीएस के तहत स्वयं सहायता समूह को आर्थिक सहायता दी गई। इसके अलावा मुख्यमंत्री साइकिल योजना , कुकुट पालन योजना के तहत भी परिसंपत्ति का वितरण किया गया। राज्यपाल ने इस दौरान पंचायत भवन में पौधारोपण किया। मौके पर डीडीसी रॉबिन टोप्पो, उप समाहर्ता गीतांजलि प्रसाद, एनडीसी रविंद्र कुमार गुप्ता, डीएसओ रंजीता टोप्पो, पंचायती राज पदाधिकारी निशा कुमारी सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

वज्रपात की चपेट में आने से 9 वर्षीय बच्ची की मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : चैनपुर थाना अंतर्गत सदान बुकमा गांव में वज्रपात की चपेट में आने से बुधवार लगभग 3:30 बजे स्वर्गीय पंकज नगेशिया के 9 वर्षीय पुत्र मोहित नगेशिया की मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार मोहित नगेसिया स्कूल छुट्टी होने के बाद अपने घर लौटा था इसी दरमियान मौसम खराब हो गई और लगभग 3 बजे घर पर हुई बज्रपात की चपेट में आने से मोहित नगेशिया गंभीत रूप घायल हो गया। वही पास ही अन्य बच्चे भी थे उन्हें आंशिक चोट आई है। वही उसकी मां ममता नगेशिया परिजनों के साथ खेत में काम करने गई थी। बज्रपात की घटना के बाद मां जब घर लौटी तो बेटा मोहित को गिरा हुआ देखी बच्चों से पूछने पर पता चला की वह बज्रपात की चपेट में आकर घायल हो गया है। जिसके बाद इसकी सूचना आज पड़ोस के लोगों को दी गई। ग्रामीण मोहित को ले जाकर देहाती इलाज के तहत गोबर में तोप दिए। और 108 एंबुलेंस को अस्पताल ले जाने के लिए सूचना भी कर दिए। इस दौरान घर में परिजन नहीं थे परिजन जब घर पहुंचे तब तक एंबुलेंस नहीं पहुंची परिजनों ने एक ऑटो बुक कर मोहित नगेसिया को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चैनपुर लाकर भर्ती कराया। जहां को ने जांच के उपरांत मोहित को मृत घोषित कर दिया को लेकर गांव लौट गए। वहीं घटना की सूचना मिलते ही चैनपुर पुलिस गांव की ओर रवाना हो गई।

प्रेमी की हत्या में दो प्रेमिका को आजीवन कारावास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

दुमका : तृतीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेश कुमार सिन्हा की अदालत ने बुधवार को प्रेमी अगस्टिन टुडू (18) की हत्या करने वाली दो प्रेमिका को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास की सजा व जुमार्ना किया है। घटना जामा थाना क्षेत्र की सात जुलाई 22 की है। दोषी थाना क्षेत्र के ऊपरबहाल की अनीता सोरेन एवं महादेव रायडीह की शिवानी किस्कू को दोषी करार देते हुए आजीवन कारावास व दस हजार रुपया जुमार्ना की सजा सुनाई। वहीं सहयोगी जीतलाल मरांडी को संदेह का लाभ देते हुए न्यायालय ने बरी कर दिया। सरकार की ओर से एपीपी खुशबूददीन अली ने बहस की। मामले में 14 गवाह का बयान सुनने व साक्ष्य के आधार पर अदालत ने दोनों को दोषी पाया गया। मामला जामा थाना क्षेत्र के

उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय महादेव रायडीह गांव की शिक्षिका मिनौती मरांडी ने सात जुलाई 22 को जामा थाना में अनीता सोरेन, शिवानी किस्कू व जीतलाल मरांडी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कराया था। बताया कि सात जुलाई की दोपहर बेटा थोड़ी देर में आने की बात कहकर घर से निकला। देर शाम तक वापस नहीं आया तो खोजबीन की। इसी क्रम में गांव के कुछ लोगों से पता चला कि उसका बेटा तीनों के साथ चूटोनाथ पहाड़ी की ओर जाते हुए देखा है। शिक्षिका तीनों के घर गई, लेकिन किसी ने कुछ नहीं बताया। देर शाम को पुलिस ने तीनों के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर अनुसंधान शुरू किया। दो सप्ताह बाद शिवानी किस्कू की गिरफ्तारी हुई। उसकी निशानदेही पर बचे हुए दोनों आरोपित को हिरासत में लिया गया। तीनों की निशानदेही पर पहाड़ से युवक का सड़ा गला शव बरामद हुआ। पूछताछ में शिवानी ने बताया कि उसने अगस्टिन से शादी करने के लिए अपना सब कुछ सौंप दिया।

अवैध खनन पर हुई कार्रवाई, दो हाइवा जब्त

रामगढ़ : जिले में अवैध खनन, खनिजों के परिवहन पर पूरी तरह से रोक लगाने एवं दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने के उद्देश्य से उपायुक्त चंदन कुमार द्वारा अधिकारियों को योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने का निर्देश दिया गया है। इसी क्रम में उपायुक्त के निदेर्शानुसार पतरातू अंचल अंतर्गत बालू खनिज के अवैध परिवहन व खनन की मिल रही शिकायत के विरुद्ध जिला खनन पदाधिकारी निशांत अभिषेक के नेतृत्व में सघन छापामारी अभियान चलाया गया। बुधवार को डीएमओ ने बताया कि छापेमारी के दौरान भुरकुंडा मतकमा चौक के समीप हाईवा वाहन संख्या जेएच 19 सी 9377 पर लगभग 800 घन फिट अवैध बालू लदा पाया गया।

लोहरदगा मुखिया संघ अनिश्चितकालीन हड़ताल पर, उपायुक्त को सौंपा मांग पत्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

लोहरदगा : झारखंड प्रदेश मुखिया संघ के निदेर्शानुसार लोहरदगा जिला मुखिया संघ द्वारा जिलाध्यक्ष बासुदेव उरांव की अगुवाई में उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण व सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपकर अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गए। कहा कि आपातकाल को छोड़कर योजना संबंधी कार्य नहीं होंगे और जब तक मांगे पूरी नहीं होती तब तक अनिश्चितकालीन हड़ताल जारी रहेगा। बासुदेव उरांव ने कहा कि झारखंड प्रदेश मुखिया संघ की ओर से राज्य वित्त आयोग की राशि पंचायत को देने सहित विभिन्न मांगों को लेकर सरकार को 24 जुलाई व 29 जुलाई को मांग पत्र सौंपा गया था। साथ ही मुख्यमंत्री से मुलाकान व वार्ता के लिए 20 अगस्त का समय मांगा गया था। लेकिन कोई सुनवाई और सकारात्मक पहल नहीं होने के कारण सभी मुखिया आक्रोशित हैं। विवश होकर सभी मुखिया अनिश्चितकालीन धरना पर जा रहे हैं। जिसकी जवाबदेही राज्य सरकार की होगी। इसकी प्रतिलिपि अनुमण्डल पदाधिकारी को भी सौंपी गई है। इन लोगों ने सौंपा मांग पत्र उनकी 5 सूत्री मांग इस प्रकार हैं पंयायती राज वित आयोग की राशि शीघ्र पंचायत को देने, जिससे पंचायत का सर्वांगीन विकास हो सके। कार्य अवधि के दौरान किसी भी जन-प्रतिनिधि मुखिया, पंचायत समिति सदस्य, वार्ड सदस्य, प्रमुख एवं जिला परिषद की आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होने पर उचित 30 लाख की मुआवजा की व्यवस्था की जाए, जिससे उनके परिवार का भरण-पोषण हो सके। मुखियागणों का मानदेय केरल राज्य के तर्ज पर 30,000 तीस हजार रूपया निर्धारित किया जाए।

रेलवे के महाप्रबंधक ने रेलवे स्टेशन का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मुरी : मुरी दक्षिण पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक बुधवार के दिन निरीक्षण के लिए अपने विशेष सैलून से मुरी स्टेशन पहुंचे। उनके पहुंचते हैं मंडल के अधिकारियों द्वारा गुलदस्ता देकर स्वागत किया गया। तत्पश्चात उन्होंने रेलवे रनिंग रूम, क्रु लोवी, ईएसआई बिल्डिंग मे तकनीकी मशीनों का गहन निरीक्षण किया एवं साथ ही साथ स्टेशन में चल रहे अमृत भारत स्कीम के तहत हो रहे कार्यों का भी निरीक्षण किया। रनिंग रूम के व्यवस्था को देखकर उन्होंने 25000 का पुरस्कार भी दिया। स्टेशन की साफ सफाई एवं व्यवस्था को देखकर उन्होंने 50000 उपहार के रूप में दिया। सीपीएम को काम करने का उचित दिशा निर्देश भी दिए। निरीक्षण के दौरान मंडल रेल प्रबंधक जसविंदर सिंह बिंद्रा भी मौजूद रहे। विभिन्न कार्यालयों एवं स्टेशन की साफ सफाई को देखकर काफी संतुष्ट हुए। मौके पर मंडल स्तर के शाखा पदाधिकारी एवं मुरी स्टेशन प्रबंधक राकेश कुमार, सीसीआई एस रक्षित, हटिया सीसीआई धीरेंद्र कुमार समेत विभिन्न विभागों के इंचार्ज मौके पर मौजूद रहे।

आंगनबाड़ी केंद्रों में सीबीई योजना अंतर्गत अन्नप्राशन, गोदभराई, पौधरोपण का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : चैनपुर प्रखंड अंतर्गत सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में सीबीई योजना के तहत अन्नप्राशन ,गोद भराई वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया। वही महिला पर्यवेक्षिका कावेरी गुप्ता, अंजली वर्मा ने बतलाया कि गोद भराई संस्कार जहां गर्भवती माताओं को सौभाग्यवती बनाता है। वहीं अन्नप्राशन संस्कार शिशुओं को मानसिक व शारीरिक रूप से विकसित करने के लिए किया जाता है। माना जाता है कि संस्कार का प्रभाव व्यक्ति के चरित्र पर पड़ता है। मानव जीवन 16 संस्कारों के तहत ही संपन्न होता है। संस्कारों को बढ़ावा देने व आम लोगों को आंगनबाड़ी केंद्रों से जोड़ने के लिए महिला व बाल विकास मंत्रालय ने इसकी पहल की थी।

गोद भराई और अन्नप्राशन कुपोषण से सुपोषण की ओर ले जाने की एक सार्थक पहल है- कावेरी गुप्ता

महिला पर्यवेक्षिका कावेरी गुप्ता ने बतलाया की विभाग के इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज में यह संदेश दिया जाता है कि गर्भवती माता के गर्भ में पल रहा बच्चा देश का भविष्य है। और इनको पोषण और प्रोटीन युक्त आहार देंगे तो यह स्वस्थ रहेंगे। वहीं अन्नप्राशन को लेकर बताया कि स्तनपान नवजात शिशु के लिए संजीवनी के समान है। और 6 माह की उम्र पार करने के बाद दूध से बने खीर से उनका अन्नप्राशन करने का उद्देश्य होता है कि अब बच्चे को मां के दूध के साथ ही अब उसे थोड़ा-थोड़ा अन्न भी दिया जा सकता है। उन्होंने बताया की सरकार की इस योजना के तहत आंगनबाड़ी केंद्र पर चार से सात माह की गर्भवती महिलाओ की गोद भराई के लिए सभी तरह के पारंपरिक रीति-रिवाज पूरे किए जाते हैं,ताकि महिला को घर जैसा वातावरण के साथ साथ पोषण आहार नियमित रूप से पौष्टिकता युक्त खाद्यान्न मिले। गोद भराई कार्यक्रम से पूर्व आंगनबाड़ी केंद्र को गुलाल से रंगोलियां बनाकर सजाया जाता है। बकायदा गर्भवती महिलाओं को माला पहना व मंगलगीत के बीच मुंह मीठा कर उन्हें गोद भराई से जुड़ी अन्य सामग्री मुहैया कराई जाती है। साथ ही सुरक्षित प्रसव व शिशु के आहार चार्ट की जानकारी देकर जागरूक किया जाता है। केंद्र पर बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश भी दिया जा रहा है। साथ ही आसपास के गली मोहल्ले की महिलाओं को बुलाकर स्वागत व मंगल गीत गाए जाते हैं। इसके अलावा आंगनबाड़ी केंद्रों के महत्व के बारे में बताया जाता है, ताकि केंद्र के प्रति लोगों का रुझान बढ़े।

NETARHAT RESIDENTIAL SCHOOL NETARHAT
P.O- NETARHAT, DISTRICT- LATEHAR
(An Autonomous Institute under School Education & Literacy Department, Govt. of Jharkhand)

Tender Inviting Notice
Enquiry No- 1922 Dated- 27.08.2024

Sealed tenders are invited for Netarhat Residential School, Netarhat from reputed parties/firms / Company/contractors having relevant experience in Civil Works, for renovation of Vidyalaya Vidyalaya old Guest House at Netarhat Residential School.

1.	Name of the Tender	Renovation of Vidyalaya Old Guest House at Netarhat Residential School, Netarhat.
2.	Scope of Work	Renovation of Vidyalaya Old Guest House at Netarhat Residential School, Netarhat.
3.	Technically Sanctioned By	Executive Engineer, Building Division, Latehar
4.	Technical Sanctioned Date	07.08.2024
5.	Name and Address of the Office Inviting Tender	Principal, Netarhat Residential School, Netarhat, P.O- Netarhat, Dist- Latehar.
6.	Date of Publication of Tender on Website	27.08.2024 at 03.00 P. M.
7.	Last Date and Time for submission of Bids	09.09.2024 at 11.30 A. M
8.	Date of Opening of the Tender	09.09.2024 at 01.25 P.M.

Complete details can be seen on our school's website www.netarhatvidyalaya.com
Sd/-
Principal
Netarhat Residential School Netarhat
PR 333855 (Human Resource Developement)24-25*D

OFFICE OF THE DEPUTY COMMISSIONER, LATEHAR
District Planning Office Latehar, 829206
Website: www.latehar.nic.in

Request for Proposal (RFP) for Procurement of 3-Wheeler Scooty

Notice inviting RFP for Selection of Agency for "Supply of Battery-Operated 3-WheelerElectric Scooty in the identified location in Latehar district" under the Office of District Planning Office, Latehar Govt. of Jharkhand.

Fact Sheet:

S.no	Particular	Details
1	Name of the work	"The Supply of Battery-Operated 3-Wheeler Electric Scooty on Turnkey Basis across Latehar District"
2	Date of Issue of RFP	27-08-2024
3	Last Date for submission of Proposal	04-09-2024 (Till-2:00 PM)
4	Date of opening of Technical Proposal	04-09-2024(At- 3:00 PM) (Sample demonstration will be done physically on same day)
5	Date of opening of Financial Proposal	04-09-2024(At- 4:00 PM)
6	Time allowed for Completion	01 Months
7	Earnest money deposit EMD) (Refundable) & Bid Processing Fee (Non-refundable)	EMD – Rs.50,000 (Fifty thousand Rupees Only/-) Refundable & Tender Fees Rs 2000 (Two Thousand Rupees Only/-) (Non-Refundable) Both DD will be in favour of District Planning Office, Latehar Payable at Latehar. EMD and tender Fee submission is exempted for MSME of Jharkhand.MSME registration certificate with DIC approval certificate in same manufacturing trade is must require for bidder. If bidder is not a MSME in same trade will not get the Exemption benefit.
8	Address at which the tenders (Hard Copies) are to be submitted:	District Planning Office, Latehar, Jharkhand
9	Place of opening tenders:	District Planning Office, Latehar, Jharkhand
10	Mode of submission	Speed post/ Registered Post/ By Hand only to the address as specified above during office hours only. Submission of the bid through any other mode or late submission of bids will be rejected.
11	Method of Selection	•After qualifying in technical bid financial bid will be open and L-1 will be awarded. •L-1 Rates or the rates approved by Tender Committee/District Administration will be considered as the final rate of the project. •Tender Committee retains right to negotiate rates with L-1 Bidder.
12	Date of opening of Technical Bid (Envelope-1)	The technical bid for the tender shall be opened on 04th September 2024 at 04:00 PM at the address as under: The District Planning Office, District Collectorate Office Distt: Latehar, Jharkhand-829206
13	Date of opening of Commercial Bid (Envelope-2)	The date for opening second envelope containing financial Bid will be intimated to the qualified bidders separately.

Complete Bid Document, terms & conditions are available on official website of the district: - https://latehar.nic.in/
District Planning Officer,
PR 333871 Planning and Development (24-25)_D Latehar

कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, कोडरमा।
अति अल्पकालीन ई–पुर्ननिविदा आमंत्रण सूचना

ई–निविदा संख्या:- 03(RI)/2024-25/RWD/EE/KODERMA दिनांक :-28.08.2024

कार्यपालक अभियन्ता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, कोडरमा द्वारा निम्न विवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र० सं०	आइडेन्टीफिकेशन संख्या / पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रुपये में) अंक में	अक्षर में	कार्य समाप्ति की अवधि	टेन्डर ग्रेड
1	RWD/KODERMA/07/2024-25	प्रखण्ड चन्दवारा अन्तर्गत टिकैयाटांड से तारटांड तक पथ का निर्माण कार्य (ल० 1.500 कि०मी०)	1,32,98,800.00	एक करोड़ बत्तीस लाख अंठानबे हजार आठ सौ रू० मात्र	09 (नौ) माह	द्वितीय
2	RWD/KODERMA/08/2024-25	प्रखण्ड चन्दवारा अन्तर्गत ग्राम पंचायत [illegible] से [illegible] तक पथ निर्माण कार्य। (ल०–1.850 कि०मी०)	1,54,02,200.00	एक करोड़ चौवन लाख दो हजार दो सौ रू० मात्र।	09 (नौ) माह	द्वितीय

1. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि–02.09.2024
2. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय:–09.09.2024 अपराह्न 5.00 बजे तक।
3. निविदा खोलने की तिथि एवं समय:–11.09.2024 अपराह्न 3.30 बजे।
4. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियन्ता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, कोडरमा, झारखण्ड, पिन– 825410
5. ई निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० 8709561933/06534-297102
6. परिमाण विपत्र की राशि घट बढ़ सकती है तदनुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
7. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
8. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–शुल्क भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही आपकी होगी।

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है। ह0/–
कार्यपालक अभियन्ता,
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, कोडरमा।
PR 333898 Rural Work Department(24-25)D

कार्यालय नगर परिषद् रामगढ़

नगर परिषद्, रामगढ़ क्षेत्र अन्तर्गत अति–अल्पकालिन आमंत्रण सूचना

अति अल्पकालिन सूचना संख्या NIT/RGH/NP/05/2024-25(3rd Call)

1	निविदा निकालने वाले पदाधिकारी	:–	कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद् रामगढ़।
2	निविदा वेबसाईट पर प्रकाशन की तिथि	:–	दिनांक: 31.08.2024
3	निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने की अंतिम तिथि	:–	दिनांक: 09.09.2024 अपराह्न 05:00 बजे तक।
4	निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने का वेबसाईट	:–	केवलई–निविदा(http://jharkhandtenders.gov.in)
5	निविदा खोलने की तिथि व समय एवं स्थान	:–	दिनांक: 10.09.2024 अपराह्न 5.00 बजे तक।
6	मद का नाम	:	नागरिक सुविधा/शहरी परिवहन
7	हेल्पलाईन नं०	:–	9962405690, 9110072039

क्र० सं०	वार्ड नं०	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	विपत्र का मूल्य	कार्य करने का समय
1	02	Construction of Drain from old NH-33 DAV Public School Udari Kristain in ward No-02	2198100.00	43962.00	5000	90दिन
2	11	Construction OF PCC Road from H/O Sadruddin Ansari to H/O Aslum Ansari via H/O Dullu in Ward No-11	1439100.00	28782.00	5000	90दिन
3	17	Construction of PCC Road from land of Digamabar MAhto to Chhat Ghat Damodar Nadi in Ward No.17(Part-I)	2218650.00	44373.00	5000	90दिन
4	17	Construction of PCC Road from land of Digamabar MAhto to Chhat Ghat Damodar Nadi in Ward No.17(Part-II)	2218650.00	44373.00	5000	90दिन
5	17	Construction of PCC Road from Land of Bartu Mahto to H/O Mukesh Mahto in ward No-17	2218700.00	44374.00	5000	90दिन
6	18	Construction of Drain Dr. Aeshrarul Haque to H/O Rajesh Urawn in Ward No-18	1952800.00	39056.00	5000	90दिन
7	26	Construction of Drain from Water Tank to Culvert via NH-23 in Ward No-26	2392350.00	47847.00	5000	90दिन
8	31	Construction of Drain from H/O Tikeshwar Mahto to H/O Guddu Mahto via Birbal Mahto in ward No-31	2323100.00	46462.00	5000	90दिन
9	31	Construction of Drain from H/O sapun Mahto to Shiv Mandir in ward No-31	1395200.00	27904.00	5000	90दिन

नोटः– 1. केवल ई–निविदा ही स्वीकार की जाएगी।
2. नगर निकास एवं आवास विभाग के अधीनस्थ समुचित श्रेणी या एक श्रेणी उपर निबंधित संवेदकों से निविदा आमंत्रित की जाती है।
3. निविदा की शर्तें एवं अन्य जानकारियां http://jharkhandtenders.gov.in पर एवं नगर परिषद कार्यालय के सूचना पट्ट पर कार्य दिवस में 11:00 बजे पूर्वाह्न से 04:30 अपराह्न तक देखा जा सकता है।
4. जिन किन्हीं भी संवेदक (प्रोप्राईटरशिप अथवा पार्टनरशिप) फर्म पर पूर्व का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तर्गत पूर्ण नहीं हुआ है) उन्हें कार्य आवंटन में प्राथमिकता नहीं दी जायेगी।
5. जिन संवेदकों को कार्यालय द्वारा नियमानुसार कार्य आवंटित होने के पश्चात संवेदकों के द्वारा एकरारनामा नहीं किया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में उनके द्वारा जमा की गई अग्रधन की राशि जब्त कर ली जायेगी।
6. जिन किन्हीं भी संवेदकों का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तर्गत पूर्ण नहीं हुआ है) उन संवेदकों को कार्य आवंटन में प्राथमिकता देने के लिए कार्यालय बाध्य नहीं हो सकती है

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद्, रामगढ़
PR 333911 District(24-25)#D

एक नजर

नाले में तब्दील हो रही है सड़क

साहिबगंज : जिला अंतर्गत कोटालपोखर स्थित सड़क अब नाले में तब्दील होने में विवश है। ग्रामीणों का कहना है कि नाले क्षतिग्रस्त होने के वजह से नाली का गंदा पानी सड़क में भर जाती है। जिसके कारण विशेष रूप से धार्मिक लोगों पर इसका बुरा असर पड़ता है नाले की पानी जमाव के कारण ग्रामीणों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और दुर्घटना का भी केंद्र बना हुआ दिख रहा है। सड़क मे पानी जमने के कारण उसमें गंदगी फैलती है गंदे पानी की वजह से ग्रामीणों को डेंगू मलेरिया जैसी बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है, इसी तरह की समस्या से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

तीन नाबालिग मोबाइल चोरों को पुलिस ने दबोचा

साहिबगंज : नगर थाना पुलिस ने देर रात्रि गस्ती के दौरान तीन नाबालिक को मोबाइल चोरी के आरोप खदेड़ कर पकड़ा है। जानकारी के अनुसार बीते देर रात्रि गस्ती में नगर थाना के एएसआई प्रमोद कुमार सिंह नगर क्षेत्र में गस्ती कर रहे थे। इसी दौरान स्टेशन के पास तीन संदिग्ध नाबालिग पुलिस गश्ती गाड़ी को देखकर इधर-उधर भागने लगे। शक होने पर एएसआई प्रमोद सिंह व पुलिस बल तीनों नाबालिक को खदेड़ कर अलग-अलग दिशा से पकड़ लिया। तीनों नाबालिक को पूछताछ के लिए नगर थाना लाया गया। इधर थाना प्रभारी अमित कुमार गुप्ता ने बताया कि तीनों नाबालिक है और यह लोग जिरवाबाड़ी क्षेत्र के अलग अलग घर से चार मोबाइल चोरी की घटना को अंजाम देकर स्टेशन पहुंचे थे। पुलिस गाड़ी को देखकर यह लोग घबरा कर इधर-उधर भागने लगे। तभी पुलिस ने तीनों नाबालिक को खदेड़ कर पकड़ लिया।

मौसमी बीमारी ने बढ़ाई लोगों की परेशानी, बारिश में भीगने से बचें : चिकित्सक

घाटशिला : प्रखंड क्षेत्र में इन दोनों मौसमी बीमारी से लोग परेशान हैं। सरकारी अस्पताल और निजी नर्सिंग होम में ज्यादातर सर्दी खांसी और बुखार के मरीज पहुंच रहे हैं। अस्पताल एवं नर्सिंग होम में बेड लगभग भरे हुए हैं। खासकर वायरल फीवर से ग्रसित रोजाना दर्जनों मरीज चिकित्सक के पास पहुंच रहे हैं। मौसमी बुखार में मरीजों को ठीक होने में सात दिन से ज्यादा लग रहे हैं। पहले तीन से चार दिनों में मरीज ठीक हो जाते थे, लेकिन अभी वायरल फीवर होने पर सात से आठ दिन तक मरीजों को परेशान कर रहा है। बुधवार को जब घाटशिला अनुमंडल अस्पताल का जायजा लिया तो पता चला कि अस्पताल के सभी बेड मरीजों से भरे हैं।

करनडीह चौक डेढ़ घंटे रहा जाम, परेशान हुए राहगीर

फुटपाथ का अतिक्रमण व वाहनों की पार्किंग से लगता है जाम

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : टाटा-हाता रोड में स्थित करनडीह चौक जाम होना मानो नियति बन गई है। अमूमन प्रतिदिन दिन में एक बार चौक पर जाम लग जाता है। कभी-कभी दो-तीन घंटे तक चौक जाम रहता है। जिसके कारण राहगीरों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। बुधवार को सुबह 11 बजे से 12:30 बजे तक चौक जाम रहा। जिसके कारण चारों ओर से वाहनों की आवाजाही ठप हो गई। सड़क जाम रहने के कारण चौक के चारो ओर वाहनों का लंबा काफिला खड़ा हो गया। लोग चाहकर भी सड़क जाम से नहीं निकल पाए. अंततः परसुडीह थाना से पुलिसकर्मियों ने आकर जाम हटवाया। जाम का मुख्य कारण करनडीह चौक पर दुकानदारों के द्वारा फुटपाथ का अतिक्रमण कर सड़क के किनारे तक दुकान लगाना है। साथ ही खरीदारी करने वाले ग्राहक अपने वाहन सड़क पर खड़ा कर देते है। जिसके कारण सड़क संकरी हो जाती है। ज्ञात हो कि करनडीह होकर टाटा-हाता रोड में चाईबासा, नोवामुंडी, घाटशिला, मुसाबनी आदि जगहों के वाहन चलते हैं।

ट्रैफिक पुलिस की स्थायी प्रतिनियुक्ति की मांग

अक्सर चौक जाम होने का कारण वाहन चालकों की मनमानी भी है. चौक पर चारों तरफ से वाहनों का आना-जाना होता है। इस दौरान किसी वाहन चालक की गलती की वजह से धीरे-धीरे वाहन रूकते जाते हैं। जो जाम का कारण बनते हैं। स्थानीय लोगों ने बताया कि लोगों में मानवता खत्म हो गई है। मनमाने ढंग से लोग वाहन चलाते हैं। पुलिस की मौजूदगी से लोगों में भय होगा। इसलिए यहां स्थायी ट्रैफिक पुलिस की प्रतिनियुक्ति होनी चाहिए। साथ ही बीच-बीच में वाहन जांच अभियान भी चलाया जाना चाहिए. जिससे मनमाने ढंग से वाहन चलाने वालों पर लगाम लग सके। विशेष ड्राइव होने पर ही पुलिस करनडीह चौक पर वाहनों की जांच करती है। पुलिस की जांच से बचने के लिए लोगों को क्रॉस रोड का सहारा लेना पड़ता है। क्रॉस रोड जाम होने से भी चौक पर जाम लगना लाजिमी है। वैसे आमतौर पर जगह के अभाव में पुलिस नियमित रूप से वाहन जांच अभियान नहीं चलाती है।

खगेन महतो ने योद्धाओं को किया सम्मानित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

ईचागढ़ : चांडिल डैम में क्रैश विमान का खोज में सराहनीय भूमिका निभाने वाले समाज के प्रबुद्ध योद्धाओं को समाज सेवी खगेन महतो ने चौका स्थित अपने कार्यालय में अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। जमशेदपुर सोनारी एयरपोर्ट से ट्रेनिंग विमान चांडिल डैम में क्रैश होते हुए,वरसुनिया-पियालडीह निवासी तपन मांझी,रुशु मांझी स्नान करने के समय विमान को देखा था। बिना डरे वीरता का परिचय देते हुए,तत्काल प्रशासन को सूचना दिए थे। विमान के दोनों पायलट प्रशिक्षु सुब्रदीप दत्ता और ट्रेनी पायलट जीत शत्रु का शव व विमान को खोजने में अहम भूमि निभाने वाले हमारे वीर योद्धा सदीप दा,पूर्व मुखिया फागुराम ,तपन मांझी,रुशु मांझी को शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। वहीं समाज सेवी खगेन महतो ने कहा कि इस तरह का घटना पर वीरता और साहस का परिचय देना क्षेत्र में लोगों के लिए प्रेरणा का विषय है। उन्होंने कहा की एनडीआरएफ और भारतीय नौसेना दल, प्रशासन, मीडिया, क्षेत्र के ग्रामीण भी अपने अपने स्तर से सहयोग के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। मौके पर कमल क्लब ईचागढ़ के अध्यक्ष संजय मंडल, राजेश प्रामाणिक, लालटू साईं, अमरनाथ यादव, छोटू मंडल, रवि महतो आदि उपस्थित थे।

प्रखंड स्तरीय खेलो झारखंड प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : तालझारी प्रखंड क्षेत्र के मिशन मैदान में बुधवार को प्रखंड स्तरीय खेलो झारखंड दो दिवसीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन तालझारी पंचायत के मुखिया दुर्गा किस्कू व खेल प्रशिक्षक आदित्य कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। उन्होंने बताया कि जिला शिक्षा पदाधिकारी के निर्देशानुसार प्रखंड स्तरीय खेलों झारखंड प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। प्रतियोगिता के प्रथम दिन अंडर 14, 17 व 19 वर्ग तक के छात्र छात्राओं के लिए 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 600 मीटर, 800 मीटर एवं 1500 मीटर का दौड़, गोला फेंक व फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया। जिसमें अंडर 14 में 100 मीटर के दौड़ में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र कृष्णा कुमार यादव व छात्रा सुता टुडु संत जोन मिशन तालझारी, अंडर 17 वर्ग में 100 मीटर की दौड़ में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र मो अली व छात्रा चुमकी कुमारी, अंडर 19 वर्ग में प्रथम डीसीएम विद्यालय के छात्र अभय उरांव व कस्तूरबा विद्यालय की छात्रा मरियम टुडु, 200 मीटर के दौड़ में अंडर 14 वर्ग में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र मो अली व छात्रा सीमा हांसदा, अंडर 17 वर्ग में प्रथम यु एच एस बडातालबन्ना के छात्र शिवलाल हेम्ब्रम, कस्तूरबा विद्यालय तालझारी छात्रा मेरी टुडु, अंडर 19 वर्ग में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र आदित्य यादव यु एच एस बडातालबोना की छात्रा ऋषिका मिंज, 400 मीटर के दौड़ में अंडर 14 वर्ग में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र कृष्णा कुमार यादव व सूरज सोरेन, अंडर 14 वर्ग में प्रथम डीसीएम विद्यालय सकरीगली के छात्र गोपी मरांडी व कस्तूरबा विद्यालय की छात्रा सुमित्रा हेम्ब्रम, अंडर 19 वर्ग में प्रथम पल्स टु कन्या के छात्र चांद मुर्मू व कस्तूरबा की छात्रा अंजु कुमारी, गोला फेंक में अंडर 14 वर्ग में प्रथम बीडी उच्च विद्यालय सकरीगली के छात्रा बेबी कुमारी अंडर 19 वर्ग में प्रथम कस्तूरबा विद्यालय की छात्रा सरिता कुमारी वहीं खबर लिखे जाने तक छात्र छात्राओं के लिए फुटबॉल प्रतियोगिता का खेल जारी था प्रतियोगिता के अंत में सभी प्रथम स्थान प्राप्त छात्र छात्राओं को पंचायत के मुखिया दुर्गा किस्कू के मेडल देकर पुरस्कृत किया गया।

सीपीआई का पत्थर माफिया के खिलाफ प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : बुधवार को साहिबगंज समाहरणालय के समक्ष भारत की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी जिला कमेटी की ओर से एकदिवसीय धरना का कार्यक्रम किया गया। धरना की अध्यक्षता कामरेड फेयरफुल इस्लाम ने किया धारणा को संबोधित करते हुए श्याम सुंदर पोद्दार ने जिले में बंद पड़े पत्थर उद्योग क्रेशर को स्टार्ट करवाने के लिए जिला प्रशासन से मांग किया और उन्होंने कहा कि साहिबगंज जिले में बिहार बंगाल दिल्ली हरियाणा पंजाब से आ रहे पत्थर माफिया एवं कारोबारी खनन पट्टा एवं उनके द्वारा किए गए स्थापित क्रेशर को समाप्त किया जाए और जिले के जो छोटे-छोटे पत्थर व्यापारी क्रेशर व्यापारी जिनका सारा सिस्टम बंद हो चुका है उनसे मिलकर उनको प्रोत्साहन कर उन्हें क्रेशर स्थापित एवं खनन पट्टा देने का काम जिला प्रशासन करें साथ ही उन्होंने कहा कि भारी वाहन के ड्राइवर को अवैध खनन परिवहन के नाम पर जेल भेजना बंद करें एवं अवैध परिवहन से संबंधित जितने भी गाड़ी को जिला प्रशासन के द्वारा जप्त किया गया है उसमें लोड अवैध स्टोन मैटेरियल्स के मालिक का भी पता लगाकर उनके ऊपर मुकदमा करें। जिला मंत्री कमिटी असगर आलम ने भी संबोधित करते हुए कहा कि साहिबगंज जिले में किसान खेत मजदूर, बीड़ी मजदूर, पत्थर मजदूर, परिवहन मजदूर, सभी का आर्थिक हालत बहुत ही बेहाल है और सभी मजदूर राज्य से बाहर पलायन कर रहे हैं। जिले में पत्थर उद्योग को अपना स्थापित कर एवं किसान मजदूर बीड़ी मजदूर सभी के लिए एक ठोस योजना बनाया जाए। जिससे कि सारे मजदूर को उनके गांव में घर में जिला में रोजगार मिल सके साथ सूत्री मांग पत्र जिला आपूर्ति पदाधिकारी को सोपा गया। आज के इस धरना कार्यक्रम में आशीष रंजन, कईफुल इस्लाम, शरीफुल इस्लाम, कामरेड माणिक, स्वप्न दास, गौतम चौधरी, सहित दर्जनों साथी उपस्थित थे।

फायरिंग व कारोबारियों से रंगदारी मांगने वाला सरगना समेत चार गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

जमशेदपुर : बिष्टुपुर स्थित मारुति शोरूम के बाहर फायरिंग करने और शहर के कारोबारियों से रंगदारी मांगने के मामले में पुलिस ने मुख्य सरगना समेत चार लोगों को बुधवार को गिरफ्तार किया. गिरफ्तार आरोपियों में सिदगोड़ा सिंधु रोड निवासी सरगना प्रभास सिंह उर्फ नुनु सिंह, बिहार के बांका जिला निवासी अभिषेक सिंह उर्फ पंडित, शुभम सिंह और देवघर निवासी अमन सिंह उर्फ गोलू शामिल है। आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने फायरिंग की घटना में प्रयुक्त कार समेत अन्य सामान बरामद किया है। इसके पूर्व पुलिस ने इसी मामले में शामिल दो अन्य लोगों को गिरफ्तार किया था। जानकारी देते हुए एसएसपी किशोर कौशल ने बताया कि प्रभास सिंह ने अपने अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर मारुति शोरूम के बाहर फायरिंग करवाई थी। इसके बाद शहर के कारोबारियों से फोन पर रंगदारी मांग रहा था। इसको लेकर कई थानों में मामले भी दर्ज किए गए। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई की और आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

जगन्नाथपुर की बंद खदानें खोलवाने के लिए बड़ाजामदा में भाजपा ने किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरायकेला : जगन्नाथपुर विधानसभा में बंद पड़ी खदानों को खोलने के लिए 28 अगस्त को बड़ाजामदा में विशाल धरना-प्रदर्शन का आयोजन भाजपा ने पूर्व सांसद गीता कोड़ा एवं पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा के नेतृत्व में किया. इस दौरान पूर्व मुख्यमंत्री मधु कोड़ा ने कहा कि भारी वर्षा के बावजूद हम सभी यहां बंद खदानें खोलवाने व यहां के हजारों बेरोजगारों को उसमें रोजगार दिलाने के लिये यहां जमा हुए हैं। यह वर्षा हेमंत सरकार को बहाकर ले जायेगी। लौहांचल की खदानें बंद होने से यहां के लाखों लोग बेरोजगार हो चुके हैं। हेमंत सोरेन सारंडा की खदानें बंद कर अपने नाम से खदान खोलकर आज बेल पर हैं। यह सरकार खदान खोलने के लिये पहले माल मांगती है। हम जब मुख्यमंत्री थे तो एक भी खदान को बंद होने नहीं दिये थे। हमारे समय लोग सड़क पर गिरे लौह पत्थर को भी उठाकर अपना जीवन यापन कर लेते थे। हमारे समय दूसरे राज्यों के लोग यहां आकर रोजगार प्राप्त करते थे। ओडिशा की बंद खदानें खुल गई तो यहां की खदानें क्यों नहीं खुल रही हैं। गुवा शहीद मैदान से हर बार हेमंत सोरेन खदान खोलने की बात करते रहे, लेकिन यहां के बेरोजगारों को भूखे मार रहे हैं। झामुमो झारखंड के शहीदों की लाशों पर सिर्फ राजनीति कर रही है। सारंडा के ग्रामीण आज लाल पानी पीने को मजबूर हैं। शुद्ध पानी की भी व्यवस्था यह सरकार नहीं कर पाई। बेरोजगारी से तंग महिलाएं व पुरुष आत्महत्या कर रहे हैं। यह सरकार लुटेरी और झूठे वादे करने वाली है। इसे उखाड़ फेंकना है। भाजपा सरकार सभी वर्ग के लोगों खासकर गरीब और किसानों के लिये अनेक कार्य कर रही है। इस लड़ाई के बाद जंगलों में रहने वाले लोगों को वनाधिकार का पट्टा देने के लिये लड़ाई लड़ी जायेगी, क्योंकि वन उनके जीने का आधार है. झामुमो जल, जंगल, जमीन की पार्टी बोलती है, लेकिन वनपट्टा का हजारों आवेदन आज तक इस सरकार ने स्वीकृत नहीं की। गुवा गोलीकांड इसी वन पट्टा के लिये हुआ था। स्व. देवेन्द्र माझी, सांसद जोबा माझी के गांव के लोगों को आज तक वनपट्टा नहीं मिला। गुवा गोलीकांड में मारे गये कितने को सरकार ने वनपट्टा दिया है, यह बतायें। इस सरकार की विदाई इस बार निश्चित है। बेरोजगार व झारखंड की जनता करेगी। हेमंत सोरेन में इच्छाशक्ति की कमी : गीता कोड़ा

पूर्व सांसद गीता कोड़ा ने कहा कि जगन्नाथपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 30 से 40 आयरन ओर की वर्षों से बंद पड़ी खदानों को पुनः चालू करने के लिए भाजपा ने घंटा बजाओ, सरकार जगाओ कार्यक्रम के तहत विशाल धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम बड़ाजामदा में आयोजित की है। लोकसभा चुनाव के पहले उनके द्वारा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से लेकर संसद व कई मंचों एवं कार्यक्रम में बंद खदानों, क्रशरों को खुलवाने का अनुरोध किया गया था, परंतु हेमंत सरकार की इच्छा शक्ति की कमी के कारण एक भी खदान नहीं खोला गया। फलस्वरूप यहां के लोग बेरोजगारी और पलायन को विवश हैं। दूसरे राज्यों में मजदूरों को हो रहा शोषण दूसरे राज्यों में हमारे मजदूरों का मानसिक, शारीरिक व आर्थिक शोषण हो रहा है।

संक्षिप्त खबरें

पूर्व उप मुख्यमंत्री सुदेश महतो के पिता ने हाथीखेदा में टेका मत्था

पटमदा : बोड़ाम प्रखंड के प्रसिद्ध हाथीखेदा मंदिर में झारखंड सरकार के पूर्व उप मुख्यमंत्री सुदेश महतो के पिता श्याम सुंदर महतो ने मत्था टेककर आशीर्वाद लिया। उन्होंने कहा कि झारखंड में एनडीए गठबंधन की सरकार बनना निश्चित है। मंदिर जाने के क्रम में आजसू पार्टी के बोड़ाम स्थित प्रधान कार्यालय में युवा नेता परमेश्वर महतो ,आदित्य महतो ने अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान केंद्रीय सचिव आदित्य महतो,निर्मल सिंह,रमानाथ महतो ,भोला नाथ महतो बासुदेव महतो आदि मौजूद थे।

सीएस ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का किया निरीक्षण

साहिबगंज : सिविल सर्जन प्रवीण कुमार संथालिया बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट का औचक निरीक्षण किया।निरीक्षण के दौरान ओपीडी, आईपीडी,उपस्थिति पंजी की जानकारियां ली। निरीक्षण के दौरान अस्पताल में साफ सुथरा रखने का आवश्यक दिशा निर्देश दिए। वहीं सभी डॉक्टरों को ईमानदारी पूर्वक समय पर अस्पताल पहुंचकर मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा देने का निर्देश दिए। इस दौरान विभाग द्वारा चलने वाले स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम नियमित रूप से मॉनिटरिंग करने का दिशा निर्देश दिए। मौके पर बीपीओ प्रियरंजन सिंह, डॉक्टर चौधरी चंद्रशेखर प्रसाद चंद, डॉक्टर तापस मुर्मू, के अलावा अन्य मौजूद थे।

प्रखंड परिसर में स्थापित होगी बिरसा मुंडा की आदमकद प्रतिमा, हुआ भूमि पूजन

ईचागढ़ : सरायकेला-खरसावां जिला के ईचागढ़ प्रखंड कार्यालय परिसर में बुधवार को धरती आबा बिरसा मुंडा का प्रतिमा स्थापित करने के लिए भूमि पूजन किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी, पंचायत प्रतिनिधि व गणमान्य लोगों द्वारा प्रखंड परिसर में भूमि पूजन किया गया। मालूम हो कि एक साल पूर्व प्रखंड परिसर में स्थापित बिरसा मुंडा का प्रतिमा को किसी असमाजिक तत्व द्वारा। क्षतिग्रस्त कर दिया गया था। तब से नये प्रतिमा स्थापित करने को लेकर चर्चा होते रहा । किसी ने भी इसपर ध्यान नहीं दिया। आपसी चर्चा तक ही सीमित रहा। प्रखंड विकास पदाधिकारी किकू महतो व पंचायत प्रतिनिधियों व कुछ समाजिक कार्यकर्ताओं के प्रयास से भूमि पूजन किया गया एवं जल्द ही मुर्ती स्थापित करने पर विचार विमर्श किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी किकू महतो ने बताया कि प्रखंड परिसर में लगे बिरसा मुंडा का प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिए जाने के बाद अंग-भंग प्रतिमा को हटाकर नया प्रतिमा स्थापित करने के लिए कई बार स्थानीय समाज सेवि व पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा इस संबंध में चर्चा किया गया, मगर मुर्ती स्थापित नहीं किया जा सका । उन्होंने कहा कि इस संबंध में सबके साथ विचार विमर्श करने के बाद आपसी सहयोग से भगवान बिरसा मुंडा का मुर्ती स्थापित करने के लिए भूमि पूजन किया गया और एक सप्ताह के अंदर ही मुर्ती स्थापित किया जाएगा। मौके पर मुखिया राखोहरी सिंह मुण्डा, मनोरंजन महतो, सुभाष दत्ता, प्रभात प्रामाणिक,राम सिंह मुण्डा, दयाल सिंह मुण्डा आदि उपस्थित थे।

चोरी के आरोप में पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर भेजा जेल

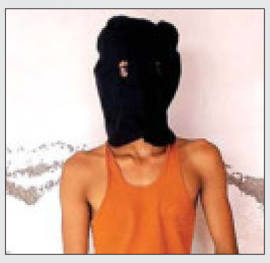

साहिबगंज : उधवा राधानगर पुलिस ने बुधवार को चोरी के आरोप में एक युवक को न्यायिक हिरासत में जेल भेजा है। पुलिस के अनुसार थाना क्षेत्र के दक्षिण सरफराजगंज पंचायत अंतर्गत इंग्लिश फुदकीपुर गांव निवासी सेनाउल शेख ने राधानगर पुलिस को आवेदन देकर आरोप लगाया है कि मंगलवार को रात्रि 2:30 बजे अपना घर में सो रहे थे इसी बीच घर में घुसकर एक युवक अलमारी खोजने लगा और अलमारी के बगल में कमीज रखा हुआ था कमीज के पॉकेट से 750 रूपए नगदी चोरी कर भाग रहा था। इस दौरान उक्त युवक को खदेड़ कर पकड़ लिया, इसकी सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही राधानगर थाना के सब इंस्पेक्टर जयबहादुर सिंह घटनास्थल स्थल पर पहुंचकर युवक को गिरफ्तार कर थाना लाया गया। वहीं पूछताछ करने पर युवक ने अपना नाम तजमीर शेख (19 वर्ष) पिता समरुद्दीन शेख इंग्लिश बाबूटोला बताया। वहीं मामले को लेकर कांड संख्या 133/24 दर्ज करते हुए एक युवक को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया।

झारखंड उत्पाद सिपाही प्रतियोगिता परीक्षा में अभ्यार्थी हुए बेहोश

साहिबगंज : जैप-09 परिसर में गुरुवार से झारखंड कर्मचारी चयन आयोग के निदेशानुसार झारखंड उत्पाद सिपाही प्रतियोगिता परीक्षा 2023 के तहत शुरू हुई उत्पाद पुलिस अभ्यर्थियों की शारीरिक जांच परीक्षा में छठे दिन दौड़ के दौरान 6 अभ्यर्थी फिर बेहोश हो गए। आनन फानन में पुलिस मेंस एसोसिएशन के अध्यक्ष राम प्रसाद, संयुक्त सचिव मनीष कुमार एम्बुलेंस से उन्हें ईलाज के लिए सदर अस्पताल लेकर पहुंचे। जहां चिकित्सकों ने उनका इलाज किया। मिली जानकारी के अनुसार बेहोश हुए अभ्यर्थियों में जमुई के टुनटुन कुमार 28, सलारपुर के चंदन यादव 23, गया के विवेक कुमार 22, भोजपुर के मनोज कुमार 29, गोड्डा के राजेश रजक 29 व साहिबगंज सरकंडा के निवारण पासवान 29 शामिल हैं। ज्ञात हो कि शारीरिक परीक्षा के तीसरे दिन यूपी के मनोज कुमार, राजेस्थान के मनोज सिंह, खूंटी के देव नारायण महतो, गिरिडीह के सौरभ कुमार, हजारीबाग के आनंद कुमार प्रजापति, गुमला के सुदीप तिग्गा व साहिबगंज झरना कॉलोनी के अमन यादव भी बेहोश हो गए थे।

मानव तस्करी की शिकार खूंटी की सात बच्चियों को किया गया रेस्क्यू

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर गठित एक संयुक्त विशेष टीम द्वारा दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि राज्यों में सत्यापन एवं छापामारी अभियान चलाकर मानव तस्करी की शिकार हुई जिले की सात बच्चियों का रेस्क्यू किया गया। बरामद की गई बच्चियों में छह नाबालिग हैं। सभी बच्चियां एक से तीन वर्षों से लापता थीं। बरामद बच्चियों में जिले की मुरहू थाना क्षेत्र की दो, सायको थाना क्षेत्र की दो तथा रनिया थाना क्षेत्र की तीन बच्चियां शामिल हैं। इनमें पांच बच्चियों को दिल्ली, एक बच्ची को उत्तर प्रदेश तथा एक बच्ची को गुरुग्राम हरियाणा से बरामद किया गया है। बरामद सभी बच्चियों को बाल कल्याण समिति दिल्ली के समक्ष प्रस्तुत कर उनका बयान दर्ज कराया गया। सभी बच्चियों को खूंटी लाने के लिए अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। यह जानकारी खूंटी एसपी द्वारा बुधवार को जारी विज्ञप्ति में दी गई। बताया गया कि मुख्यालय डीएसपी खूंटी के निगरानी में एएचटीयू थाना खूंटी के लंबित निष्पादित कांडों के लापता बच्चे-बच्चियों की बरामदगी के लिए एक संयुक्त टीम का गठन किया गया था। गठित टीम लगातार 16 दिनों तक उक्त राज्यों में संबंधित पुलिस टीम के सहयोग से सत्यापन एवं छापामारी कर मानव तस्करी का शिकार हुई सात बच्चियों को बरामद कर लिया। सूत्रों के अनुसार मानव तस्कर इन बच्चियों को सब्जबाग दिखाकर दिल्ली ले गए थे और विभिन्न एजेंसियों के जरिए बड़े-बड़े घरों में उन्हें बेच दिया था। बच्चियों से घर में नौकरानी की तरह काम कराया जाता था, लेकिन काम के बदले उचित पैसे नहीं दिए जाते थे। बताया गया कि जल्द ही सभी बच्चियों को खूंटी लाकर बाल कल्याण समिति खूंटी के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। बच्चियों की खूंटी में चिकित्सकीय जांच कराकर उन्हें सहयोग विलेज खूंटी में रखा जाएगा। विभिन्न संस्थाओं और सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के माध्यम से इन बच्चियों के पुनर्वास की व्यवस्था की जाएगी। तत्पश्चात उन्हें उनके माता-पिता को सुपुर्द किया जाएगा।

एक नजर

रामगढ़ में ढूंढे जाएंगे कुष्ठ रोगी सभी का होगा सफल इलाज : डीसी

रामगढ़ : कुष्ठ रोग का इलाज संभव है, लेकिन रोगी अस्पताल जाने से कतराते हैं। इस मानसिकता को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। तभी समाज को कुष्ठ रोग से मुक्ति दिलाई जा सकती है। यह बातें बुधवार को जिला स्तरीय समन्वय समिति की बैठक में डीसी चंदन कुमार ने कही। राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम अंतर्गत 28 अगस्त से 13 सितंबर तक चलने वाले कुष्ठ रोग खोज अभियान (प्रथम चक्र) को लेकर बुधवार को बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान सिविल सर्जन डॉक्टर महालक्ष्मी प्रसाद एवं राज्य कुष्ठ परामर्शदाता एनएलआर डॉक्टर सिद्धार्थ बिस्वाल के द्वारा उपायुक्त को पीपीटी प्रेजेंटेशन के माध्यम से कुष्ठ रोग खोज अभियान के तहत तैयार किए गए माइक्रो प्लान के बारे में बताया गया। इस दौरान कुष्ठ रोग के लक्षण, रोग के गंभीर परिणाम संबंधित अन्य जानकारियां दी गई। उन्होंने बताया कि वर्ष 2023 में जिले में कुष्ठ रोग खोज अभियान के तहत 116 मरीजों की पहचान की गई थी। कुष्ठ रोग का इलाज संभव है, वहीं कुष्ठ रोगी को इलाज के दौरान 500 की आर्थिक सहायता, निशुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई जाती है। बैठक के दौरान उपायुक्त ने कुष्ठ रोग खोज अभियान के प्रथम चक्र के सफल आयोजन को लेकर शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण सहित अन्य विभागों के अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने अभियान के तहत किए जा रहे हैं कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने, लोगों को कुष्ठ रोग के इलाज एवं इससे जुड़ी भ्रांतियों के प्रति जागरूक करने सहित अन्य आवश्यक निर्देश दिए। बैठक के दौरान सिविल सर्जन डॉ महालक्ष्मी प्रसाद, जिला पंचायती राज पदाधिकारी निशा कुमारी सिंह, श्रम अधीक्षक, जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी, जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डीआरसीएचओ, प्रभारी प्रखंड चिकित्सा पदाधिकारियों, जिला कार्यक्रम समन्वक, जिला एपिडेमियोलॉजी, एचओडी सीएसआर जिंदल फाउंडेशन सहित अन्य उपस्थित थे।

लंबित आवासों को शीघ्र पूरा करायें अधिकारी : कालीचरण

खूंटी : खूंटी समाहरणालय स्थित सभागार में सांसद कालीचरण मुंडा की अध्यक्षता में बुधवार को जिला विकास समन्वय और अनुश्रवण समिति (दिशा) की हुई बेठक में जिले में संचालिय योजनाओं की समीक्षा गई और अधिकारियों को जरूरी दिशा निर्देश दिये गये। बैठक में खूंटी के विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा और कई अधिकारी उपस्थित थे। बैठक में उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने सांसद, विधायक समेत सभी गणमान्य सदस्यों का स्वागत करते हुए पूर्व की बैठक में दिए निर्देशों के अनुपालन और प्रगति की जानकारी दी। उप विकास आयुक्त ने मनरेगा के तहत क्रियान्वित योजनाओं की जानकारी दी। प्रधानमंत्री आवास के संबंध में डीडीसी ने बताया कि जिले में हजारों आवास पूर्ण कराए गए हैं। समीक्षा के क्रम में 505 लाभुकों द्वारा किसी कारणवश आवास निर्माण को लंबित रखे जाने की जानकारी दी गई, जिसे लेकर सांसद ने जल्द निमार्णाधीन आवासों को पूर्ण कराने का निर्देश दिया। प्रखंड प्रमुख समेत अन्य जन प्रतिनिधियों को भी लाभुकों को प्रेरित कर आवास निर्माण कार्य पूर्ण कराने में सहयोग करने की अपील की गई। जिले में पलाश मार्ट का बेहतर संचालन पर जोर देने का निर्देश दिया गया। इमली, लाह, लेमन ग्रास समेत अन्य वन उत्पादों के लिए प्रोसेसिंग प्लांट बनाने का निर्देश दिया गया, ताकि किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके। जेएसएलपीएस के बंद पड़े प्रोसेसिंग प्लांट को चालू करने का निर्देश दिया गया।

सभी व्यवसायी अपने प्रतिष्ठानों में सीसीटीवी कैमरा जरूर लगायें : ख्रिस्टोफर केरकेट्टा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : जिले के एसपी अमन कुमार कें निर्देश पर तोरपा के अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ख्रिस्टोफर केंरकेट्टा के कार्यालय में बुधवार को तोरपा थाना क्षेत्र कें सभी व्यावसायिक प्रतिष्ठान के संचालकों मॉल, जेवर दुकान, पेट्रोल पंप, वाहन शोरूम स्कूल,कॉलेज आदि संस्थानों के संचालकों के साथ बैठक कर उनसे सुरक्षा से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की। एसडीपीओ केरकेट्टा बैठक में सुरक्षा के दृष्टिकोण से सभी प्रतिष्ठान संचालकों को अपने-अपने प्रतिष्ठानों में अच्छी क्वालिटी का सीसीटीवी कैमरा लगाने, प्रतिष्ठानों में काम करने वाले कर्मियों का चरित्र सत्यापन स्थानीय थाना से कराने, पेट्रोल पंप संचालकों को बिना हेलमेट के पेट्रोल नहीं देने, सभी बैंक के शाखा प्रबंधक को बैंक में सुरक्षा गार्ड रखने, सीसीटीवी कैमरा लगाने, डायल 112 महिला, सुरक्षा आदि के बारे में जागरूक किया गया। साथ ही सभी थाना प्रभारी को रक्षक एप का क्यूआर कोड को सभी महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों में चिपकाने और पेट्रोलिंग पार्टी को क्यूआर कोड को स्कैन करने का निर्देश दिया गया। बैठक में स्कल और कॉलेज के संचालाकों को निर्देश दिया गया ।

दुकानदार को डराने के लिए युवक ने की फायरिंग पुलिस ने देसी कट्टा के साथ किया गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : जिले के तरहसी थाना क्षेत्र के महुडंडवा चौक पर दुकानदार को डराने के लिए फायरिंग करने वाले युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसका साथी फरार है। उसके पास से एक देसी कट्टा औ? दो गोली बरामद की गई है। पुलिस फरार युवक की गिरफ्तारी में जुटी हुई है। युवक की पहचान पतिला गांव के मनीष कुमार सिंह पिता गिरेंद्र सिंह के रूप में हुई है, जबकि फरार युवक राहुल कुमार सिंह पिता स्वर्गीय बिगन सिंह है। तरहसी के थाना प्रभारी नीरज कुमार ने बुधवार को बताया कि 24 अगस्त को शाम के समय महुडंडवा चौक पर जब लोग खाने-पीने एवं घूमने फिरने के लिए निकले हुए थे, इसी क्रम में दुकानदार को डराने के लिए पतीला गांव का मनीष कुमार सिंह ने अपने साथी राहुल कुमार सिंह के साथ देसी कट्टा से फायरिंग की थी। इस संबंध में 25 अगस्त को मामला दर्ज किया गया था। गुप्त सूचना मिलने पर मनीष कुमार सिंह को मंगलवार को गिरफ्तार किया गया और उसकी निशानदेही पर उसके घर से एक देसी कट्टा और दो गोली बरामद की गई। घटना में इसी हथियार का इस्तेमाल आरोपी ने किया था। बुधवार को उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि आरोपी युवक ने दुकानदार से दुकान की चाबी रात में सोने के लिए मांगी थी। अपराधी प्रवृत्ति का युवक होने के कारण वह घर पर नहीं सोता था। दुकानदार ने दुकान की चाभी देने से मना कर दिया था। इसके बाद उसने फायरिंग की घटना को अंजाम दिया।

सरगड़ा विद्यालय परिसर पर ठेकेदार का अवैध कब्जा, बच्चों की सुरक्षा को खतरा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : जिले के हैदरनगर के सरगड़ा विद्यालय परिसर को सड़क निर्माण कंपनी द्वारा सामग्री स्थल सह मटेरियल गोदाम बना दिया गया है, जिससे स्कूल के संचालन में गंभीर बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं। बिना विद्यालय के प्रधानाध्यापक या शिक्षा विभाग की अनुमति के ठेकेदार ने अवैध रूप से विद्यालय के मैदान पर कब्जा कर उसे नष्ट कर दिया है। इस कारण विद्यालय के सभी शिक्षकों और पदाधिकारियों को अपनी ड्यूटी निभाने में असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि विद्यालय परिसर में खेल-कूद करने वाले बच्चों की सुरक्षा पर खतरे के बादल मंडरा रहे हैं। विद्यालय में आरटीई (शिक्षा का अधिकार) अधिनियम के तहत किसी भी प्रकार के निर्माण या अन्य गतिविधियों को बिना आदेश के अंजाम देना अवैध है। बावजूद इसके, ठेकेदार ने अपने मनमाने ढंग से स्कूल के मैदान को मटेरियल गोदाम में तब्दील कर दिया है। प्रधानाध्यापक ने बुधवार को बताया कि ठेकेदार ने बिना किसी पूर्व सूचना या अनुमति के यह कदम उठाया है, जिससे स्कूल परिसर में जाना मुश्किल हो गया है। सूत्रों के अनुसार किसी भी सरकारी स्थल का उपयोग बिना विभागीय आदेश के करना न केवल अनैतिक है, बल्कि अवैध भी है और इसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा सकती है। इस स्थिति से प्रशासनिक अधिकारियों को अवगत कराया जाना आवश्यक है, ताकि उचित कार्यवाही की जा सके और विद्यालय परिसर को पुनः उसकी मूल स्थिति में बहाल किया जा सके। बच्चों की सुरक्षा और शिक्षकों की सुविधाओं के लिए यह कदम अत्यंत जरूरी है। आशा की जाती है कि संबंधित विभाग जल्द ही इस मामले में संज्ञान लेते हुए ठेकेदार के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगा।

आपकी योजना-आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम 30 से, लगेगा शिविर

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : जिले में आपकी योजना-आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के तहत शिविर लगाकर लोगों को विभिन्न सरकारी योजनाओं से लाभान्वित करने का सिलसिला फिर से प्रारंभ होने जा रहा है। जिले के सभी पंचायतों में शिविर लगाने को लेकर जिलास्तर से तैयारी भी प्रारंभ कर दी गयी है। किस तिथि को कहां शिविर के आयोजन होगा, इसकी रूप रेखा भी तैयार कर ली गयी है। वहीं सभी प्रखंडों के लिये वरीय पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति भी किया गया है। शिविर में आवेदन पत्र प्राथमिकता के आधार पर प्राप्त किये जायेंगे। इसमें झारखंड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान, अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा, अबुआ आवास, मुख्यमंत्री पशुधन, बिरसा हरित ग्राम, किसान क्रेडिट कार्ड, सर्वजन पेंशन, सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि, हरा राशन कार्ड, बिरसा सिंचाई कूप संवर्द्धन, मुख्यमंत्री रोजगार सृजन, गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के अलावा जाति, आवासीय, आय प्रमाण पत्र व अन्य को लेकर फोकस किया जायेगा। सभी योजनाओं से संबंधित प्रखंड स्तरीय अधिकारी-कर्मी शिविर में उपस्थित होंगे। 30 अगस्त को मोहम्मदगंज के पंशा, हैदरनगर के परता, हुसैनाबाद के देवरी खुर्द, पीपरा के सरैया, हरिहरगंज के कुलहिया, नौडीहाबाजार के लक्ष्मीपुर, छत्तरपुर के सुशीगंज, पांडु के तीसीबारकला, उंटारी रोड के लुम्बा सतबहिनी, विश्रामपुर के सिगसिगी, नावाबाजार के सोहदागखुर्द, पड़वा के छेछौरी, चैनपुर के रबदा, रामगढ़ के बेड़मा बभंडी, नीलांबर-पीतांबरपुर के जुरू, सतबरवा के बारी व पांकी के सगालिम पंचायत में शिविर का आयोजन किया जाएगा।

चाचा-भतीजा ने मिलकर की थी खस्सी की चोरी, पंचायत ने लगाया जुर्माना तो चाचा ने कर ली आत्महत्या

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : चाचा और भतीजा ने मिलकर जंगल से एक खस्सी की चोरी किया। दोनों ने मिलकर खस्सी का मांस खाया और जमकर शराब पी। शराब के नशे में खस्सी चुराने की बात जुबान से निकल गई। बाद में गांव में पंचायत बैठी और 25 हजार का जुमार्ना लगाया गया। जुर्माना के बाद चाचा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। यह घटना पलामू के नावाजयपुर थाना क्षेत्र के बूढ़ी गांव की है। दरअसल 20 अगस्त को विनोद परहिया और उसका भतीजा दौलत परहिया ने जंगल में गांव के ही राजेंद्र सिंह नामक व्यक्ति की खस्सी को चोरी कर ली थी। बाद में दोनों ने खस्सी के मीट को बाट लिया था। दोनों ने घर में खस्सी का मीट बनवाया और जमकर खाया था। मीट खाने के बाद दोनों ने जमकर शराब पी। शराब के नशे में दोनों की जुबान से खस्सी की चोरी की बात निकल गई। दोनों की बात को बगल से गुजर रही एक महिला ने सुन लिया था, जिसके बाद चोरी की घटना की जानकारी पूरे गांव में आग की तरफ फैल गई थी। तीन दिन पहले पूरे मामले में गांव में पंचायत बैठी। इस पंचायत में चाचा और भतीजा पर 25 हजार रुपए का जुर्माना लगाया गया। हालांकि इस पंचायत में चाचा विनोद परहिया नहीं गया था, विनोद परहिया की जगह उसकी पत्नी ने पंचायत में भाग लिया था। सोमवार की रात विनोद परहिया को उसकी पत्नी ने पंचायत में हुए फैसले के बारे में जानकारी दी। पंचायत में फैसले को लेकर पति और पत्नी के बीच में हल्की बहस भी हुई। सोमवार की रात विनोद पहरिया का बेटा जब शौच के लिए बाहर निकाला तो देखा उसके पिता का शव झूल रहा है। पूरी रात शव वहीं पड़ा रहा। मंगलवार को परिजनों ने पूरे मामले की जानकारी पुलिस को दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लिया। नावाजयपुर के थाना प्रभारी कमल किशोर पांडेय ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस पूरे मामले में आगे की छानबीन कर रही है।

संक्षिप्त खबरें

8वां नेशनल गतका चैम्पियनशिप में पलामू के खिलाड़ियों ने जीते सात पदक

मेदिनीनगर (पलामू) : गतका फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा पंजाब के संगरूर में नेशनल गतका चैंपियनशिप का आयोजन दिनांक 23 अगस्त से 28 तक किया गया । जिसमें झारखण्ड राज्य गतका संघ से 90 खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। झारखण्ड के सभी खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन दिखाया। लेकिन पलामू जिला के खिलाड़ियों ने सूझ- बूझ और सही तकनीक को लगाते हुए झारखण्ड राज्य 7 पदक दिलाया। जिसमें संत मरियम स्कूल के अतुल सिंह और आर्यन पांडे के साथ ओरिएंट पब्लिक स्कूल के रिशु राज दांगी ने अंडर 11 टीम फरी सोती खेलते हुए हरियाणा को पछाड़ते हुए राजस्थान को हराकर , झारखण्ड को सिल्वर मेडल दिया। वहीं गुरु गोविंद सिंह पब्लिक स्कूल के पीहू रानी ने बालिका वर्ग के अंडर 11 में फारी सोती खेलते हुए कांस्य पदक जीती तो वहीं चंदानी कुमारी अंडर 17 टीम सिंगल सोती खेलते हुए कांस्य पदक जीती। तो वहीं ओरिएंट पब्लिक स्कूल की छात्रा अनामिका मेहता अंडर 14 खेलते हुए टीम फारी सोती में कांस्य पदक जीती। तो वहीं द कराटे एकेडमी का छात्र प्रियांशु कुमार ने अंडर 11 फारी सोती खेलते हुए कांस्य पदक जीता। यह सभी खिलाड़ी पलामू गतका संघ के सचिव सुमित बर्मन एवं सदस्य दीपेंद्र सिंह के साथ संगरूर गए थे। मौके पर सुमित बर्मन ने बताया कि भारत देश में गतका सबसे लोकप्रिए खेल बन गया है। गतका फेडरेशन ऑफ इंडिया के मुताबिक इस प्रतियोगिता में 2 हजार 5 सौ खिलाड़ियों ने भाग लिया था जो की भारत में खेल संघ के मुताबिक सबसे ज्यादा चैम्पियनशिप में भाग लेने वाले आंकड़े है। गतका खेल भारतीय ओलंपिक, खेलों इण्डिया, एस.जी.एफ.आई जैसे तमाम सरकारी खेल संगठनों से जुड़ कर खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने का काम करती है। पलामू से जाने वाले खिलाड़ियों ने अपना शानदार प्रदर्शन दिखाया है। इस प्रतियोगिता में पलामू जिला से 27 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। जिसमें 7 खिलाड़ियों ने पदक जीत कर झारखण्ड राज्य को गौरवान्वित किया है। वहीं मौके पर पलामू जिला गतका संघ के अध्यक्ष सोनू नामधारी ने कहा की 8 वा नेशनल गतका चैम्पियनशिप में पदक विजेता सभी खिलाड़ियों को ढेर सारी शुभकामनाएं दी। और जिन खिलाड़ियों ने पदक नहीं जीता है उन्हे निराश नहीं होने की जरूरत नहीं है क्यों की लोहे पर एक बार हथौड़ा मारने से आकर नहीं बनता आपका एक बार चैंपियनशिप हारने से इतिहास नहीं बदलता आप लोग ऐसे खिलाड़ी हो जो इतिहास लिखोगे बस अपनी मेहनत की सीमा को और बढ़ाना होगा। वहीं उपाध्यक्ष प्रदीप नारायण, मन्नत बग्गा, गुरबीर सिंह विजेता खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी। वहीं झारखण्ड गतका संघ की सचिव विधा ने कहा की मुझे पलामू के गतका खिलाड़ियों पर गर्व है की इन्होंने अपनी प्रतिभा को दिखाते हुए झारखण्ड को मेडल दिलवाया है।

पल्स पोलियो ड्रॉप दिलवाना नहीं है मेरा काम : डीपीएम

मेदिनीनगर (पलामू) : भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना पल्स पोलियो अभियान को ले स्वास्थ्य विभाग के पलामू डीपीएम कितने सजग हैं इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है। उन्होंने पल्स पोलियो का ड्राप के संदर्भ में जानकारी मांगे जाने पर बताया कि पल्स पोलियो का ड्राप दिलवाना उनका काम नहीं है। यह काम संबंधित प्रखंड पदाधिकारी का है। विशेष जानकारी के लिए पलामू के सिविल सर्जन से बात करें। बताते चलें कि भारत सरकार के स्वास्थ्य विभाग की ओर से 25 अगस्त को सभी पोलियो बूथ पर जीरो से 5 वर्ष तक के सभी बच्चे को पल्स पोलियो की ड्राप पिलाई जा रही थी। सरकार ने प्रावधान किया है कि किसी कारण से बूथ तक नहीं पहुंचने वाले बच्चों को घर पर पोलियो ड्राप पिलानी है। इस संदर्भ में झारखंड पत्रकार संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष शुक्ला ने बताया कि 26 अगस्त को जीएलए कॉलेज रोड के भवानी नगर में उनके घर सहित मोहल्ले के किसी घर में पल्स पोलियो ड्रॉप पिलाने का अभियान नहीं चलाया गया है। अभी तक कोई व्यक्ति दवा पिलाने नहीं पहुंचा है।डीपीएम ने कहा कि यह काम सदर प्रखंड के लोगो का है। पल्स पोलियो की दवा पिलाने की जिम्मेदारी उनकी नहीं है। पूछने पर बताया कि विशेष जानकारी के लिए सिविल सर्जन से बात करें । इनके इस अंदाज से पता चलता है कि पल्स पोलियो ड्रॉप के शत प्रतिशत लक्ष्य को कैसे पाया जा सकता है। इस तरह के स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के कारण योजना फेल होते नजर आ रहा है । अधिकारी केवल कार्यालय में बैठकर कागजों पर पर ही पल्स पोलियो की दवा पिलाने का काम कर रहे हैं। शुक्ला ने पलामू के उपायुक्त से लापरवाह पदाधिकारी पर कार्रवाई करने की मांग की है। उन्होंने डीपीएम के अंदाज पर कड़ी आपत्ति दर्ज की है।

अनियमित सत्र के खिलाफ आइसा ने घेरा नीलांबर विश्वविद्यालय

पलामू : ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा) पलामू ने अनियमित सत्र के खिलाफ नीलांबर पीतांबर विश्वविद्यालय का बुधवार को घेराव किया। जीएलए कॉलेज से मार्च निकालते हुए विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के समक्ष प्रदर्शन किया गया। मार्च का नेतृत्व आइसा पलामू जिला सचिव गौतम दांगी, जिलाध्यक्ष गुड्डू भुइयां और लातेहार जिला सचिव नागेंद्र राम संयुक्त रूप से कर रहे थे। प्रदर्शन में जमकर नारेबाजी की गयी। प्रशासनिक भवन के सामने मार्च सभा में तब्दील हो गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य सचिव त्रिलोकीनाथ ने कहा कि पलामू के छात्र चौतरफा कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। एक तरफ जहां कॉलेजों की घोर कमी है, वहीं दूसरी तरफ अनियमित सत्र छात्रों का भविष्य खराब कर रहा है। पूरे देश में रोजगार की घोर कमी है। कई छात्र देर से डिग्री मिलने के कारण स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर की वेकेंसी फॉर्म नहीं भर पा रहे हैं। इसका ताजा उदाहरण आप 2022-24 सत्र के बीएड छात्रों से ले सकते है। अभी दो दिन पहले तक जेटेट का फॉर्म भरा गया है। परीक्षा भी जल्द हो सकती है और बीएड के मात्र अभी तक दो सेमेस्टर की परीक्षा हुई है। आइसा पूरी तरह विश्वविद्यालय के इस रवैये के प्रति रोष व्यक्त करती है। सभा को अविनाश रंजन, दिव्या भगत, राज्य उपाध्यक्ष रंजीत कुमार सिंह, जिलाध्यक्ष गुड्डू भुइयां, लातेहार जिला सचिव नागेंद्र राम, चंद्रकांती कुमारी, ममता कुमारी, मंजीत कुमार, आरती कुमारी, शीला कुमारी, समीर कुमार, विकास कुमार, मिथलेश कुमार, कंचन कुमार, विजय, चंदन आदि ने संबोधित किया।

इन देशों में सुरक्षा की नहीं होगी चिंता, बेफिक्र होकर बनाएं घूमने का प्लान

कई लोग विदेश घूमने की इच्छा रखते हैं। विदेश घूमने के लिहाज से अधिकतर देश शानदार हैं। हालांकि विदेशों की खूबसूरती किसी भी टूरिस्ट के मन को आसानी से भा सकती है। लेकिन जब भी विदेश घूमने की बात आती है तो सबसे पहले हमारे दिमाग में यह आता है कि क्या वह जगह सुरक्षा के लिहाज से सही है। क्योंकि सेफ्टी हमारी फर्स्ट प्रायॉरिटी होती है। आज इस आर्टिकल के माध्यम से हम आपको कुछ ऐसे देशों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर आपको सुरक्षा की चिंता करने की जरूरत नहीं होगी। आइए जानते हैं कि वह कौन-कौन से देश हैं, जहां पर आप बेफिक्र होकर घूम सकते हैं।

आइसलैंड

आइसलैंड की आबादी 3,72,295 है। ग्लोबल पीस इंडेक्स के अनुसार, यह दुनिया का सबसे सुरक्षित देश है। बता दें कि यहां पर क्राइम रेट काफी कम है। इसके साथ ही यह हाई-सिक्योरिटी वाला देश भी है। सभी तरह के अपराधों के प्रति यहां के नागरिकों का एक मजबूत सामाजिक दृष्टिकोण है। यह देश धार्मिक स्वतंत्रता देने के साथ ही महिलाओम और पुरुषों को समान अधिकार देता है। अगर आप भी विदेश घूमने का प्लान बना रहे हैं तो आइसलैंड सुरक्षित देश है।

न्यूजीलैंड

आपको बता दें कि न्यूजीलैंड की जनसंख्या 5,124,100 के आसपास है। यह देश भी घूमने और रहने के लिहाज से सुरक्षित है। यहां पर आप बेफिक्र होकर घूम सकते हैं। न्यूजीलैंड का भी क्राइम रेट कम है। हालांकि साल 2019 में क्राइस्टचर्च की दो मस्जिदों पर हुए आतंकवादी हमले के कारण यहां का क्राइम स्कोर थोड़ा कम हो गया है। यह पर आप सुरक्षा का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि न्यूजीलैंड में शांति वाले इलाके में पुलिस अपने पास हथियार भी नहीं रखती है।

पुर्तगाल

साल 2014 के अनुसार, पुर्तगाल दुनिया का 18वां सबसे सुरक्षित देश है। ऐसे में आप बिना सुरक्षा की चिंता किए बगैर यहां पर घूम सकते हैं। 10,270,865 के करीब आबादी वाला यह देश विभिन्न कारणों से सबसे सुरक्षित देशों में शीर्ष 5वां स्थान अर्जित किया है। बता दें कि आर्थिक विकास के कारण इस देश की बेरोजगारी दर 17 प्रतिशत से 7 प्रतिशत तक कम हो गई है।

आस्ट्रिया

26,177,413 के करीब जनसंख्या वाला देश आस्ट्रिया भी सुरक्षित देशों की गिनती में आता है। यहां पर भी अपराध दर काफी कम है। लेकिन यहां पर घूमने आने वाले टूरिस्टों और यहां पर रहने वाले स्थानीय निवासियों को जेबकतरों और पर्स-स्नैचर्स आदि घटनाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए अगर आप भी यहां पर घूमने आना चाहते हैं तो

आपको जेबकतरों से सावधान रहने की जरूरत होगी।

डेनमार्क

डेनमार्क 5,896,026 आबादी वाला देश है। बता दें कि ग्लोबल पीस इंडेक्स के अनुसार, यह दुनिया का 5वां सबसे सुरक्षित देश है। इस देश में अच्छी शिक्षा, अच्छा रोजगार और कम भ्रष्टाचार होने के साथ ही कुशल सुरक्षाबन मिलेगा। इसके अलावा यहां की हेल्थ सुविधाएं भी काफी बेहतर हैं। इस देश में लोग आरामदायक तरीके से अपनी जीवन व्यतीत करते हैं।

कनाडा

कनाडा की कुल आबादी 37,742,154 के करीब है। आबादी के लिहाज से कनाडा काफी छोटा देश है। यहां का अधिकतर हिस्सा बंजर जंगल है और यह बंजर जंगल हजारों मीलों तक फैला हुआ है। लेकिन घूमने के लिहाज से यह काफी सुरक्षित देश है। इस देश का अपराध दर भी काफी कम है।

सिंगापुर

सिंगापुर 59,43,546 के करीब आबादी वाला है। सिंगापुर में छोटी-मोटी चोरी और अन्य अपराधों के खिलाफ कुछ सख्त कानून हैं। जिसके कारण इसकी गिनती दुनिया के सुरक्षित देशों में होती है। हालांकि सिंगापुर को शहर-राज्य के रूप में परिभाषित किया गया है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि यह दुनिया के दूसरे नंबर का सबसे सुरक्षित राज्य है।

जापान

जापान की जनसंख्या 125.93 मिलियन के आसपास है। सुरक्षा के लिहाज से यह सबसे सुरक्षित देश है। चीन और उत्तर कोरिया के करीब होने के बाद भी जापान एशियाई महाद्वीप का एक सुरक्षित और आर्थिक रूप से स्थिर देश है। वैश्विक शांति सूचकांक में जापान हमेशा हाई स्कोर हासिल करता है।

चेक गणराज्य

चेक गणराज्य की आबादी 10,512,397 के करीब है। यहां पर हर वर्ष अपराध दर घटता प्रतीत होता है। यूरोप के अन्य देशों की तुलना में चेक गणराज्य सुरक्षित देशों में से एक है। यहां पर आप सुरक्षा की परवाह किए बिना आराम से घूम-फिर सकते हैं।

स्विट्जरलैंड

स्विट्जरलैंड घूमने के लिए हर साल लाखों टूरिस्ट वहां पहुंचते हैं। बता दें कि यहां की आबादी 8.6 मिलियन के आसपास है। रहने और घूमने के लिहाज से यह देश सबसे ज्यादा बेस्ट है। फूड सिक्योरिटी के मामले में भी स्विट्जरलैंड दुनिया भर में चौथे स्थान पर है।

सिक्किम घूमने का बना रहे हैं प्लान तो...

इन खूबसूरत जगहों को करें एक्सप्लोर, जन्नत में आने का होगा एहसास

देश की टॉप ट्रैवल डेस्टिनेशन्स में नॉर्थ ईस्ट के कई राज्यों का नाम गिना जाता है। नॉर्थ ईस्ट की ट्रिप प्लान करने वाले अधिकतर लोग सिक्किम घूमना नहीं भूलते हैं। वैसे तो सिकिम्म में घूमने के लिए कई खूबसूरत जगहें हैं। ऐसे में अगर आप भी सिक्किम घूमने का प्लान बना रहे हैं तो इन जगहों को एक्सप्लोर करना न भूलें। इन खूबसूरत जगहों पर घूमने के बाद आपका वापस आने का दिल नहीं करेगा। हिमालय की गोद में बसा सिक्किम भले ही एक छोटा सा राज्य है। लेकिन यहां की खूबसूरत वादियों से लेकर नेचर की खूबसूरती आपका मन मोह लेगी। आज इस आर्टिकल के माध्यम से हम आपको सिक्किम की कुछ शानदार जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। आइए जानते हैं उन जगहों के बारे में...

त्सोमगो झील की सैर

अगर आप सिक्किम में किसी रोमांटिक जगह पर घूमना चाहते हैं तो त्सोमगो लेक आपके लिए बेस्ट ऑप्शन होगा। त्सोमगो लेक सिक्किम की राजधानी गंगटोक से महज 40 किलोमीटर दूर है। यह लेक 12,400 फीट की ऊंचाई पर मौजूद है। इस लेक को चांगु झील के नाम से भी जाना जाता है। बता दें कि सर्दियों में यह लेक पूरी तरह से जम जाती है। वही बसंत ऋतु के मौके पर इस लेक की सुंदरता कई खूबसूरत फूलों से खिल उठती है।

जुलुक का दीदार

जुलुक का दीदार करने के लिए सिक्किम की राजधानी गंगटोक से लगभग 3 घंटे का सफर तय करना होता है। इस दौरान रास्ते में 32 हेयरपिन मोड़ आपकी यात्रा को अधिक शानदार बना सकते हैं। वैसे तो जुलुक सिक्किम का एक छोटा सा और काफी खूबसूरत गांव है। लेकिन यहां से 11 फीट की ऊंचाई पर स्थित थुंबी व्यू प्वाइंट कंचनजंघा चोटी अपने खूबसूरत नजारों के लिए फेमस है। जुलुक की ट्रिप के दौरान कपुप लेक या हाथी झील का भी दीदार कर सकते हैं।

पेलिंग की ट्रिप

गंगटोक से लगभग 140 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पेलिंग भी घूमने के लिए बेस्ट जगह है। यह जगह रोमांच के लिए फेमस है। पेलिंग का सफर एडवेंचर लवर्स के लिए बेस्ट हो सकता है।

यहां पर एडवेंचर के शौकीन लोग रॉक क्लाइंबिग, ट्रेकिंग, कयाकिंग, माउंटेन बाइकिंग, रिवर राफ्टिंग जैसी कई एक्टिविटी कर सकते हैं। इसके अलावा सांगचोएलिंग मठ रिम्बी वॉटरफॉल स्काई वॉक और सेवारो रॉक गार्डन का दीदार कर अपने सफर को शानदार और रोमांचक बना सकते हैं।

रंवगला

रंवगला सिक्किम का खूबसूरत हिल स्टेशन है। यह समुद्र तल से लगभग 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। हिमालय पर्वतों से घिरा रंवगला मैनम और तेंडोंग हिल्स टॉप पर मौजूद है। बता दें कि रंवगला गंगटोक से लगभग 63 किलोमीटर की दूर स्थित है। नेचर लवर्स के लिए रंवगला की सैर बेस्ट हो सकती है। यहां से आप ग्रेटर हिमालय के मनमोहक नजारों को बेहद नजदीक से देख सकते हैं।

इन टिप्स को फॉलो कर हॉलिडे को बनाएं शानदार, ऐसे करें पैसों की बचत

कई लोगों को घूमना काफी पसंद होता है। कई बार लगातार ट्रैवल करने के बाद भी छकान नही होती है। लेकिन घूमने के लिए पैसों की भी जरूरत होती है। ऐसे में सेविंग्स का होना जरूरी होता है। घूमने के दौरान कई बार ज्यादा पैसा खर्चा हो जाता है। लेकिन अगर आप स्मार्ट तरीके से घूमने की प्लानिंग करें तो आप पैसों की बचत कर सकते हैं। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको ट्रैवल के कुछ ऐसे टिप्स बताने जा रहे हैं। जिनकी मदद से आप ट्रैवल भी कर लेंगे और पैसों की सेविंग भी कर लेंगे।

हॉलिडे की योजना

अगर आप भी छुट्टी पर जाने की सोच रहे हैं। तो सबसे पहले यह डिसाइड करें की आप रिलैक्सिंग हॉलिडे के लिए समुद्र तट पर चाहते हैं या एडवेंचर्स करना चाहते हैं। जब आपको यह पता होता है कि आप घूमने के लिए कहां जाने वाले हैं तो वहां होने वाले खर्चे और यात्रा कार्यक्रम की योजना पहले से बना लें। इस दौरान आपके लिए रियलिस्टिक बजट बनाना आसान हो जाएगा।

रियलिस्टिक बजट

घूमने जाने की शुरुआत हॉलिडे रीयलिस्टिक बजट तय करने से शुरू होती है। आप कहीं भी घूमने जा रहे हों। कोई भी स्मार्ट ट्रैवलर यह बात काफी अच्छे से जानता है कि शानदार छुट्टियां बिताने के लिए एक रियलिस्टिक बजट की जरूरत होती है। जिसे आप आसानी से पहले ही बना सकते हैं।

ट्रैवल और खरीदारी

घूमने जाने के दौरान बुकिंग या खरीदारी पर कैशबैक कमा सकते हैं। इससे आपकी ट्रैवलिंग आसान हो जाती है। कई बार खरीददारी करने पर या बुकिंग करने के दौरान आपको कैशबैक मिलता है। इसलिए हमेशा इस ऑप्शन को ओपेन रखना चाहिए।

ऑफ सीजन में यात्रा

इस सीक्रेट को सभी स्मार्ट ट्रैवलर्स अपनाते हैं। अधिकतर ट्रैवल करने वाले ऑफ सीजन में यात्रा कर बड़ी बचत करते हैं। इस दौरान उनका ज्यादा खर्च नहीं होता है। क्योंकि वह ऑफ-पीक हॉलिडे सीजन में ट्रैवल करते हैं। ऑफ सीजन में ट्रैवल करने से फ्लाइट्स, होटल आदि सस्ते और आसानी से मिल जाते हैं।

फ्लाइट्स चुनते समय फ्लेक्सिबल

पर्यटकों की आवाजाही सप्ताह के कुछ दिनों में कम होती है। इस समय यात्रा करने पर आपको सस्ती उड़ान भरने का मौका मिल सकता है। फ्लाइट की कीमत के आधार पर आप अपनी छुट्टियों को प्लान कर सकते हैं। इससे भी आप अच्छी खासी सेविंग कर लेंगे।

हॉस्पिटैलिटी कंपनी

आपको बता दें कि अपने नियमित ग्राहकों के लिए कई प्रमुख होटल चेंस और एयरलाइंस बहुत कम या बिना किसी एडिशनल कॉस्ट के लॉयल्टी प्रोग्राम्स पेश करती हैं। इस दौरान आपको होटल चेंस और एयरलाइंस के जरिए स्पेशल ट्रीटमेंट मिलता है।

क्रेडिट/डेबिट कार्ड

क्रेडिट या डेबिट कार्ड रिवार्ड पॉइंट अर्जित कर सकते हैं। यह पॉइंट अर्जित करने का एक क्विक और आसान तरीका है। जिसके बदले कई प्रमुख बैंक गिफ्ट्स और सर्विस के बदले में आपको रिवार्ड पॉइंट प्रदान करते हैं। जिन्हें किसी भी समय रिडीम किया जा सकता है।

सस्ता विकल्प खोजें

अगर आपके पास पर्याप्त समय है तो आप उन विकल्पों को पता करें। जिनमें यात्रा सस्ती होने के साथ ही आने-जाने से लेकर रहने तक हर चीज के लिए काफी सारे विकल्प होते हैं। इस दौरान हॉलिडे प्लान करने के दौरान शानदार अनुभवों के लिए फ्लाइट्स के स्थान पर ट्रेनों की खोज करें।

आईसीसी रैंकिंग: कोहली और जायसवाल की टेस्ट रैंकिंग में सुधार, रोहित छठे स्थान पर खिसके

दुबई (एजेंसी)। सीनियर भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली बुधवार को जारी नवीनतम आईसीसी टेस्ट रैंकिंग में दो स्थान के फायदे से आठवें स्थान पर पहुंच गए जबकि उनके कप्तान रोहित शर्मा एक स्थान के नुकसान से छठे पायदान पर हैं।

रोहित और कोहली के अलावा युवा यशस्वी जासयवाल भी बल्लेबाजों की सूची में शीर्ष 10 में शामिल हैं। वह एक स्थान के फायदे से सातवें स्थान पर हैं। इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रूट श्रीलंका के खिलाफ मैनचेस्टर में अच्छे प्रदर्शन के बाद टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर बने हुए हैं। ओल्ड ट्रैफर्ड में 56 और 32 रन की पारी खेलने वाले इंग्लैंड के हैरी ब्रूक तीन स्थान के फायदे से चौथे स्थान पर पहुंच गए हैं। उन्होंने पाकिस्तान के बाबर आजम, ऑस्ट्रेलिया के स्टीव स्मिथ और रोहित को पीछे छोड़ा।

बाबर को छह स्थान का नुकसान हुआ है और वह संयुक्त तीसरे से नौवें स्थान पर खिसक गए हैं। बांग्लादेश के खिलाफ रावलपिंडी में पहले टेस्ट में वह नाकाम रहे थे। पाकिस्तान के मोहम्मद रिजवान पहले टेस्ट में शतक की बदौलत सात स्थान के फायदे से संयुक्त रूप से 10वें स्थान पर पहुंच गए हैं जो उनके करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग है। बांग्लादेश के मुशफिकुर रहीम भी सात स्थान के फायदे से करियर की सर्वश्रेष्ठ 17वीं रैंकिंग पर हैं। भारत के अनुभवी ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर हैं। तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और बाएं हाथ के स्पिनर रविंद्र जडेजा क्रमश- तीसरे और सातवें स्थान पर बने हुए हैं। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज क्रिस वोक्स (चार स्थान के फायदे से 16वें स्थान पर) और श्रीलंका के तेज गेंदबाज असिता फर्नांडो (10 स्थान के फायदे से 17वें स्थान पर) को रैंकिंग में फायद हुआ है जबकि पाकिस्तान के तेज गेंदबाज नसीम शाह (चार स्थान के फायदे से 33वें स्थान पर) और इंग्लैंड के गस एटकिंसन (चार स्थान के फायदे से 42वें स्थान पर) ने करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग हासिल की है। ऑलराउंडरों की सूची में जडेजा और अश्विन शीर्ष दो स्थान पर हैं जबकि अक्षर पटेल छठे पायदान पर हैं।

आईसीसी के नये चेयरमैन बने जय शाह की राह आसान नहीं

–चैम्पियंस ट्रॉफी को लेकर पीसीबी की मांग से निपटना होगा

मुम्बई (एजेंसी)। जय शाह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के नए चेयरमैन बन गये हैं पर उनके लिए राह आसान नहीं रहेगी। जय शाह को एक दिसंबर से आईसीसी चेयरमैन की जिम्मेदारी संभालनी होगी। इसके बाद उनके सामने सबसे कठिन चुनौती अगले साल पाकिस्तान में होने वाली चैम्पियंस ट्रॉफी का आयोजन रहेगी। उनके आईसीसी प्रमुख रहते हुए पाक क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) चैम्पियंस ट्रॉफी के लिए भारतीय टीम को पाकिस्तान भेजने की मांग करेगी। वहीं पाक के राजनीतिक हालातों को देखते हुए भारतीय टीम के पाक जाने की कोई संभावना नहीं है।

अगर भारत सुरक्षा कारणों से अपनी टीम पाक भेजने से इंकार करता है और बाकी टीमें वहां आने को तैयार हैं, तो फिर यह मामला आईसीसी के पास जाएगा। ऐसे में पीसीबी आईसीसी से भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की शिकायत करेगा। तब शाह को तटस्थ रहते हुए इस पर अपना फैसला देना होगा जो आसान नहीं रहेगा।

जय शाह बीसीसीआई सचिव के साथ-साथ एशियन क्रिकेट काउंसिल (एसीसी) के चेयरमैन भी रहे हैं। एसीसी चेयरमैन रहते हुए उन्होंने एशिया कप 2023 की मेजबानी के लिए हाइब्रिड मॉडल का समर्थन किया था। इसके चलते पाक को अपनी मेजबानी के कुछ मैच श्रीलंका की सह मेजबानी में कराने पड़े थे। अब यह देखना होगा कि जय शाह आईसीसी चेयरमैन के तौर पर इस बार हालातों का किस प्रकार सामना करते हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन भी हाइब्रिड मॉडल में ही होने की संभावना है। इस मॉडल के तहत टूर्नामेंट का मेजबान पाकिस्तान ही रहेगा पर भारतीय टीम के मैच किसी अन्य स्थल पर होंगे।

इंपैक्ट खिलाड़ी के नियम पर बोले अश्विन, इससे खेल निष्पक्ष हुआ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के अनुभवी आफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का मानना है कि आईपीएल में इंपैक्ट खिलाड़ी के नियम ने खेल को निष्पक्ष बनाया है और इससे रणनीति का महत्व बढ़ा है। विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे सीनियर खिलाड़ियों ने इस नियम की आलोचना की है क्योंकि उनका मानना है कि इससे हरफनमौलाओं का विकास रुकेगा तथा गेंद और बल्ले के बीच संतुलन भी नहीं रहेगा। यह नियम आईपीएल 2023 से लागू किया गया जिसमें सभी टीमें अपनी पारी के दौरान एक खिलाड़ी (बल्लेबाज या गेंदबाज) को सब्स्टीट्यूट कर सकती हैं।

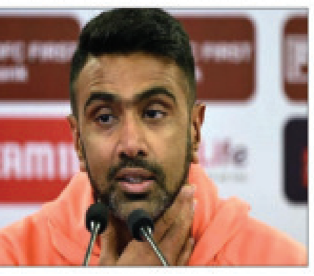

अश्विन ने भारत के पूर्व कप्तान कृष्णामाचारी श्रीकांत के तमिल यूट्यूब शो में कहा, 'मुझे लगता है कि यह नियम उतना बुरा नहीं है क्योंकि इससे रणनीति का महत्व बढ़ता है।' ईएसपीएन क्रिकइन्फो ने शो के हवाले से कहा, 'दूसरा पक्ष यह है कि इससे हरफनमौलाओं को प्रोत्साहन नहीं मिलता। लेकिन उन्हें कौन रोक रहा है। इस पीढ़ी में वे ऐसा नहीं करते हैं (बल्लेबाज गेंदबाजी करें या गेंदबाज बल्लेबाजी)।' उन्होंने कहा, 'इंपैक्ट खिलाड़ी का नियम उन्हें हतोत्साहित नहीं करता। वेंकटेश अय्यर को देखिए, वह लंकाशर के लिए इस समय शानदार प्रदर्शन कर रहा है। नए प्रयोग के लिए मौका है और इससे खेल निष्पक्ष बनता है।' अश्विन ने कहा कि ओस होने पर इस नियम से खेल में संतुलन लाया जा सकता है। उन्होंने कहा, 'जब ओस के कारण मैच एकतरफा हो जाते हैं तो बाद में गेंदबाजी करने वाली टीम के पास जवाब में अतिरिक्त विकल्प रहता है। अगर आप बाद में बल्लेबाजी कर रहे हैं तो अतिरिक्त गेंदबाज की जगह बल्लेबाज को उतारा जा सकता है। इससे शाहबाज अहमद, शिवम दुबे, ध्रुव जुरेल जैसे खिलाड़ियों को मौके मिले हैं।'

इस बार सुपर जायंट्स की कप्तानी नहीं करेंगे राहुल, क्रुणाल और पूरन बने दावेदार

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) की टीम आईपीएल के अगले सत्र में विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल को टीम में बरकरार रख सकती है पर उन्हें कप्तानी शायद ही मिले। इसका कारण ये है कि राहुल स्वयं ही कप्तानी छोड़ना चाहते हैं जिससे कि अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान दे सकें। ऐसे में टीम की कप्तानी क्रुणाल पांड्या या निकोलस पूरन में से किसी एक को मिल सकती है। इसी को लेकर हाल ही में सीईओ संजीव गोयनका ने एक बैठक भी रखी थी। इसमें किन खिलाड़ियों को बनाये रखना है और किसे नहीं जैसी बातों पर विचार हुआ था।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गोयनका को राहुल पर पूरा भरोसा है और उन्हें खिलाड़ी के तौर पर बरकरार रखा जाएगा, पर वह टीम की कप्तानी करते नजर नहीं आएंगे।गोयनका ने कहा, हम अभी भी कप्तानी के विकल्प पर विचार कर रहे हैं, लेकिन बीसीसीआई द्वारा खिलाड़ियों को बरकरार रखने की शर्तों पर सहमति जताए जाने के बाद हमारे पास दो खिलाड़ी क्रुणाल और पूरन कप्तानी की दौड़ में शामिल हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार राहुल ने गोयनका से मुलाकात की और इसके बाद ही वह दलीप ट्रॉफी के लिए अभ्यास शुरू करने के लिए बेंगलुरु स्थित राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी के लिए रवाना हुए। राहुल शुभमन गिल की कप्तानी वाली टीम ए की ओर से खेलेंगे। आईपीएल के पिछले सत्र में राहुल की गोयनका से बहस हुई थी जिसके बाद से ही ये अटकलें थीं कि वह इस बार किसी और टीम से खेल सकते हैं।

बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज में ब्रैडमैन का शतकों का रिकार्ड तोड़ सकते हैं विराट

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली के पास बांग्लादेश के खिलाफ अगले माह घरेलू धरती पर होने वाली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में महान बल्लेबाज डॉन ब्रैडमैन के अलावा जो रूट, केन विलियम्सन और स्टीव स्मिथ के शतकों का रिकार्ड तोड़ने का अवसर है। विराट ने अब तक 113 टेस्ट मैचों में 49.15 की औसत से 8848 रन बनाए हैं, जिनमें 29 शतक भी शामिल हैं। वहीं क्रिकेट इतिहास के सबसे महान बल्लेबाज माने जाने वाले डॉन ब्रैडमैन ने सबसे पहले 29 शतक का रिकार्ड बनाया था। ऐसे में इस सीरीज में एक शतक लगाते ही विराट ब्रैडमैन से आगे निकल जाएंगे। इसके अलावा अब तक केवल तीन क्रिकेटरों ने ही विराट से ज्यादा शतक लगाए हैं। ये क्रिकेटर हैं जो रूट, केन विलियम्सन और स्टीव स्मिथ। रूट, विलियम्सन और स्मिथ के नाम 32-32 टेस्ट शतक हैं। वहीं टेस्ट क्रिकेट में सबसे अधिक शतक की बात करें तो सचिन तेंदुलकर के नाम 51 टेस्ट शतक लगाए हैं। विराट इस सीरीज से आठ महीने बाद कोई टेस्ट में वापसी करेंगे। उन्होंने अंतिम बार जनवरी 2024 में टेस्ट मैच खेला था। उसके बाद से ही वह निजी कारणों से टीम से दूर रहे हैं। वहीं भारत में उन्होंने पिछला टेस्ट मैच मार्च 2023 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था। ऐसे में प्रशंसकों को भी लंबे समय बाद लंबे प्रारुप में उनकी बल्लेबाजी देखने को मिलेगी।

इंग्लैंड के क्रिकेटर डेविड मालन ने संन्यास लिया

लंदन। इंग्लैंड के आक्रामक क्रिकेटर डेविड मालन ने खेल को अलविदा कह दिया है। विश्व के पूर्व नंबर 1 बल्लेबाज मालन ने विभिन्न प्रारूपों में 100 से अधिक मैच खेले है। इस दौरान उनका प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। मालन ने जून 2017 में दक्षिण अफीका के खिलाफ अपना पहला टी20 खेला। इस बल्लेबाज ने इंग्लैंड की ओर से अपने पहले ही मैच में 44 गेंदों पर 78 रन बनाए। उन्होंने 62 टी20आई में 1892 रन बनाए। उनका सबसे अधिक स्कोर नाबाद 103 रन रहा। मालन को इंग्लैंड के लिए अपना पहला एकदिवसीय खेलने आ अवसर 2019 में मिला। इस बाएं हाथ के बल्लेबाज ने अपने करियर में 30 एकदिवसीय खेले जिसमें उन्होंने 55.76 की औसत और 97.44 की स्ट्राइक रेट से 1450 रन बनाए। उन्होंने जून 2022 और सितंबर 2023 के बीच 15 पारियों में पांच शतक बनाए। मालन सितंबर 2020 में टी20आई क्रिकेट के लिए आईसीसी की बल्लेबाजी रैंकिंग में नंबर एक पर पहुंचे। इसके बाद मार्च तब इस बल्लेबाज ने केवल 24 पारियों में इस प्रारूप में 1000 रन बना दिये। वह 2022 में इंग्लैंड की विश्व कप विजेता टीम में भी शामिल थे पर चोटिल होने के कारण बाहर हो गये थे।

लीजैंड लीग क्रिकेट का तीसरा सत्र अगले महीने से, 40 साल बाद कश्मीर में खेलेंगे दिग्गज क्रिकेटर

नई दिल्ली। शिखर धवन और दिनेश कार्तिक समेत कई दिग्गज 20 सितंबर से शुरू हो रहे लीजैंड्स लीग क्रिकेट के तीसरे सत्र में नजर आयेंगे और करीब 40 साल बाद दिग्गज क्रिकेटर श्रीनगर में खेलेंगे। लीग 20 सितंबर को जोधपुर के बरकतुल्लाह खान स्टेडियम में शुरू होगी। इसमें छह टीमें 25 मैच खेलेंगी और शीर्ष दो टीमों के बीच फाइनल 16 अक्टूबर को होगा। फेंचाइजी आधारित टूर्नामेंट में 200 खिलाड़ियों का पूल बनाया गया है। इसका फाइनल श्रीनगर के बख्शी स्टेडियम पर होगा। एलएलसी के सह संस्थापक रमन रहेजा ने कहा, 'लीजैंड्स लीग क्रिकेट का अगला सत्र शुरू होने वाला है। हमें खुशी है कि इस बार कश्मीर में भी मैच होंगे। कश्मीर के लोगों के लिए स्टेडियम में लाइव क्रिकेट देखने का यह 40 साल बाद मिला मौका होगा।' आयोजकों ने कहा कि पिछले सत्र में लीग को भारत में 18 करोड़ लोगों ने देखा। पिछली बार इसमें सुरेश रैना, आरोन फिंच, मार्टिन गुप्टिल, भारत के मौजूदा कोच गौतम गंभीर, क्रिस गेल, हाशिम अमला, रोस टेलर जैसे दिग्गजों ने भाग लिया था। लीग के लिये खिलाड़ियों की नीलामी यहां बृहस्पतिवार को होगी।

गांगुली और द्रविड़ के साथ खेल चुके पूर्व क्रिकेटर ने खोला दर्द का राज, कहा- 'मैं बदनाम हो गया'

मुंबई (एजेंसी)। 1999 की पेप्सी कप त्रिकोणीय सीरीज भारतीय क्रिकेट की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसमें भारत, पाकिस्तान और श्रीलंका ने भाग लिया था। इस सीरीज में भारत की हार की कहानी एक नई दिशा में मोड़ लेती है, खासकर ज्ञानेंद्र पांडे के करियर के संदर्भ में। इस सीरीज में भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल मैच खेला गया था, जिसमें भारत को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा था। ज्ञानेंद्र पांडे, जो कि उस समय भारत के प्लेइंग इलेवन का हिस्सा थे, ने अब इस अनुभव को लेकर खुलासा किया है और बताया है कि किस प्रकार उनका करियर एक कठिन मोड़ पर आ गया।

अपने दर्दनाक अनुभवों के बारे में किया खुलासा

ज्ञानेंद्र पांडे, जिन्होंने अपने क्रिकेट करियर की शुरुआत में शानदार प्रदर्शन किया था, ने हाल ही में एक इंटरव्यू में अपने दर्दनाक अनुभवों के बारे में खुलासा किया। पांडे ने बताया कि कैसे 1997 में घरेलू क्रिकेट में उनके शानदार प्रदर्शन के बाद उन्हें भारतीय टीम में चयनित होने की उम्मीद थी। उन्होंने दलीप ट्रॉफी फाइनल में 44 रन बनाए थे और तीन विकेट भी लिए थे। इसके अलावा, देवधर ट्रॉफी में भी उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया था। उन्होंने नॉर्थ जोन, वेस्ट जोन, और साउथ जोन के खिलाफ प्रभावशाली खेल दिखाया था और चैलेंजर ट्रॉफी में भी महत्वपूर्ण विकेट लिए थे।

इसके बावजूद, उनका अंतर्राष्ट्रीय करियर अपेक्षाकृत छोटा था। पांडे ने बताया कि 1999 में न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज में उन्हें जगह मिल सकती थी, लेकिन बीसीसीआई के सचिव जयंत लेले ने उनके चयन में बाधा डाल दी। लेले ने सुझाव दिया था कि अगर अनिल कुंबले को ब्रेक चाहिए तो सुनील जोशी को टीम में शामिल किया जाए। पांडे ने कहा, ÷जयंत लेले को मेरी परफॉर्मेंस देखनी चाहिए थी। मुझे उस समय यह सब समझ नहीं आया, और मुझे लगा कि यह मेरी गलती थी कि मैं उन ट्रिक्स को नहीं जानता था।'

क्रिकेट करियर हुआ समाप्त

ज्ञानेंद्र पांडे ने कहा कि इस घटना के बाद उनका करियर पटरी से उतर गया। उन्होंने यह भी बताया कि मीडिया ने उनकी कहानी को सही तरीके से पेश नहीं किया और कोई भी उनके पक्ष में कुछ नहीं पूछे। इस स्थिति के कारण उन्होंने खुद को बदनाम महसूस किया और उनका क्रिकेट करियर प्रभावी रूप से समाप्त हो गया। पांडे ने कहा, ÷मैं इस बात को ठीक से संभाल नहीं सका और मेरा करियर प्रभावित हो गया। मीडिया ने मेरी सच्चाई को नहीं दिखाया और मेरे बारे में सही जानकारी नहीं दी।÷

आजकल, ज्ञानेंद्र पांडे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में पीआर एजेंट के तौर पर काम कर रहे हैं। हालांकि वह क्रिकेट की दुनिया में अपनी पहचान नहीं बना पाए, लेकिन उनके क्रिकेट करियर के अनुभव और संघर्ष एक महत्वपूर्ण कहानी हैं जो क्रिकेट जगत की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करती हैं। पांडे का मामला यह दर्शाता है कि क्रिकेट के चयन और प्रदर्शन से जुड़े फैसले किस प्रकार एक खिलाड़ी के करियर को प्रभावित कर सकते हैं, और कैसे कभी-कभी एक खिलाड़ी की मेहनत और टैलेंट को सही तरीके से सराहा नहीं जाता।

पेरिस 2024 पैरालंपिक गेम्स की भी लाइव-स्ट्रीमिंग करेगा जियोसिनेमा

मुंबई। जियोसिनेमा 28 अगस्त से 8 सितंबर तक फ्रांस की राजधानी पेरिस में होने वाले पैरालंपिक गेम्स पेरिस 2024 का लाइव-स्ट्रीम करेगा। जियोसिनेमा पर इवेंट के लाइव कवरेज के अलावा स्पोर्ट्स18 टीवी नेटवर्क 12-दिवसीय इवेंट के डेली हाइलाइट्स भी दिखाएगा। बताते चलें वायाकॉम 18 के सभी प्लेटफॉर्म्स पर पेरिस ओलंपिक को 17 करोड़ से अधिक दर्शकों ने 1500 करोड़ मिनट से अधिक देखा था। वायाकॉम18 के स्पोर्ट्स हेड ऑफ मार्केटिंग दमयंत सिंह ने कहा, 'हमें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पैरा-एथलीटों की प्रेरक कहानियों को प्रस्तुत करने पर बेहद खुशी है। पैरालंपिक खेलों की प्रस्तुति के साथ ओलंपिक आंदोलन की भावना को आगे बढ़ाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। 84 पैरा-एथलीटों के साथ भारत पैरालंपिक खेलों में अब तक का अपना सबसे बड़ा दल भेज रहा है। 12 खेलों में भाग लेने वाले भारत के चार पैरा-एथलीट अपने-अपने गेम के चैंपियन हैं। इनमें सुमित अंतिल (पुरुष भाला फेंक एफ64), कृष्णा नागर (पुरुष बैडमिंटन एकल एसएच6), मनीष नरवाल (पुरुष शूटिंग 50 मीटर पिस्टल एसएच1) और अवनी लेखरा (महिला 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग स्टैंडिंग एसएच1) शामिल हैं। भारतीय दल में विश्व की नंबर 1 महिला एकल एसएच6 खिलाड़ी निथ्या श्री सुमति सिवन भी शामिल हैं। टोक्यो 2020 भारत के लिए सबसे सफल पैरालिंपिक था जिसमें भारतीय एथलीटों ने पांच स्वर्ण, आठ रजत और छह कांस्य सहित रिकॉर्ड 19 पदक जीते थे। जिसमें लेखरा पैरालिंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं। दर्शक आज रात भारतीय समयानुसार 11:30 बजे उद्घाटन समारोह और 29 अगस्त दोपहर 12 बजे से पैरालंपिक गेम्स पेरिस 2024 का सीधा प्रसारण देख सकेंगे। दर्शक जियोसिनेमा (iOS और Android) ऐप डाउनलोड करके भी अपने पसंदीदा खेल देख सकेंगे।

भारत ने एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पुरुष हॉकी टीम की घोषणा की, जानें कब होगा पाकिस्तान से मुकाबला

नई दिल्ली (एजेंसी)। हॉकी इंडिया ने 8 से 17 सितंबर तक चीन के हुलुनबुइर में होने वाली एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के लिए 18 सदस्यीय टीम की घोषणा की है। मौजूदा चैंपियन की अगुआई दिग्गज ड्रैगफ्लिकर हरमनप्रीत सिंह करेंगे और उनका साथ अनुभवी मिडफील्डर विवेक सागर प्रसाद उप-कप्तान के तौर पर देंगे। इस टूर्नामेंट में एशिया के शीर्ष हॉकी खेलने वाले देश भारत, कोरिया, मलेशिया, पाकिस्तान, जापान और मेजबान चीन खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे।

टीम में गोलकीपर के तौर पर कृष्ण बहादुर पाठक और सूरज करकेरा होंगे जबकि डिफेंस में जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह, जुगराज सिंह, संजय और सुमित खेलेंगे। राज कुमार पाल, नीलकांत शर्मा, मनप्रीत सिंह और मोहम्मद, राहील मिडफील्ड का हिस्सा होंगे, जबकि युवा फॉरवर्ड लाइन हमले का नेतृत्व करेगी जिसमें अभिषेक, सुखजीत सिंह, अरिजीत सिंह हुंदल, उत्तम सिंह और गुरजोत सिंह शामिल हैं।

टीम की संरचना को अनुभव और युवाओं को सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक चुना गया है। पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों में कांस्य पदक जीतने वाले 10 खिलाड़ी इस टीम का हिस्सा हैं। हार्दिक सिंह, मंदीप सिंह, ललित उपाध्याय, शमशेर सिंह और गुरजंत सिंह सहित 5 खिलाड़ियों को इस टूर्नामेंट के लिए आराम दिया गया है।

मुख्य कोच क्रेग फुल्टन ने कहा, 'यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अभियान है ताकि हम अपने रैंकिंग अंकों को बढ़ा सकें। पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों में हमारे प्रदर्शन के बाद सभी जश्न मनाने के बाद टीम अभी शिविर में लौटी है। पिछले कुछ सप्ताह टीम के लिए सभी प्यार और प्रशंसा के साथ वास्तव में अविश्वसनीय रहे हैं और हमें उम्मीद है कि यह समर्थन हमारे भविष्य के अभियानों के दौरान जारी रहेगा।'

उन्होंने कहा, 'हमारे लिए नया ओलंपिक चक्र एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के साथ शुरू होता है और हम चुनौती के लिए तैयार हैं। जबकि हमने पेरिस में खेलने वाली टीम के कुछ खिलाड़ियों को आराम दिया है, हमने कुछ युवाओं को शामिल किया है जिन्होंने प्रशिक्षण में अच्छा प्रदर्शन किया है और एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में खेलने का अवसर अर्जित किया है। हमारे पास गुरजोत का अंतरराष्ट्रीय पदार्पण होगा और मेरा मानना है कि यह उन युवाओं के लिए एक शानदार अवसर है जिन्हें चमकने के लिए बुलाया गया है।' एक टीम के तौर पर हम एशियाई महाद्वीप में अपना दबदबा कायम रखना चाहते हैं और खिताब बरकरार रखने के लिए हम चीन जाएंगे।'

भारतीय टीम का शेड्यूल

8 सितंबर, भारत बनाम चीन
9 सितंबर, भारत बनाम जापान
11 सितंबर, भारत बनाम मलेशिया
12 सितंबर, भारत बनाम कोरिया
14 सितंबर, भारत बनाम पाकिस्तान
सेमीफाइनल, 16 सितम्बर
फाइनल, 17 सितंबर

भारतीय पुरुष हॉकी टीम

गोलकीपर : कृष्ण बहादुर पाठक और सूरज करकेरा

डिफेंडर : जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह (कप्तान), जुगराज सिंह, संजय, सुमित

मिडफील्डर : राज कुमार पाल, नीलकांत शर्मा, विवेक सागर प्रसाद (उप-कप्तान), मनप्रीत सिंह, मोहम्मद, राहील मौसीन

फॉरवर्ड: अभिषेक, सुखजीत सिंह, अरिजीत सिंह हुंदल, उत्तम सिंह गुरजोत सिंह

अंडर-19 विश्व कप विजेता कप्तान यश ढुल की हार्ट सर्जरी हुई, दिल में था छेद

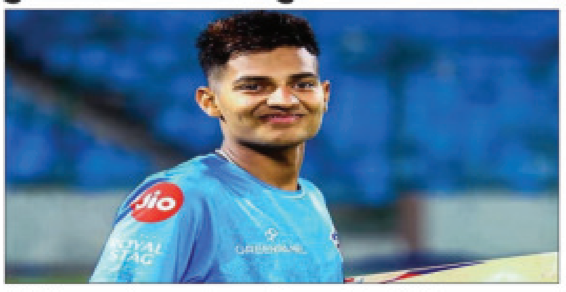

नई दिल्ली। भारत की 2022 अंडर-19 विश्व कप विजेता टीम के कप्तान यश ढुल ने हृदय की सर्जरी के बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट में वापसी की है। एक दशक से अधिक समय तक ढुल के कोच रहे राजेश नागर ने बताया कि शीर्ष क्रम के इस 21 वर्षीय बल्लेबाज को जुलाई के पहले पखवाड़े में सर्जरी करानी पड़ी थी। कोच ने खुलासा किया कि राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में अंडर-23 हाई परफोर्मेंस शिविर के दौरान नियमित स्कैन के दौरान ढुल के दिल में एक छोटा सा छेद पाया गया था। नागर ने बुधवार को कहा, 'यह कोई बड़ी सर्जरी नहीं थी। उसे ठीक होने में लगभग 10 से 15 दिन लगे। वह अपने खेल और फिटनेस के मामले में अभी शत प्रतिशत फिट नहीं है, मैं कहूंगा कि वह लगभग 80 प्रतिशत फिट है, लेकिन पर्याप्त फिट है।' दिल में छेद आमतौर पर जन्म से ही होता है लेकिन आश्चर्यजनक रूप से ढुल के मामले में इसका पता जून-जुलाई में एनसीए में रहने के दौरान चला। नागर ने कहा, 'यह एक छोटा सा छेद था और जन्म से ही था, लेकिन इसका अब पता चला। वह बहुत जल्द अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में वापस आ जाएगा।' ढुल वर्तमान में पहली दिल्ली प्रीमियर लीग में सेंट्रल दिल्ली किंग्स के लिए खेल रहे हैं। उन्होंने पांच पारियों में 113.41 के स्ट्राइक रेट से कुल 93 रन बनाए हैं जिसमें उनका उच्चतम स्कोर 52 रहा है।

भारतीय सेना ने 73 हजार सिग सॉयर 716 असॉल्ट राइफल्स का दूसरा ऑर्डर दिया

एजेंसी

नई दिल्ली : भारतीय सेना ने अमेरिकी कंपनी सिग सॉयर को 73 हजार असॉल्ट राइफल्स का दूसरा ऑर्डर दिया है। इससे पहले खरीदी गईं 72,400 राइफल्स कश्मीर और पूर्वोत्तर में नियंत्रण रेखा के साथ-साथ आतंकवाद विरोधी अभियानों में इस्तेमाल की जा रही हैं। पाकिस्तान और चीन की सीमा पर तैनात पैदल सेना की बटालियनों को भी सिग सॉयर राइफल्स दी गईं हैं। दूसरे ऑर्डर की आपूर्ति होने पर भारतीय सेना के पास 1,45,400 सिग राइफल्स होंगी। भारतीय सेना ने फरवरी, 2019 में अमेरिकी कम्पनी 'सिग सॉयर' से 600 मीटर दूरी तक मार करने की क्षमता वाली 72 हजार 400 सिग-716 असॉल्ट राइफल्स खरीदी थीं। फास्ट-ट्रैक प्रोक्योरमेंट (एफटीपी) सौदे के तहत 647 करोड़ रुपये से खरीदी गईं 7.6251 मिमी. कैलिबर असॉल्ट राइफल्स की दिसम्बर, 2019 में आपूर्ति हुई। सबसे पहले जम्मू-कश्मीर के उधमपुर स्थित उत्तरी कमान को यह राइफल्स दी गईं। भारतीय सेना की सभी पैदल सेना की बटालियनों को कम से कम 50 प्रतिशत सिग सॉयर राइफल्स मिली हैं। पाकिस्तान और चीन की सीमा पर तैनात पैदल सेना की बटालियनों को सिग सॉयर राइफल अधिक संख्या में मिली हैं जबकि अन्य बटालियनों को कम से कम 50 प्रतिशत दी गई हैं। इसके अलावा इन राइफल्स का इस्तेमाल भारतीय सेना अपने एंटी-टेरर ऑपरेशन्स में कर रही है। भारतीय सशस्त्र बलों में हथियारों की कमी को पूरा करने के लिए खरीदी गईं 72,400 राइफल्स में से सेना को 66,400, भारतीय वायु सेना को 4,000 और नौसेना को 2,000 दी गईं थीं। इन असॉल्ट राइफल्स में कश्मीर और पूर्वोत्तर में नियंत्रण रेखा के साथ-साथ आतंकवाद विरोधी अभियानों में उपयोग के दौरान कई 'गड़बड़ियां' सामने आई हैं। भारतीय सेनाओं के पास मौजूदा समय में लगभग 20 लाख हथियार उपयोग में हैं। भारतीय सेना विभिन्न प्रकार की असॉल्ट राइफल्स का उपयोग करती है। इनमें इंसास (इंडियन स्मॉल आर्म्स सिस्टम), एके-47, सिग सॉयर 716 और टावर बंदूकें हैं। छोटे हथियारों की सूची में लगभग 10 लाख इंसास राइफल्स बड़ा हिस्सा हैं। अतिरिक्त ऑर्डर की आपूर्ति होने पर 1,45,400 सिग 716 राइफल्स भारतीय सेना की सेवा में होंगी। अमेरिकी कंपनी सिग सॉयर के अध्यक्ष और सीईओ रॉन कोहेन ने एक बयान में कहा कि हमें भारतीय सेना के आधुनिकीकरण प्रयास में भागीदार होने पर गर्व है। साथ ही सिग-716 राइफल ने भारतीय सेना के साथ रक्षा मंत्रालय के आधुनिकीकरण लक्ष्यों को हासिल करने में मदद की है। रक्षा मंत्रालय से 2019 में हुए पहले अनुबंध के बाद हमने भारतीय रक्षा मंत्रालय के साथ अपनी साझेदारी को और मजबूत किया है। राइफल्स की आपूर्ति होने पर सैनिकों की भारी मांग के कारण अतिरिक्त 73 हजार राइफल्स के लिए दूसरा ऑर्डर मिला है। उन्होंने कहा कि इन राइफल्स का उद्देश्य 'शूट टू किल' होता है, इसीलिए इनका इस्तेमाल अमेरिका के अलावा दुनियाभर की करीब एक दर्जन देशों की पुलिस और सेनाएं करती हैं।

सीएम हेल्प लाईन प्रकरणों में लापरवाही बरतने पर 44 अधिकारियों पर लगा अर्थदंड

एजेंसी

सिवनी : कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी संस्कृति जैन ने बुधवार को सी.एम. हेल्पलाईन में 50 दिवस से अधिक समय से लंबित तथा लेवल आफिसर द्वारा शिकायतों को नियमित अडेंट नहीं किया जाना एवं लेबल अधिकारी द्वारा बिना निराकरण दर्ज कर अनिराकृत शिकायतें ,शिकायतें अगले लेबल पर पहुंचना जैसी लापरवाही पाए जाने पर कुल 44 लेवल ऑफिसर पर प्रति शिकायत राशि 100 रुपये के मान से 9200 रुपये का अर्थदण्ड अधिरोपित करने के आदेश जारी किए हैं। कलेक्टर कार्यालय से मिली जानकारी अनुसार अर्थदण्ड अधिरोपित में मुकेश कुमरे कनिष्ठ अभियंता पर 100 रुपये, संदीप डोडे सहायक अभियंता पर 100 रुपये, कृष्णराज सिंह परतेती जिला विपणन अधिकारी पर 300 रुपये, व्ही पी चौधरी कार्यपालन यंत्री पर 600 रुपये, चंद्रकिशोर भवरे मुख्य नगर पालिका अधिकारी पर 200, वेदप्रकाश पुरी गोस्वामी मुख्य नगर पालिका अधिकारी पर 200, जयंत सिंह देशमुख सहायक यंत्री पर 100, राकेश कुमार दुबे मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत पर 200, श्रृद्धा सोनी मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत घंसौर पर 400, ओमकार सिंह ठाकुर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत पर 100, एम के चौरसिया सहायक प्रबंधक पर 200, उपेन्द्र प्रसाद मिश्र कार्यपालन यंत्री पर 100, रेखा देशमुख मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत सिवनी पर 300, देवेश बाथम जिला परिवहन अधिकारी पर 100, डॉ. ज्योतिबाला जैन पशु चिकित्सा अधिकारी पर 100, विकेश बिसेन सहायक संचालक पर 100, उषा मैराल परियोजना अधिकारी पर 100, श्वेता जुनेजा सीडीपी ओ पर 300, राजश्री मेश्राम सी डी पी ओ पर 200, हंसा धरडे बाल विकास परियोजना अधिकारी पर 100, मीना दशरिये तहसीलदार पर 200, अमृत लाल धुर्वे तहसीलदार पर 400, बाबूलाल पनिका अनुविभागीय अधिकारी पर 100, लक्ष्मण सिंह मडलोई सहायक यंत्री पर 200, मुकेश कुमार जैन अनुविभागीय अधिकारी पर 100, पूनम तुरकर अनुविभागीय अधिकारी पर 100, शंकर लाल विश्वकर्मा प्रबंधक पर 200, डॉ. केसी मेशराम सी एम एच ओ पर 200, डॉ. भारती सोनकेशरिया विकासखंड चिकित्सा अधिकारी पर 600, डॉ. अभिषेक रायकवार विकासखंड चिकित्सा अधिकारी पर 100, डॉ. अमृत लाकरा विकासखंड चिकित्सा अधिकारी पर 800, डॉ. विनोद कुमार नावकर सिविल सर्जन पर 700, डॉ. राजेन्द्र कुमार विकासखंड चिकित्सा अधिकारी पर 100, ब्रजेश पाण्डे वन क्षेत्रपाल वन परिक्षेत्र अधिकारी पर 100, आशुतोष चंद्रवंशी परिक्षेत्र अधिकारी पर 100, उत्तम मिश्रा वन परिक्षेत्र अधिकारी पर 100, कविता पंद्रे टेक्स ऑफिसर पर 200, शैलेष जैन सहायक आबकारी आयुक्त पर 100, अर्जुन सिंह विष्ट रीजनल मेनेजर पर 200, के के सोनी महाप्रबंधक केन्द्रीय सहकारी बैंक पर 400, प्रभुदयालनाग बीआरसीसी पर 100, बीडी बरकडे विकासखंड शिक्षा अधिकारी पर 200, एस एस कुमरे डी ई ओ पर 100, महेन्द्र सिंह सैयाम सहायक संचालक विकासखंड शिक्षा अधिकारी पर 100 रुपये का अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया है। आदेशानुसार अधिरोपित अर्थदण्ड की राशि जिला रेडक्रास सोसायटी, जिला सिवनी खाते में जमा करने के आदेश अधिकारियों को दिए गए हैं।

अमेरिका में नेपाली छात्रा की गोली मारकर हत्या

काठमांडू : अमेरिका में एक नेपाली छात्रा की बीती रात गोली मार कर हत्या कर दी गई है। टेक्सास राज्य के ह्युस्टन में इस नेपाली छात्रा की उसके ही अपार्टमेंट में गोली मार कर हत्या किए जाने की जानकारी मिली है। ह्युस्टन पुलिस ने बताया कि 21 वर्षीया नेपाली छात्रा मुना पाण्डे की उसके ही अपार्टमेंट में गोली मार कर हत्या कर दी गई है। पुलिस की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि मृतक युवती के शरीर में एक साथ कई बुलेट लगने के निशान हैं। हत्या के कारण के बारे में अब तक पुलिस ने कुछ भी नहीं बताया है। मृतका मुना पाण्डे नेपाल के भोजपुर जिले की बताई गई है। नेपाली एसोसिएसन आफ ह्युस्टन के उपाध्यक्ष द्रोण गौतम के अनुसार स्नातक अध्ययन के लिए 2021 में अमेरिका गई पाण्डे ह्युस्टन कम्युनिटी कॉलेज में नर्सिंग विषय की पढ़ाई कर रही थी।

व्हाइट हाउस ने कोविड महामारी के दौरान फेसबुक पर डाला था दबाव : जुकरबर्ग

एजेंसी

वाशिंगटन : मेटा के सीईओ मार्क जकरबर्ग ने कहा कि बाइडन प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने महामारी के दौरान फेसबुक पर कोविड-19 से जुड़ी कुछ सामग्री को सेंसर करने के लिए दबाव डाला था। उन्होंने कहा कि यदि सोशल मीडिया कंपनी को फिर से ऐसी मांगों का सामना करना पड़ा तो वह इसका विरोध करेगी। सदन की न्यायापालिका से जुड़ी समिति के रिपब्लिकन अध्यक्ष, प्रतिनिधि जिम जॉर्डन को लिखे एक पत्र में जकरबर्ग ने आरोप लगाया कि व्हाइट हाउस के अफसरों समेत अधिकारियों ने फेसबुक पर कई महीनों तक हास्य और व्यंग्य सहित कुछ कोविड-19 सामग्री को हटाने के लिए बार-बार दबाव डाला। उन्होंने पत्र में कहा कि जब कंपनी सहमत नहीं हुई तो अधिकारियों ने काफी निराशा व्यक्त की। जुकरबर्ग ने 26 अगस्त को लिखे पत्र में कहा, मेरा मानना है कि सरकार का दबाव गलत था और मुझे खेद है कि हम इस बारे में अधिक मुखर नहीं थे। यह पत्र समिति के फेसबुक पेज और 'एक्स' पर उसके अकाउंट पर पोस्ट किया गया।

बांग्लादेश के मुख्य चुनाव आयुक्त सहित चारों आयुक्त किसी भी वक्त दे सकते हैं इस्तीफा

एजेंसी

ढाका : शेख हसीना सरकार के पतन के बाद बांग्लादेश का चुनाव आयोग संकट में है। मुख्य चुनाव आयुक्त और चारों चुनाव आयुक्त किसी भी समय इस्तीफा देने को तैयार हैं। उन्हें डॉ. मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार की हरी झंडी का इंतजार है। ढाका ट्रिब्यून अखबार के अनुसार, आयोग के इन आला अधिकारियों ने सरकार के शीर्ष अधिकारियों से मिलने की कोशिश की। इस संबंध में कोई प्रतिक्रिया नहीं मिलने पर मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) काजी हबीबुल अवल ने एक राष्ट्रीय दैनिक में कॉलम लिखकर सरकार तक अपनी स्थिति पहुंचाने की कोशिश की है। पांच अगस्त को शेख हसीना के इस्तीफे के बाद सीईसी अवल, कमिश्नर ब्रिगेडियर जनरल (सेवानिवृत्त) अहसान हबीब, एमडी आलमगीर, बेगम रशीदा सुल्ताना कार्यालय में मौजूद थे। आयुक्त अनीसुर रहमान उस दिन आफिस नहीं आए। आयोग के इन आला अफसरों ने 12 अगस्त को एक आपातकालीन बैठक कर इस्तीफे के मुद्दे पर चर्चा की। इस बैठक में अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार से संपर्क करने पर भी निर्णय हुआ। सीईसी खुद डॉ. यूनुस से मिलना चाहते थे। उल्लेखनीय है कि छह अगस्त को अग्रगांव में चुनाव आयोग के भवन के मुख्य द्वार पर एक बैनर लटका दिया गया था। इस पर इस्तीफा देने की मांग की गई थी। ताजा हाल यह है कि आयुक्तों में अहसान हबीब नियमित रूप से काम कर रहे हैं। अन्य कभी-कभार ही कार्यालय आते हैं। अंतरिम सरकार के गठन के तुरंत बाद मुख्य न्यायाधीश और अटॉर्नी जनरल सहित अपीलीय प्रभाग के पांच न्यायाधीशों ने इस्तीफा दे दिया। संवैधानिक संस्थाओं में चुनाव आयोग, लोक सेवा आयोग (पीएससी), नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) ने अभी तक इस्तीफा नहीं दिया है।

पाकिस्तान में कर सुधारों का विरोध, देशभर के व्यापारी संघ हड़ताल पर, प्रमुख शहरों में नहीं खुलीं दुकानें

एजेंसी

इस्लामाबाद : पाकिस्तान में महंगाई से जूझ रही अवाम के साथ अब नए कर सुधारों से व्यापारियों की कमर टूटने लगी है। करों की मार से कराह रहे व्यापारी संघों की आज की देशव्यापी हड़ताल का बड़ा असर दिख रहा है। देश के सभी प्रमुख व्यापारिक शहरों राजधानी इस्लामाबाद, कराची और लाहौर के साथ अन्य शहरों में दुकानें नहीं खुली हैं। सड़कें लगभग वीरान हैं। देशव्यापी हड़ताल पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के समन्वयक राणा एहसान अफजल खान ने कहा कि सरकार व्यापारियों के दबाव में नहीं आएगी। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने फेडरल बोर्ड ऑफ रेवेन्यू को पुनर्गठित किया है और इस बात पर जोर दिया है कि खुदरा क्षेत्र को भी कर के दायरे में आना चाहिए। व्यापारी संघों की देशव्यापी हड़ताल को जमीयत उलेमा-ए-इस्लाम फजल (जेयूआई-एफ), पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई), जमात-ए-इस्लामी (जेआई) और अवामी नेशनल पार्टी (एएनपी) जैसे राजनीतिक दलों ने समर्थन दिया है। अंजुमन-ए-ताजिरान कराची ने बुधवार को कारोबार पूरी तरह बंद करने की घोषणा की थी। ऑल पाकिस्तान अंजुमन-ए-ताजिरान के सिंध चैप्टर के अध्यक्ष जावेद शम्स ने कहा है कि राष्ट्रव्यापी हड़ताल को उनका पूरा समर्थन है। सत्तारूढ़ राजनीतिक नेतृत्व विफल हो गया है। शम्स ने करों और बिजली बिलों में बढ़ोतरी की तीखी आलोचना की है। उन्होंने कहा कि देश में राज करने वाले व्यापारी वर्ग और लोगों से जीने का अधिकार छीनना चाहते हैं। कराची इलेक्ट्रॉनिक्स डीलर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष मोहम्मद रिजवान ने कहा है कि कराची से खैबर तक सभी ट्रेड यूनियन हड़ताल में शामिल हैं। अगर मांग सरकार नहीं मानती तो हड़ताल की अवधि बढ़ सकती है।

एक नजर

अरुणाचल में चीन सीमा पर सड़क दुर्घटना, सेना के तीन जवान बलिदान

गुवाहाटी : अरुणाचल प्रदेश में चीन सीमा पर तापी में भारतीय सेना का एक वाहन मंगलवार को ऊपरी सुबनसिरी जिले में एक नहर में गिर गया। सेना की पूर्वी कमान के जवानों को यह जवान अग्रिम मोर्चे पर ले जा रहा था। इस हादसे में सेना के तीन जवानों की मौके पर मौत हो गई, जबकि चार सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गए। पूर्वी सेना कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल आरसी तिवारी ने बुधवार को इस दुर्घटना में हवलदार नखत सिंह, एनके मुकेश कुमार और जीडीआर आशीष की मौत होने की पुष्टि करते हुए गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अरुणाचल प्रदेश में कर्तव्य की राह पर सर्वोच्च बलिदान देने वाले तीनों बलिदानियों के प्रति सेना के सभी रैंकों ने गहरी संवेदना व्यक्त की है। भारतीय सेना शोक संतप्त परिवारों के साथ मजबूती से खड़ी है। अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सुबनसिरी जिले में हुई यह घटना मंगलवार को उस समय हुई जब सेना के जवानों को ले जा रहा एक वाहन पहाड़ी सड़क से नहर में गिर गया। सभी सैन्यकर्मी भारतीय सेना की पूर्वी कमान का हिस्सा थे। ईटानगर के एक शीर्ष पुलिस अधिकारी ने बताया कि सेना के चार घायल जवानों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां चारों सैनिकों का इलाज चल रहा है।

ढाका में महिला टीवी पत्रकार का शव झील से मिला

ढाका : बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हातिर झील से मंगलवार सुबह 32 वर्षीय महिला टीवी पत्रकार सारा रहनुमा का शव बरामद किया गया। वह बांग्ला भाषा के सैटेलाइट और केबल टीवी चैनल गाजी टीवी की न्यूजरूम एडिटर थीं। पुलिस के अनुसार आज सुबह सागर नामक व्यक्ति ने झील में एक महिला को देखा। उसे मेडिकल कॉलेज अस्पताल (डीएमसीएच) लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। अपनी मौत से पहले सारा ने मंगलवार रात अपने फेसबुक पर फहीम फैसल नाम के शख्स को टैग करते हुए एक स्टेटस पोस्ट किया था- ₹आप जैसा दोस्त पाकर अच्छा लगा। भगवान आपको हमेशा आशीर्वाद दें। आशा है, आप जल्द ही अपने सभी सपने पूरे करेंगे। मुझे पता है कि हमने एक साथ बहुत सारी योजनाएं बनाई थीं। क्षमा करें, हम अपनी योजनाओं को पूरा नहीं कर सके।" एक और पोस्ट में सारा ने लिखा था, 'मृत्यु के समान जीवन जीने से बेहतर है मर जाना।

महबूबा मुफ्ती जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगी

श्रीनगर : पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने बुधवार को कहा कि वह जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव नहीं लड़ेंगी। उन्होंने कहा कि अगर वह मुख्यमंत्री बन भी जाती हैं तो भी वह केंद्र शासित प्रदेश में अपनी पार्टी के एजेंडे को पूरा नहीं कर पाएंगी। महबूबा ने कहा कि 2016 में मैंने भाजपा के साथ राज्य में सरकार बनाई थी। मेरे मुख्यमंत्रित्व काल में 12 हजार लोगों के खिलाफ एफआईआर वापस ली गई थी। क्या हम अब ऐसा कर सकते हैं? उन्होंने कहा कि मैंने मुख्यमंत्री के रूप में प्रधानमंत्री मोदी को अलगाववादियों से बातचीत करने को आमंत्रित करने के लिए एक पत्र लिखा था। क्या आप आज ऐसा कर सकते हैं? मैंने जमीन पर संघर्ष विराम लागू करवाया। क्या आप आज ऐसा कर सकते हैं? यदि आप मुख्यमंत्री के रूप में एक एफआईआर वापस नहीं ले सकते हैं, तो कोई ऐसे पद का क्या करना ?

संक्षिप्त खबरें

वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में चिली की भागीदारी को महत्व देता है भारत : डॉ. जयशंकर

नई दिल्ली : विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने बुधवार को कहा कि भारत वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में चिली की भागीदारी को अत्यधिक महत्व देता है। नई दिल्ली में आयोजित द्वितीय भारत-चिली संयुक्त आयोग की बैठक में विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने अपने चिली समकक्ष अल्बर्टो वान क्लावेरेन का स्वागत किया। जयशंकर ने कहा कि भारत-चिली संयुक्त आयोग की पहली बैठक कोविड के समय में वर्चुअली हुई थी। ऐसे में इस साल व्यक्तिगत रूप से मिलने का अवसर खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि हम वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट में चिली की भागीदारी को बहुत महत्व देते हैं। 17 अगस्त को आयोजित तीसरे वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन में चिली के राष्ट्रपति गेब्रियल बोरिक के व्यावहारिक वक्तव्य की प्रशंसा करते हुए जयशंकर ने कहा कि हमने आपके राष्ट्रपति को सुना। उन्होंने अगस्त में शिखर सम्मेलन में बहुत ही व्यावहारिक टिप्पणियां कीं और हम विस्तारित सुरक्षा परिषद में हमारी स्थायी सदस्यता के लिए आपके समर्थन के लिए भी आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। जयशंकर ने कहा कि नवंबर 2023 में व्यापार और आर्थिक मंत्रियों की बैठक में चिली की भागीदारी भी ऐसी चीज है जिसकी हम बहुत सराहना करते हैं। विदेश मंत्री ने कहा आज हमारे पास चर्चा करने के लिए बहुत कुछ है।

पंजाब सरकार ने किया एंटी नारकोटिक्स फोर्स का गठन, नशा तस्करों पर करेगी कार्रवाई

चंडीगढ़ : पंजाब सरकार ने नशा तस्करी रोकने और तस्करों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के उद्देश्य से एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स का गठन किया है। यह पहले से ही काम रही स्पेशल टास्क फोर्स में बदलाव करके बनाई गई है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बुधवार को मोहाली में एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स के कार्यालय का उदघाटन किया। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने कहा कि नशा तस्करों के बारे में सूचना देने या कोई जानकारी देने के लिए चैट बोट नंबर जारी किया गया है। इसके लिए लोगों को 97791-00200 पर कॉल करनी होगी। सूचना देने वाले का नाम गुप्त रखा जाएगा। मैसेज का जवाब भी मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि पुलिस की तरफ से मोहाली में टास्क फोर्स इंटेलिजेंस एवं टेक्निकल यूनिट स्थापित की गई है। यहां माहिरों की स्पेशल टीम तैनात है, जो कि वॉट्सऐप से लेकर तमाम तकनीकों का प्रयोग करने वालों पर नजर रखी जा सकेगी। इसके अलावा जो भी जानकारी टीमों को मिलेगी, उसे तुरंत अन्य टीमों के साथ शेयर किया जाएगा। इसके पीछे कोशिश यही है कि पंजाब को नशा मुक्त किया जाए। मुख्यमंत्री मान ने कहा कि पहले काम कर रही एसटीएफ में चार सौ कर्मचारी काम कर रहे थे, जोकि विभिन्न जिलों से लिए गए थे। अब इस फोर्स के लिए बिल्कुल समर्पित मुलाजिम तैनात किए जाएंगे। इस फोर्स में 800 पुलिस मुजालिम तैनात किए जाएंगे। इस पर 12 करोड़ रुपये इस पर खर्च किया है। फोर्स को 14 महिंद्रा स्कॉर्पियो खरीदकर दी गई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि यहां स्पेशल कंट्रोल रूम स्थापित करने के लिए 90 लाख की लागत आई है। अब अपराधी काफी हाईटेक हो गए हैं। ऐसे में इस दिशा में फैसला लिया गया है।

होजाई में पुलिसकर्मियों का बीएमआई टेस्ट जारी

गुवाहाटी ; पूरे राज्य के साथ ही होजाई जिले के पुलिसकर्मियों का शारीरिक क्षमता और बीएमआई परीक्षण किया जा रहा है। होजाई पुलिस अधीक्षक कार्यालय के परिसर में बीएमआई टेस्ट कराने के लिए पुलिसकर्मी पहुंच रहे हैं। इस कदम का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि असम पुलिस में कोई मोटा पुलिस अधिकारी और जवान न हो। हर कोई स्वस्थ और फिट रहकर अपनी सेवा कर सके। यह निर्णय विशेष रूप से असम पुलिस के जवानों को स्वस्थ रखने के लिये लिया गया था। बीएमआई टेस्ट असम पुलिस के सभी कर्मचारियों और अधिकारियों को ध्यान में रखकर उनके शारीरिक क्षमता को ठीक करने के उद्देश्य से किया जाता है। होजाई में 26 से 29 अगस्त तक सभी पुलिस अधिकारियों की बीएमआई मूल्यांकन परीक्षा सुचारू रूप से चल रही है। उल्लेखनीय है कि असम के पुलिस महानिदेशक जीपी सिंह ने यह आदेश बीते वर्ष तब जारी किया था, जब असम के मुख्यमंत्री डॉ। हिमंत बिस्व सरमा ने मोटे और शराबी पुलिसकर्मियों को लेकर चेतावनी दी थी।

दुष्कर्म के खिलाफ सख्त कानून बनाए केंद्र, नहीं तो लोकसभा में पेश करेंगे प्राइवेट मेंबर बिल : अभिषेक

कोलकाता : तृणमूल कांग्रेस के महासचिव एवं डायमंड हार्बर के सांसद अभिषेक बनर्जी ने बुधवार को पार्टी के एक कार्यक्रम में कहा कि यदि केंद्र सरकार ने दुष्कर्म के खिलाफ सख्त कानून नहीं बनाया तो वे इसको लेकर लोकसभा में प्राइवेट मेंबर बिल पेश करेंगे। उन्होंने केंद्र सरकार को चेतावनी भी दी कि आगामी तीन-चार महीनें में दुष्कर्म विरोधी सख्त कानून नहीं लाया गया तो तृणमूल नई दिल्ली में बड़ा आंदोलन करेगी। अभिषेक बनर्जी ने तृणमूल छात्र परिषद के स्थापना दिवस के मौके पर अपने संबोधन में महिला सुरक्षा और आरक्षण को लेकर केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि दुष्कर्म के खिलाफ देश में ऐसा कानून आना चाहिए जिससे एक से दो महीने में न्याय प्रक्रिया पूरी हो और दोषियों को सजा दी जाए। यदि केंद्र सरकार इस कानून को नहीं लाती है तो वे एक प्राइवेट मेंबर बिल के जरिए इसे संसद में पेश करेंगे और कानून बनाकर दिखाएंगे। उन्होंने कहा कि छात्र संघ चुनावों में 55 फीसदी सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार महिला आरक्षण विधेयक लायी थी लेकिन वह सिर्फ दिखावा था। हमारी पार्टी के 29 सांसदों में से 12 महिला सांसद हैं। हमने पंचायत स्तर पर 50 फीसदी आरक्षण देकर दिखाया है। अब छात्रसंघ चुनावों में 55 फीसदी सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की जाएंगी। अभिषेक ने सीबीआई की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए और कहा कि सारदा मामले की जांच को 10 साल हो चुके हैं लेकिन अब तक अंतिम चार्जशीट दाखिल नहीं हुई, ट्रायल तो दूर की बात है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सीबीआई और ईडी का इस्तेमाल तृणमूल को कमजोर करने के लिए कर रही है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के खिलाफ अत्याचार और अन्याय की घटनाएं सबसे ज्यादा भाजपा शासित राज्यों में होती हैं। एनसीआरबी के अनुसार उत्तर प्रदेश पहले, मध्य प्रदेश दूसरे, राजस्थान तीसरे और महाराष्ट्र चौथे स्थान पर है। ऐसे में उन्हें योगी आदित्यनाथ जैसे नेताओं से इस्तीफा मांगना चाहिए। तृणमूल कांग्रेस के महासचिव अभिषेक ने आरजी कर अस्पताल की घटना को लेकर भी भाजपा पर निशाना साधा और कहा कि जो लोग हठयोग कर महिलाओं की अस्मिता का सौदा करते हैं उन्हें बंगाल की राजनीति सिखाने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि हम लोहा हैं, जितना मारोगे, उतना मजबूत होंगे। जो लोग इस घटना को लेकर राजनीति कर रहे हैं, वे बंगाल के लोगों के सामने बेनकाब हो चुके हैं।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह * (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह. 9334331934, 9386895799, 9507466535, RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902